CMYK

अधिकतम : 20°C
न्यूनतम : 08°C

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

देहरादून, गुरुवार 12 फरवरी 2026 देहरादून संस्करण: वर्ष 25 अंक 186 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com फाल्गुन कृष्ण पक्ष 9 विक्रमी सम्वत् 2082 23 शाबान 1447 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

योगी सरकार ने खोला वादों का पिटारा

उप्र बजट 2026

वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने सदन में 9.12 लाख करोड़ का बजट किया पेश

शाह टाइम्स ब्यूरो

निवेश, रोजगार, बुनियादी विकास व कल्याणकारी योजनाओं पर फोकस, 10 लाख नौकरी संभावित

लड़कियों की शादी के लिए मिलेंगे अब एक लाख रुपये, युवाओं को साधने की कोशिश, महिलाओं के लिए अलग प्रशिक्षण केंद्र बनेंगे

कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्रों की क्षमता बढ़ाएगी उप्र सरकार, युवाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने दसवां बजट पेश किया। वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने विधानसभा में वित्तीय वर्ष 2026-27 का बजट प्रस्तुत किया। विधानसभा चुनाव से पहले यह दूसरे कार्यकाल का आखिरी पूर्ण बजट है।

वित्त मंत्री ने सदन में 9.12 लाख करोड़ का बजट पेश किया। इसमें निवेश, रोजगार, बुनियादी विकास और कल्याणकारी योजनाओं पर फोकस किया गया है। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि यूपी में 10 लाख युवाओं को रोजगार संभावित हैं। लड़कियों की शादी के लिए सरकार एक लाख रुपये देगी। यूपी का इस बार का बजट का आकार नौ लाख 12 हजार 696 करोड़ रुपये का है। पिछले बजट की तुलना में 12 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है। पीपीपी मोड में कौशल संवर्धन और जॉब प्लेसमेंट केंद्र विभिन्न जनपदों में स्थापित किए जाएंगे। इस व्यवस्था से कार्यबल में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने के लिए महिलाओं के लिए अलग केंद्रों की स्थापना की जाएगी। पढ़ाई के साथ-साथ युवाओं के कौशल संवर्धन की व्यवस्था की जानी होगी। हमारे कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्रों की क्षमता बढ़ाई जाएगी। नए केंद्र स्थापित किए जाएंगे। इस अभियान में निजी क्षेत्र की सहभागिता भी सुनिश्चित की जानी होगी। ऐसे व्यक्ति जिनके पास किसी भी व्यवसाय में हस्तकौशल या निपुणता प्राप्त है, कभी भी बेरोजगार नहीं रह सकते। इसलिए युवाओं के लिए बड़े पैमाने पर रोजगारपरक प्रशिक्षण और कौशल संवर्धन को प्राथमिकता के आधार पर मिशन मोड में संचालित किया जाना आवश्यक है। एक तरफ जहां अर्थव्यवस्था में पूंजी निवेश और अवस्थापना विकास का महत्वपूर्ण योगदान है। वहीं प्रदेश की युवा जनशक्ति को रोजगार के अवसर प्रदान करने, उन्हें रोजगार के लिए सक्षम बनाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रदेश में डिजिटल -शेष पृष्ठ दो पर

नौ वर्ष के नवनिर्माण की गाथा को दर्शाता है बजटः योगी

लखनऊ। सीएम योगी ने कहा कि 2017 से पहले प्रदेश में सुरक्षा का वातावरण नहीं था। पर्यटन की कोई ठीक व्यवस्था नहीं थी। आज करोड़ों लोग आकर यूपी में धार्मिक स्थलों पर दर्शन करते हैं। 50 हजार नए होम स्टे की दिशा में काम करेंगे।

चिकित्सा के क्षेत्र में यूपी ने काफी ग्रोथ की है। पीएम आयुष्मान योजना से पांच करोड़ से ज्यादा गोल्डन कार्ड यूपी के लोगों को दिए गए। दिव्यांग छात्राओं को लिए ई-ट्राईसाइकिल की व्यवस्था की गई है। आज यूपी देश के ग्रोथ इंजन के रूप में आगे बढ़ रहा है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए ईक्यूब के रूप में महिला सुरक्षा बल 13 फीसदी से बढ़कर 36 फीसदी हुआ है। महिलाओं के लिए क्रेडिट कार्ड योजना चलाई जाएगी। ताकि उन्हें वह छोटे-छोटे काम के लिए किसी से ऋण न लेना पड़े और उन्हें ब्याजमुक्त ऋण मिल सके। इसके लिए बजट की व्यवस्था की गई है। युवाओं को ध्यान में रखते हुए सभी 18 कमिश्नरी में स्पोर्ट कॉलेज बनाए जाएंगे। इसके लिए बजट में धनराशि की व्यवस्था है।

कहाः रूल ऑफ लॉ रियल ग्रोथ की गारंटी

पहली बार किसी सीएम को 10वां बजट पेश करने का मौका मिला, हर वर्ग का ध्यान रखाः सीएम

लखनऊ। सीएम योगी ने कहा कि 9 साल में उत्तर प्रदेश पर राय बदली है। बजट में हर वर्ग का ध्यान रखा गया। 9 साल में एक भी टैक्स नहीं लगा। नौ वर्ष में तीन गुना से अधिक उत्तर प्रदेश का बजट बढ़ा है। बजट की थीम सुरक्षित नारी, सक्षम युवा और खुशहाल किसान। दो लाख करोड़ की धनराशि कैपिटल एक्सपेंडिचर के लिए है। सीएम योगी ने कहा कि यह पहली बार हुआ है कि कोई एक सरकार का 10वीं बार बजट प्रस्तुत हो रहा है। नौ वर्ष में कोई भी टैक्स नहीं लगाया गया है। सिटी इकनोमिक जोन यह क्लस्टर डेवलेप करने की नई कार्यवाही के लिए बजट में प्रावधान किया गए हैं। रूल ऑफ लॉ रियल ग्रोथ की गारंटी है।

हर जिले में होगा मॉडल स्कूल

लखनऊ। बजट में बेसिक शिक्षा के लिए 77,622 करोड़ रुपये की अभूतपूर्व व्यवस्था प्रस्तुत की गई है। यह राशि परिषदीय विद्यालयों के आधारभूत ढांचे को मजबूत करने, शैक्षणिक गुणवत्ता सुधारने और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित रहेगी। शिक्षा विभाग के अधिकारियों का मानना है कि इन प्रावधानों से प्रदेश की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को नई गति मिलेगी। सबसे अहम प्रावधान कक्षा 1 से 8 तक परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत सभी छात्र-छात्राओं के लिए है। निःशुल्क यूनिफॉर्म, स्कूल बैग, जूता-मोजा और स्टेशनरी उपलब्ध कराने की योजना के लिए 650 करोड़ रुपये प्रस्तुत किए गए हैं। उद्देश्य है कि संसाधनों के अभाव में कोई भी बच्चा पढ़ाई से वंचित न रहे। इसके साथ ही सरकार प्रत्येक जिले में दो-दो मुख्यमंत्री मॉडल कम्पोजिट विद्यालय स्थापित करने की योजना पर कार्य कर रही है। प्रदेश के 75 जिलों में कुल 150 ऐसे विद्यालय प्रस्तावित हैं, जिन्हें आधुनिक सुविधाओं, डिजिटल कक्षाओं और उन्नत शैक्षणिक संसाधनों से लैस किया जाएगा। प्रत्येक जनपद में एक मुख्यमंत्री अभ्युदय विद्यालय विकसित करने की भी योजना है, ताकि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों को समान गुणवत्ता की शिक्षा मिल सके।

बजट सत्र के दूसरे चरण में होगी अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा

नई दिल्ली। विपक्ष ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस पेश किया, जिसके बाद अब स्पीकर के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नोटिस में खामियां सामने आई है, जिसके संशोधन के निर्देश दिए गए हैं। अविश्वास प्रस्ताव को लेकर 118 सांसदों ने हस्ताक्षर किए हैं। लोकसभा सूत्रों के अनुसार अध्यक्ष ओम बिरला ने सचिवालय को विपक्ष द्वारा प्रस्तुत दोषपूर्ण नोटिस को खारिज होने से बचाने के लिए उसमें संशोधन करने का निर्देश दिया।

भारत-यूएस ट्रेड डील में भारत को मिली और राहत

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमेरिका ने फैक्ट शीट में कई बड़े बदलाव किए

दाल व 500 अरब डॉलर की खरीद भी जरूरी नहीं

वाशिंगटन/ नई दिल्ली। अमेरिका ने भारत के साथ हुई हालिया ट्रेड डील पर जारी अपनी फैक्ट शीट में कई बड़े बदलाव किए हैं। पहले जिन बातों का साफ जिक्र था, अब उन्हें या तो हटा दिया गया है या उनकी भाषा बदली गई है।

पिछले हफ्ते दोनों देशों ने ट्रेड डील का ऐलान किया था। इसके बाद व्हाइट हाउस ने एक फैक्ट शीट जारी कर आगे की रूपरेखा बताई थी, लेकिन अब उसी दस्तावेज का नया वर्जन जारी हुआ है। सबसे बड़ा बदलाव दाल को लेकर है। पहले कहा गया था कि भारत अमेरिकी औद्योगिक और कृषि उत्पादों पर टैरिफ कम या खत्म करेगा, जिसमें दाल भी शामिल थी। अब नए दस्तावेज से दाल का जिक्र हटा लिया गया है। 500 अरब डॉलर की खरीद को लेकर भी भाषा बदली गई है। पहले लिखा था कि भारत, अमेरिका से 500 अरब डॉलर का सामान खरीदने के लिए कमिटेड है। अब इसे बदलकर इरादा रखता है कर दिया गया है। नए दस्तावेज में सिर्फ एनर्जी, सूचना और संचार तकनीक, कोयला और कुछ अन्य सामान की बात कही गई है। डिजिटल सर्विस टैरिफ पर भी अमेरिका ने नरमी दिखाई है। पहले कहा गया था कि भारत यह टैरिफ हटाएगा।

देहरादून में शूटआउट, स्कूटी सवार बदमाशों ने कारोबारी को भूना

शाह टाइम्स ब्यूरो

दिनदहाड़े देहरादून शहर के बीचो-बीच हुई हत्या के बाद पुलिस के सुरक्षा दावों की खुली पोल

देहरादून। देवभूमि की शांत वादियों में एक बार फिर गोलियों की तड़तड़ाहट ने राजधानी को दहला दिया है।

डालनवाला जैसे पॉश इलाके में स्थित तिब्बती मार्केट के पास दिनदहाड़े बुधवार सुबह स्कूटी सवार दो अज्ञात बदमाशों ने गैस एजेंसी स्वामी अर्जुन शर्मा की गोली मारकर हत्या कर दी। शहर के बीचों-बीच हुई इस वारदात ने न केवल कानून व्यवस्था को चुनौती दी है, बल्कि पुलिस के सघन चेकिंग के दावों की भी हवा निकाल दी है। इंदिरा नगर निवासी अर्जुन शर्मा अमरदीप गैस एजेंसी, जीएमएस रोड का मालिक है और अपने कारोबार के चलते बुधवार को सवेरे वह जब तिब्बती मार्केट के समीप थे, तभी घात लगाए बैठे दो स्कूटी सवार -शेष पृष्ठ दो पर

जन गण मन से पहले गाया जाएगा वंदे मातरम

नए दिशानिर्देश जारी, सभी छह पैरा गाना जरूरी, स्कूलों में राष्ट्रगीत के बाद शुरू होगी पढ़ाई, सिनेमाघरों को छूट

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' को लेकर नए दिशानिर्देश जारी किए हैं। गृह मंत्रालय ने आदेश में कहा है कि अब सरकारी कार्यक्रमों, स्कूलों या अन्य औपचारिक आयोजनों में 'वंदे मातरम' बजाया जाएगा।

इस दौरान हर व्यक्ति का खड़ा होना अनिवार्य होगा। यह आदेश 28 जनवरी को जारी हुआ, लेकिन मीडिया में इसकी जानकारी 11 फरवरी को आई। आदेश में साफ लिखा है कि अगर राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' और राष्ट्रगान 'जन गण मन' साथ में गाए या बजाए जाएं, तो पहले वंदे मातरम गाया जाएगा। इस दौरान गाने या सुनने वालों को सावधान मुद्रा में खड़ा रहना होगा। आदेश के मुताबिक सभी स्कूलों में दिन की शुरुआत राष्ट्रगीत बजाने के बाद ही होगी। नए नियमों के अनुसार, राष्ट्रगीत के सभी 6 अंतरे गाए जाएंगे, जिनकी कुल अवधि 3 मिनट 10 सेकेंड है।

हम किससे तेल खरीदेंगे, यह फैसला अमेरिका करता हैः राहुल

शाह टाइम्स ब्यूरो

कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता ने भाषण की शुरुआत में मार्शल आर्ट्स का किया जिक्र

नई दिल्ली। संसद में लंबे गतिरोध के बाद बुधवार को लोकसभा में राहुल गांधी ने बजट 2026 पर चर्चा में भाग लिया। इस दौरान कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता ने भाषण की शुरुआत में मार्शल आर्ट्स का जिक्र किया।

उन्होंने कहा कि जिजित्सु में ग्रिप दिखती है, राजनीति में नहीं दिखती। चोक कहां हो रहा है, जोर कहां पड़ रहा है, राजनीति में नहीं दिखता। इसके बाद उन्होंने बजट, अमेरिका संग हालिया ट्रेड डील से लेकर वैश्विक मुद्दों पर अपनी बात रखी। उन्होंने आम बजट और वित्त मंत्रालय की तरफ से पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण का जिक्र करते हुए कहा कि मैं आर्थिक सर्वे को देख रहा था। दो बिंदु मुझे दिखे। पहला बिंदु- हम ऐसी दुनिया में रह रहे हैं, जहां भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता बढ़ती जा रही है। यानी जो अमेरिका आधारित सिस्टम था, उसे चुनौती मिल रही है। उसे अब रूस और चीन फिर से चुनौती दे रहे हैं। दूसरा- हम ऐसी दुनिया में रह रहे हैं, जहां ऊर्जा और वित्त को हथियार बना लिया गया है। राहुल गांधी ने कहा कि हम स्थिरता वाली दुनिया से अस्थिरता वाली दुनिया में जा रहे हैं। प्रधानमंत्री और एनएसए ने कुछ समय पहले चौंकाने वाले रूप से कहा था कि युद्ध का समय अब खत्म हो चुका था। लेकिन यूक्रेन में संघर्ष जारी है, ईरान में संघर्ष हो रहा है। यानी हम स्थिरता से अस्थिरता की तरफ जा रहे हैं। राहुल ने कई और वैश्विक मुद्दों का जिक्र करते हुए कहा कि देश की 140 करोड़ जनता के सामने आज चुनौतियां काफी अलग हैं। राहुल गांधी ने कहा कि हमने ऑपरेशन सिंदूर किया था। तो हम अस्थिरता की दुनिया में जा रहे हैं।

CMYK

संक्षिप्त समाचार

एसडीओ को एंटी करप्शन टीम ने रिश्वत लेते रंगे हाथ किया गिरफ्तार

प्रयागराज। उप्र के प्रयागराज में आज एंटी करप्शन प्रयागराज की टीम ने बिजली विभाग के एसडीओ को रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ पकड़ा एंटी करप्शन ने दस हजार रुपये रिश्वत लेते हुए एसडीओ संजीव कुमार श्रीवास्तव को गिरफ्तार किया है। खुल्दाबाद के रहने वाले शिकायतकर्ता जितेन्द्र कुमार ने नौ फरवरी को एंटी करप्शन से की शिकायत थी। शिकायत में कहा गया था कि अराजपत्रित लोकसेवक विद्युत उपखण्ड अधिकारी संजीव कुमार श्रीवास्तव द्वारा शिकायतकर्ता से विद्युत कनेक्शन के मीटर को सही कराने और मुकदमे से बचाने और बढ़े हुए जुर्माने से बचाने के एवज में दस हजार रिश्वत मांग रहे है शिकायत पर प्रयागराज की एंटी करप्शन यूनिट ने आज इंस्पेक्टर अंजली यादव के नेतृत्व में 13 सदस्यीय टीम के साथ खुसरोबाग स्थित कार्यालय उपखण्ड अधिकारी कार्यालय में शिकायतकर्ता के साथ पहुंचकर एसडीओ को ट्रैप किया।

इलेक्ट्रिकल वाहनों की खुदरा बिक्री में तेज वृद्धि

नई दिल्ली। देश में इलेक्ट्रिक वाहनों की खुदरा बिक्री में जनवरी में सभी श्रेणियों में जबरदस्त उछाल दर्ज किया गया। वाहन डिलरों के महासंघ (फाडा) द्वारा बुधवार को जारी आंकड़ों में बताया गया है कि जनवरी में यात्री वाहनों की बिक्री साल-दर-साल 54.75 प्रतिशत बढ़कर 18,470 पर पहुंच गई। इस श्रेणी में 8,007 इकाइयों के साथ टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स शीर्ष पर रही। उसकी बिक्री 50.71 प्रतिशत बढ़ी। दूसरे स्थान पर 4,703 वाहनों के साथ जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया और तीसरे स्थान पर 3,668 इकाई के साथ महिंद्रा एंड महिंद्रा रही।

बजट में तकनीक, रोजगार और नारी सशक्तिकरण को प्राथमिकता

टेक युवा- समर्थ युवा योजना लागू होगी: खन्ना

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ पुलिस व्यवस्था को और मजबूत किया जाएगा, कौशल संवर्धन व जॉब प्लेसमेंट केन्द्र स्थापित किए जाएंगे

लखनऊ। वित्तीय वर्ष 2026-2027 के बजट भाषण में वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि वर्तमान युग में इमर्जिंग टेक्नोलॉजी का व्यापक उपयोग आवश्यक हो गया है। इसी उद्देश्य से उप्र में 'टेक्नोलॉजी मिशन' की स्थापना की जाएगी।

प्रदेश में स्टेट डाटा अथॉरिटी तथा डाटा सेंटर क्लस्टर्स स्थापित किए जाएंगे। साथ ही एआई मिशन की स्थापना और 'टेक युवा-समर्थ युवा' योजना लागू की जाएगी। उन्होंने कहा कि सामाजिक क्षेत्र में सभी वर्गों के लिए योजनाओं के साथ-साथ त्वरित और भविष्योन्मुखी विकास के लिए आधुनिक तकनीक एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इकोसिस्टम विकसित किया जा रहा है। वित्त मंत्री ने कहा कि प्रदेश की प्रगति में नारी शक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है और युवाओं की ऊर्जा व मेधा विकास की आधारशिला है।

महिला सशक्तीकरण के तहत मुख्यमंत्री मातृ सुरक्षा संकल्प योजना को और सघनता से संचालित किया जाएगा। स्वयं सहायता समूहों एवं महिला उद्यमियों के उत्पादों की बिक्री सुनिश्चित करने के लिए 'मुख्यमंत्री महिला उद्यमी उत्पाद विपणन योजना' पर कार्य किया जा रहा है। कृषि क्षेत्र में डीजल आधारित नलकूपों को सौर ऊर्जा आधारित बनाने, कृषि वितरण एवं निर्यात को बढ़ावा देने तथा त्वरित आर्थिक विकास के लिए 'सिटी इकोनॉमिक रीजन योजना' लागू करने की घोषणा की गई। रोजगार पर विशेष जोर देते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगारपरक प्रशिक्षण दिया जाएगा। कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्रों की क्षमता बढ़ाई जाएगी और नए केंद्र स्थापित किए जाएंगे। पीपीपी मॉडल पर कौशल संवर्धन और जॉब प्लेसमेंट केंद्र विभिन्न जनपदों में स्थापित किए जाएंगे, जिनमें महिलाओं के लिए पृथक केंद्र भी बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि पुलिस व्यवस्था को और मजबूत किया जाएगा। प्रदेश की कानून-व्यवस्था में सुधार हुआ है और महिलाओं के खिलाफ अपराधों में कमी आई है। पुलिस विभाग में 2 लाख से अधिक भर्तियां की गई हैं। 'अभ्युदय' केंद्रों में छात्रों को मुफ्त कोचिंग की सुविधा दी जा रही है। वित्त मंत्री ने दावा किया कि उप्र स्टार्टअप रैंकिंग में नंबर-1 बना है।

बजट प्रदेश को आत्मनिर्भर व प्रगतिशील बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल: राज्यपाल

लखनऊ। उप्र की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने विधानसभा में प्रस्तुत राज्य सरकार के बजट 2026-27 पर प्रतिक्रिया देते हुए इसे समावेशी, जनोन्मुखी और दूरदर्शी बताया। उन्होंने कहा कि यह बजट युवा सशक्तिकरण, कानून-व्यवस्था की मजबूती और चिकित्सा शिक्षा के विस्तार के माध्यम से प्रदेश को आत्मनिर्भर और प्रगतिशील बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। राज्यपाल ने कहा कि कौशल विकास, रोजगार सृजन और डिजिटल सशक्तिकरण पर दिया गया विशेष जोर युवाओं के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है।

परिवहन व्यवस्था को नई दिशा देगा बजट: दयाशंकर

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। उप्र के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के बजट में परिवहन विभाग को मिली प्राथमिकता को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि यह प्रावधान उप्र की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को नई दिशा देगा। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और वित्त मंत्री सुरेश खन्ना के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार प्रदेश में सुरक्षित, सुगम और पर्यावरण-अनुकूल यात्रा व्यवस्था विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने बताया कि बसों के बेड़े को मजबूत करने के लिए 400 करोड़ रुपये की लागत से ई-बसों की खरीद की जाएगी। इससे एक ओर जहां यात्रियों को आरामदायक और प्रदूषण-मुक्त यात्रा मिलेगी, वहीं दूसरी ओर शहरी क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में आधुनिक बस अड्डों के निर्माण और उन्नयन के लिए 150 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इन बस अड्डों पर डिजिटल सूचना प्रणाली, बेहतर प्रतीक्षालय और स्वच्छता सुविधाएं विकसित की जाएंगी। इसके अलावा सड़क सुरक्षा को लेकर सरकार गंभीर है। मुख्यमंत्री सड़क सुरक्षा विजन योजना के अंतर्गत 50 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है, जिससे दुर्घटना रोकथाम, जागरूकता अभियान और आपातकालीन सहायता प्रणाली को सुदृढ़ किया जाएगा। परिवहन मंत्री ने कहा कि इसके साथ ही बस अड्डों पर इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना हेतु 50 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। मंत्री ने कहा कि यह कदम हरित परिवहन नीति को मजबूती देगा और प्रदेश को सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ाएगा। दयाशंकर सिंह ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि स्वीकृत परियोजनाओं को समयबद्ध ढंग से लागू किया जाए।

कौशल विकास को नई रफ्तार देगा बजट: कपिलदेव

शाह टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। उप्र सरकार के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कपिल देव अग्रवाल ने कहा है कि वित्त मंत्री सुरेश खन्ना द्वारा प्रस्तुत बजट 2026-27 प्रदेश के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और विकसित उप्र 2047 के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सरकार रोजगारपरक शिक्षा और उद्योगों की मांग के अनुरूप प्रशिक्षण पर विशेष जोर दे रही है।

मंत्री कपिलदेव अग्रवाल ने बताया कि व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास के बजट में पिछले वर्ष की तुलना में 88 प्रतिशत की वृद्धि करते हुए लगभग 3,349 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। इससे आईटीआई और कौशल प्रशिक्षण संस्थानों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराने और प्रशिक्षकों की क्षमता बढ़ाने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में संचालित 286 राजकीय आईटीआई में करीब 1-90 लाख सीटें उपलब्ध हैं।

महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए 47 आईटीआई में विशेष महिला शाखाएं और 12 स्वतंत्र महिला आईटीआई संचालित किए जा रहे हैं। साथ ही 2,963 से अधिक निजी आईटीआई में 4.58 लाख से अधिक प्रशिक्षण सीटें उपलब्ध हैं।

भाजपा की विदाई का बजट: अखिलेश

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ बीजेपी वालों ने जब भी मुंह खोला, बुरा ही बोला

लखनऊ। उप्र विधानसभा में पेश किए गए योगी सरकार के 10वें बजट को लेकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जोरदार हमला बोला है। उन्होंने इसे 'विदाई बजट' करार दिया है। बुधवार को पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि बजट का आकार भले ही 9 लाख करोड़ रुपये से अधिक दिखाया जा रहा हो, लेकिन जमीनी हकीकत में यह जनता की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता।

सपा के राज मुख्यालय में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस के दौरान अखिलेश यादव ने कहा कि जब मुंह खोला तब बुरा बोला। यह विदाई बजट है और अब भाजपा की विदाई तय है। हर वर्ष बजट का आकार स्वाभाविक रूप से बढ़ता है, इसलिए केवल राशि बढ़ाना उपलब्धि नहीं माना जा सकता। असली सवाल यह है कि पिछले बजटों का पूरा और प्रभावी उपयोग क्यों नहीं हो सका। उनका आरोप था कि सरकार 50 प्रतिशत से अधिक धनराशि भी प्रभावी ढंग से खर्च नहीं कर पाई, जो प्रशासनिक अक्षमता को दर्शाता है। सपा प्रमुख ने कहा कि यदि उप्र को तीन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा गया है, तो राज्य की सकल घरेलू उत्पाद लगभग 90 लाख करोड़ रुपये के आसपास होनी चाहिए। मौजूदा दावों और वास्तविक आंकड़ों के बीच बड़ा अंतर है, जिससे सरकार की तैयारी और नीयत पर सवाल खड़े होते हैं। एमएसएमई क्षेत्र का मुद्दा उठाते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में लगभग 92 लाख इकाइयां हैं, जिनमें से 82 लाख अब तक पंजीकृत नहीं हैं। उन्होंने पूछा कि एक दशक में इतनी बड़ी संख्या में इकाइयों का पंजीकरण क्यों नहीं हो पाया। उनका कहना था कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों और नीतिगत बदलावों का सीधा असर एमएसएमई और किसानों पर पड़ेगा, लेकिन बजट में इनके लिए ठोस रणनीति नजर नहीं आती। अखिलेश यादव ने युवाओं के रोजगार, निवेश के दावों, स्वास्थ्य सेवाओं और कानून-व्यवस्था को लेकर भी सरकार को घेरा। उन्होंने आरोप लगाया कि कृषि विभाग में लगभग 57 प्रतिशत, स्वास्थ्य में 58 प्रतिशत और बेसिक शिक्षा में करीब 62 प्रतिशत बजट ही खर्च किया गया। जब पिछली योजनाओं की आवंटित धनराशि का पूरा उपयोग नहीं हो सका, तो नए और बड़े बजट की घोषणाओं से आम जनता को वास्तविक लाभ कैसे मिलेगा।

भाजपा ने राहुल गांधी के आचरण पर उठाए सवाल

नई दिल्ली। भाजपा ने बुधवार को संसद में नेता विपक्ष राहुल गांधी के बयान पर निशाना साधा और उनके आचरण पर सवाल उठाते हुए संसदीय मर्यादा को तार-तार करने का आरोप लगाया। भाजपा प्रवक्ता डा. सुधांशु त्रिवेदी ने पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि संसद लोकतत्र में उच्चतम मानकों और मर्यादाओं का प्रतीक मानी जाती है, लेकिन हालिया घटनाओं ने संसदीय परंपराओं को आघात पहुंचाया है। त्रिवेदी ने कहा कि गांधी ने अपने व्यवहार, भाषा और शैली से राजनीति तथा संसदीय गरिमा को निम्न स्तर तक ले जाने का काम किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि गांधी ने अपनी 'कुंठाग्रस्त शैली' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ बार-बार अनर्गल और झूठे आरोप लगाए हैं।

त्रिवेदी ने कहा कि संसद में भाषा की एक मर्यादा होती है और जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा की जाती है कि वे उसी के अनुरूप आचरण करें। उनके अनुसार विपक्षी दलों का व्यवहार ऐसा रहा है मानो उन्होंने संसद की गरिमा का ध्यान नहीं रखा हो।

काम कोर्स उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज़ पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

सेंसेक्स 84233.64
निफ्टी 25953.85

सोना रु. 156000
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 258000
प्रति किलो

शुरुआती बढ़त के बाद शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव

मुंबई, वार्ता

विदेशों से मिले सकारात्मक संकेतों के बीच बुधवार को घरेलू शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव देखा गया। आईटी कंपनियों में बिकवाली के दबाव में बीएसई का संसेक्स शुरुआती तेजी के बाद 40.28 अंक (0.05 प्रतिशत) गिरकर 84,233.64 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक 18.70 अंक यानी 0.07 प्रतिशत की बढ़त में 25,953.85 अंक पर पहुंच गया, जो 7 जनवरी के बाद का उच्चतम स्तर है। कुल मिलाकर बाजार में निवेश धारणा मजबूत रही। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.15 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.02 प्रतिशत ऊपर बंद हुआ। आईटी सेक्टर पर जबरदस्त दबाव देखा गया। निजी बैंकिंग सेक्टर का सूचकांक भी लाल निशान में बंद हुआ। ऑटो, सार्वजनिक बैंकों, स्वास्थ्य, फार्मा, टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद, तेल एवं गैस और रसायन समूहों के सूचकांक बढ़त में रहे। सेंसेक्स की कंपनियों में टीसीएस का शेयर ढाई प्रतिशत टूट गया। इंफोसिस, एचसीएल टेक्नोलॉजीज और इटरनल के शेयर एक से दो प्रतिशत के बीच टूट गए। आईटीसी, टेक महिंद्रा, एक्सिस बैंक, एचडीएफसी बैंक, अल्ट्राटेक सीमेंट और टाइटन के शेयर भी लाल निशान में रहे। भारतीय स्टेट बैंक का शेयर साढ़े तीन प्रतिशत के करीब चढ़ा। मारुति सुजुकी और इंडिगो में एक से दो प्रतिशत तक की तेजी रही। ट्रेंट, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एनटीपीसी, बजाज फाइनेंस और हिदुस्तान यूनीलिवर के शेयर भी बढ़त में बंद हुए।

चांदी और सोना दोनों धातुओं की कीमत और गिरी

नई दिल्ली। सोने-चांदी के दाम में लगातार दो दिन की बढ़त के बाद आज 11 फरवरी को गिरावट है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के अनुसार चांदी की कीमत एक हजार रुपए गिरकर 2.58 लाख रुपए किलो पर आ गई है। इससे पहले मंगलवार को इसकी कीमत 2.59 लाख रुपए किलो थी। आज 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 142 रुपए घटकर 1.56 लाख रुपए पर आ गई है। इससे पहले 10 फरवरी को इसके दाम 1.56 लाख रुपए प्रति 10 ग्राम थे। सोना भी अपने ऑल टाइम से 20 हजार रुपए सस्ता हो चुका है। इसकी कीमत भी 29 जनवरी को 1.76 लाख रुपए के अपने सबसे ऊपरी स्तर पर थी। आईबीजेए की सोने की कीमतों में 3 प्रतिशत जीएसटी, मेकिंग चार्ज, ज्वेलर्स मार्जिन शामिल नहीं होता। इसलिए शहरों के रेट्स इससे अलग होते हैं। इन रेट्स का इस्तेमाल आरबीआई सोवरेन गोल्ड बॉन्ड के रेट तय करने के लिए करता है। कई बैंक गोल्ड लोन के रेट तय करने के लिए इसे इस्तेमाल करते हैं। हमेशा ब्यूरो आफ इंडियन स्टैंडर्ड का हॉलमार्क लगा हुआ सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। ये नंबर अल्फान्यूमेरिक यानी कुछ इस तरह से हो सकता है। सोने का सही वजन और खरीदने के दिन उसकी कीमत कई सोर्सेज (जैसे इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन की वेबसाइट) से क्रॉस चेक करें। सोने का भाव 24 कैरेट, 22 कैरेट और 18 कैरेट के हिसाब से अलग-अलग होता है।

गेहूं मजबूत, खाद्य तेलों एवं दालों में रही घट-बढ़

नई दिल्ली, वार्ता

घरेलू थोक जिंस बाजारों में बुद्धवार को चावल के औसत भाव लगभग स्थिर रहे। चावल के साथ चीनी में भी टिकाव देखा गया। गेहूं के दाम बढ़ गए, जबकि खाद्य तेलों और दालों की कीमतों में उतार.चढ़ाव रहा।

औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत 3,850 रुपये प्रति क्विंटल पर लगभग स्थिर रही। गेहूं की कीमत 16 रुपये बढ़कर 2,865 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गया। आटा भी आठ रुपये महंगा हुआ। दाल-दलहनों में मिलाजुला रुख रहा। चना दाल औसतन तीन रुपये प्रति क्विंटल महंगी हुई। तुअर दाल 22 रुपये और उड़द दाल 17 रुपये सस्ती हुई। मूंग दाल की कीमत भी पांच रुपये प्रति क्विंटल टूट गई। मसूर दाल में कमोबेश टिकाव रहा। विदेशों में मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का अप्रैल वायदा 35 रिंगिट टूटकर 4,060 रिंगिट प्रति टन रह गया। अमेरिकी सोया तेल का मार्च वायदा भी 0.42 प्रतिशत फिसलकर 57.03 सेंट प्रति पौंड बोला गया। स्थानीय बाजारों में सरसों तेल की औसत कीमत 74 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गई। सोया तेल 55 रुपये और पाम ऑयल 30 रुपये महंगा हुआ। मूंगफली तेल की कीमत 24 रुपये और सूरजमुखी तेल की 23 रुपये बढ़ी। वहीं वनस्पति 14 रुपये प्रति क्विंटल सस्ता हुआ। मीठे के बाजार में आज गुड़ के औसत भाव पांच रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गए। चीनी में लगभग टिकाव रहा। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के दिन के औसत थोक भाव इस प्रकार रहे: दाल.दलहन: दाल चना 7783.83 रुपये, मसूर काली 8123.17 रुपये, मूंग दाल 10130.22 रुपये, उड़द दाल 10615.20 रुपये, तुअर दाल 11063.14 रुपये प्रति क्विंटल रहे।

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काज़ीज़ादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

Cipzer
— HEALTH WITH CARE —
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहज़मी जॉन्डिस, फेटी लीवर, एल्कॉहलिक लिवर डिज़ीज़ आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहें फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

ओमान ने भारतीय निवेशकों को नए एल्युमिनियम जोन में निवेश का दिया न्योता

नई दिल्ली। ओमान अपने प्लास्टिक क्लस्टर की सफलता को दोहराने की कोशिश के तहत भारतीय निवेशकों को नई योजना वाले एल्युमीनियम प्रोसेसिग जोन में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित कर रहा है। इससे यह पहल तेजी से बढ़ रही भारत-ओमान आर्थिक साझेदारी के तहत आएगी। लादायन कार्यक्रम के प्रमुख मुंधर अल-रवाहि ने यूनीवार्ता से बातचीत में कहा कि ओमान एल्युमिनियम क्षेत्र के इर्द-गिर्द 'एक संपूर्ण इकोसिस्टम' विकसित करना चाहता है। उनका कहना है कि यह नया औद्योगिक क्लस्टर कच्चे माल के निर्यात के बजाय मूल्य वर्धित प्रसंस्करण और विनिर्माण पर केंद्रित होगा।

प्रथम पृष्ठ के शेष...

योगी सरकार...

इन्टरप्रन्योरशिप योजना पर कार्य किया जाएगा। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के अगले चरण के रूप में जनविश्वास सिद्धांत के आधार पर उद्योगों को प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा। इसमें रजिस्ट्रेशन, लाइसेंसिंग आदि कार्यवाहियों को और अधिक सहज एवं सुगम बनाया जाएगा। विश्व बैंक सहायतित यूपी एग्रीज परियोजना के अन्तर्गत एग्री-एक्सपोर्ट हब की स्थापना कराई जाएगी। एसडीजी इंडिया इंडेक्स में उत्तर प्रदेश की रैंकिंग जो वर्ष 2018-2019 में 29 वें स्थान पर थी, बेहतर होकर वर्ष 2023-2024 में 18 वें स्थान पर आ गई है। राज्य सरकार द्वारा फरवरी, 2024 में चौथे ग्लोबल इन्वेस्टर्स सम्मिट का सफलतम आयोजन किया गया। अब तक लगभग 50 लाख करोड़ रुपये के एमओयू हस्ताक्षरित हो चुके हैं जिनसे लगभग 10 लाख रोजगार का सृजन सम्भावित है। इनमें से, अब तक लगभग 15 लाख करोड़ रुपये के निवेश की लगभग 16 हजार से अधिक परियोजनाओं के 4 ग्राउंड ब्रेकिंग समारोह सम्पन्न हो चुके हैं। उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा मोबाइल फोन विनिर्माण केन्द्र है। देश के कुल मोबाइल फोन उत्पादन का 65 प्रतिशत उत्पादन प्रदेश में होता है। भारत की 55 प्रतिशत इलेक्ट्रॉनिक्स कम्पोनेन्ट्स इकाईयां प्रदेश में स्थित हैं। प्रदेश का इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 44,744 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है।

देहरादून में...

हमलावरों ने उन पर फायर झोंक दिया। तिब्बती मार्केट के पास हुई इस घटना की सूचना जैसे ही पुलिस विभाग को मिली, तो विभाग में भी हड़कंप मच गया। आनन-फानन में पुलिस के आला अधिकारी सहित डालनवाला कोतवाल पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और सड़क पर पड़े लहूलुहान हालत में उन्हें तत्काल दून अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। दिनदहाड़े हुई इस हत्या से पूरे क्षेत्र में दहशत का माहौल है। पुलिस ने घटना के बाद राजधानी के सभी इलाकों में चेकिंग अभियान शुरू कर दिया है। एसएसपी अजय सिंह का कहना है कि इस हत्याकांड का जल्दी खुलासा कर दिया जाएगा। वही इस हत्याकांड को परिवार की रंजिश के चलते होना बताया जा रहा है।

राज्यसभा में पश्चिमी उप्र में एम्स बनाने की मांग उठी

नई दिल्ली। पश्चिमी उप्र के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने के लिए मेरठ में एम्स की स्थापना की मांग बुधवार को राज्यसभा में उठी। भारतीय जनता पार्टी के लक्ष्मीकांत वाजपेई ने शून्यकाल के दौरान यह मुद्दा उठाते हुए कहा कि उप्र के 21 प्रतिशत मरीज दिल्ली एम्स में उपचार के लिए आ रहे हैं और इनकी संख्या में 17.6 प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी हो रही है। उन्होंने कहा कि मेरठ के सरकारी अस्पताल में एम्स के लिए 52 एकड़ भूमि उपलब्ध है, जहां एम्स की स्थापना की जा सकती है। उन्होंने कहा कि यदि एम्स की स्थापना संभव न हो, तो मेरठ में पीजीआई संस्थान या एम्स का सेटेलाइट सेंटर बनाया जाना चाहिए। समाजवादी पार्टी के जावेद अली खान ने उप्र सहित देश भर में आवारा कुत्तों तथा बंदरों के लोगों पर बढ़ते हमलों का मुद्दा उठाते हुए बंदरों को वन्यजीव प्राणियों में शामिल किए जाने की मांग की। उन्होंने कहा कि बंदरों को वन्यजीव प्राणी घोषित किए जाने से वन्यजीव विभाग को उनकी देखभाल की जिम्मेदारी लेनी होगी। उन्होंने कहा कि उप्र में एक वर्ष में बंदरों और कुत्तों के लोगों पर हमले के 30 हजार मामले सामने आए हैं और यह समस्या एक महामारी के रूप में सामने आ रही है। जनता दल यू के संजय झा ने बिहार के दरभंगा हवाई अड्डे की क्षमता बढ़ाकर उसे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाने की मांग की।

मजदूर व किसान संगठनों का भारत बंद आज

लेबर कोड व अमेरिका के साथ ट्रेड डील के खिलाफ बंद का आह्वान किया

नई दिल्ली, वार्ता

■ बैंक खुले रहेंगे, लेकिन काम हो सकता है प्रभावित

देश के कई मजदूर और किसान संगठनों ने कल (आज)गुरुवार को भारत बंद का आह्वान किया है। इससे कई राज्यों में सरकारी बैंकों, दफ्तरों, परिवहन सेवाओं और बाजारों पर असर पड़ने की आशंका है। कुछ इलाकों में स्कूल और कॉलेज भी बंद रह सकते हैं। मजदूर संगठन नए लेबर कोड्स का विरोध कर रहे हैं, जबकि किसान संगठनों ने भारत-अमेरिका ट्रेड डील के खिलाफ बंद का आह्वान किया है। 10 सेंट्रल ट्रेड यूनियनों के ज्वाइंट फोरम ने इस बंद का आह्वान किया है। इसमें इनटक, एआईटीयूसी, एचएमएस, सीटू, एआईयूटीयूसी, टीयूसीसी, एसईडब्ल्यूए, एआईसीसीटीयू, एलपीएफ और यूटीयूसी शामिल हैं।

मजदूर संगठन पिछले साल लागू हुए चार लेबर कोड्स का विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि इससे वर्कर्स के राइट्स कमजोर हुए हैं, जॉब सिक्योरिटी भी आई है और कंपनियों के लिए वर्कर्स को नौकरी से निकालना आसान हो गया है। साथ ही उन्होंने प्राइवेटाइजेशन, वेज इश्यू और सोशल सिक्योरिटी में कमी पर भी चिंता जताई है। वे लेबर कोड्स को खत्म करने, ड्राफ्ट सीड बिल, इलेक्ट्रिसिटी अमेंडमेंड बिल और सस्टेनेबल हारनेसिंग एंड एडवांसमेंट आफ न्यूक्लियर एनर्जी फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया (शांति) बिल को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। साथ ही वे मनरेगा को बहाल करने और विकसित भारत जी-राम-जी बिल को खत्म करने की मांग कर रहे हैं। बंद के कारण सरकारी बैंकों में कामकाज के प्रभावित होने की आशंका है। इसकी वजह यह है कि कर्मचारियों और अधिकारियों के संगठनों ने इस बंद को सपोर्ट करने की घोषणा की है। ऑल इंडिया बैंक एम्प्लॉई एसोसिएशन, एआईबीओए और बीईएफआई ने अपने मेंबर्स से इस बंद को सपोर्ट करने को कहा है। देश के सबसे बड़े सरकारी बैंक एसबीआई का कहना है कि 12 फरवरी को उसकी सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक बंद के दौरान कुछ हद तक कामकाज प्रभावित हो सकता है। आईडीबीआई बैंक को भी बंद के लिए यूनियन्स की तरफ से एक अधिकारिक नोटिस मिला है। बैंकिंग यूनियन इस बंद को सपोर्ट कर रहे हैं। इससे ग्राहकों की चिंता बढ़ गई है। हालांकि बैंकों और आरबीआई ने बैंक होलिडे की घोषणा नहीं की है। इसका मतलब है कि बैंक खुले रहेंगे, लेकिन उनमें कामकाज प्रभावित हो सकता है। ब्रांच सर्विसेज, चेक क्लीयरेंस, डिपॉजिट और विड्रॉल में दिक्कत हो सकती है। ऑनलाइन बैंकिंग और एटीएम सेवाओं के सुचारू रूप से चलने की उम्मीद है। प्राइवेट बैंकों में सामान्य कामकाज होने की उम्मीद है।

CMYK

धामी कैबिनेट की बैठक में 6 फैसलों पर मुहर

बैठक में 2 श्रम विभाग, 2 गृह विभाग व एक- एक फैसला वन विभाग और कृषि विभाग से लिया गया

■ मुख्यमंत्री धामी के अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की बुधवार को हुई बैठक में 6 बड़े फैसले लिए गए। इनमें से 2 श्रम विभाग , 2 गृह विभाग व एक- एक फैसला वन विभाग और कृषि विभाग से लिया गया। मंत्रिमंडल की बैठक के बाद सचिव श्रम विभाग श्रीधर बाबू अद्दांकी और गृह सचिव शैलेश बगोली ने कैबिनेट मीटिंग को लेकर ब्रीफिंग करते हुए बताया कि, बैठक में पहला मुद्दा पेमेंट ऑफ बोनस उत्तराखंड संशोधित एक्ट 2020 को वापस लिए जाने की प्रक्रिया को पूरा कर दिया गया है।

श्रम सचिव ने बताया कि कोविड-19 महामारी के दौरान उद्योगों को राहत दिए जाने के लिए पेमेंट ऑफ बोनस (उत्तराऽंड संशोधन) विधेयक, 2020 के अंतर्गत यह प्रावधान किया गया था कि एंप्लॉयर के पास आवंटनीय अधिशेष उपलब्ध होने की स्थिति में ही कर्मचारियों को न्यूनतम बोनस का भुगतान किया जाएगा।

इस विधेयक में किए गए प्रावधानों के संबंध में केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रलय ने असहमति व्यक्त की- इसके साथ ही वर्तमान में कोविड-19 महामारी जैसी परिस्थितियां न होने और केंद्रीय गृह मंत्रलय द्वारा प्रस्तावित विधेयक को राष्ट्रपति की अनुमति के बिना विधायी एवं संसदीय कार्य विभाग उत्तराखंड को उपलब्ध कराए जाने के कारण विधेयक को आगे बढ़ाया जाना संभव नहीं हो पाया।

इस सभी तथ्यों के दृष्टिगत बोनस संदाय (उत्तराखंड संशोधन) विधेयक, 2020 को यथास्थिति विधानसभा से वापस लिए जाने का निर्णय राज्य सरकार द्वारा लिया गया है।

वन विभाग में कार्यरत दैनिक श्रमिकों को न्यूनतम वेतनमान

राज्य मंत्रिमंडल ने वन विभाग में कार्यरत दैनिक श्रमिकों को न्यूनतम वेतनमान दिए जाने का निर्णय लिया है। इस संबंध में मंत्रिमंडलीय उप-समिति ने सरकार को संस्तुति दी थी। इस आधार पर सरकार ने 589 दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को न्यूनतम 18 हजार रूपये वेतन देने का निर्णय लिया है। वन विभाग/वन विकास निगम में कार्यरत दैनिक श्रमिकों की कुल संख्या 893 है, जिसमें से 304 श्रमिकों को पूर्व से ही न्यूनतम वेतनमान का लाभ प्राप्त हो रहा है।

कैबिनेट के महत्वपूर्ण फैसले

एंटी नारकोटिक्स टॉस्क फोर्स में राज्य मुख्यालय में पहली बार 22 पदों का सृजन

राज्य मंत्रिमंडल के निर्णय के बाद उत्तराखंड में ड्रग फ्री मुहिम और तेज होगी। अभी तक एंटी नारकोटिक्स टॉस्क फोर्स में पुलिस फोर्स से प्रतिनियुक्ति पर कार्मिक लिए जा रहे थे। टॉस्क फोर्स का गठन 2022 में किया गया था। अब इस फोर्स के लिए अलग से ढांचा खड़ा करने की शुरूआत हुई है। इस क्रम में राज्य मुख्यालय में पहली बार 22 पदों का सृजन किया गया है। एक पुलिस उपाधीक्षक, दो ड्रग निरीक्षक, एक निरीक्षक, दो उपनिरीक्षक, चार मुख्य आरक्षी और आठ आरक्षी, दो आरक्षी चालक समेत कुल 22 पद सृजित किए जाएंगे।

कारागार एक्ट में संशोधन

राज्य मंत्रिमंडल ने उत्तराखंड कारागार और सुधारात्मक सेवाएं (संशोधन) अधिनियम, 2026 के प्रारूपण के संबंध में भी निर्णय लिया है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों में यह निर्देशित किया गया है कि कारागार नियमावलियों/मॉडल प्रिजन मैनुअल में प्रयुक्त आदतन अपराधी शब्द की परिभाषा संबंधित राज्य विधानमंडलों द्वारा अधिनियमित कानूनों के अनुरूप होनी चाहिए। संशोधन विधेयक को आगामी सत्र में उत्तराखंड विधान सभा के समक्ष पुनः स्थापित किए जाने का राज्य मंत्रिमंडल ने अनुमोदन प्रदान कर दिया है।

उत्तराखण्ड कर्मचारी राज्य बीमा योजना, श्रम चिकित्सा सेवा नियमावली, 2026 को प्रख्यापित

राज्य मंत्रिमंडल ने कर्मचारी राज्य बीमा योजना के अंतर्गत चिकित्सा सेवा संवर्ग के चिकित्सा अधिकारियों और उच्चतर पदों की सेवा-शर्तों के निर्धारण के संबंध में भी निर्णय लिया है। इस क्रम में उत्तराखण्ड कर्मचारी राज्य बीमा योजना, श्रम चिकित्सा सेवा नियमावली, 2026 को प्रख्यापित किया गया है, जिसके तहत कुल 94 पद होगें। इनमें 76 चिकित्सा अधिकारी, 11 सहायक निदेशक, छह संयुक्त निदेशक और एक अपर निदेशक का पद शामिल है। इससे पहले, ईएसआई के ढांचे में एक सीएमओ और 13 चिकित्सा अधिकारी के पद शामिल थे।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना व मुख्यमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना की अवधि बढ़ाई

मुख्यमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना की कार्यान्वयन अवधि वित्तीय वर्ष 2025-26 तक विस्तारित किए जाने के संबंध में भी राज्य मंत्रिमंडल ने निर्णय लिया है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा केंद्र प्रायोजित योजना प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना की कार्यान्वयन अवधि को एक वर्ष के लिए 31 मार्च 2026 (वित्तीय वर्ष 2025-26) तक बढ़ाया गया है। इस क्रम में राज्य सेक्टर के अंतर्गत संचालित "मुख्यमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना की कार्यान्वयन अवधि को भी वित्तीय वर्ष 2025-26 (31 मार्च 2026) तक विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है। साथ ही यह भी निर्णय लिया गया है कि भविष्य में यदि भारत सरकार के स्तर पर इस योजना की अवधि विस्तारित होती है, तो राज्य में भी इसे विस्तारित माना जाएगा।

बोनस संदाय (उत्तराखण्ड संशोधन) विधेयक, 2020 को यथास्थिति विधान सभा से लिया जाएगा वापस

कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान उद्योगों को राहत प्रदान किए जाने के उद्देश्य से बोनस संदाय (उत्तराखण्ड संशोधन) विधेयक, 2020 के अंतर्गत यह प्रावधान किया गया था कि नियोजक के पास आवंटनीय अधिशेष उपलब्ध होने की स्थिति में ही कर्मचारियों को न्यूनतम बोनस का भुगतान किया जाएगा। इस विधेयक में किए गए प्रावधानों के संबंध में श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा असहमति व्यक्त की गई। साथ ही वर्तमान में कोविड-19 महामारी जैसी परिस्थितियाँ विद्यमान न होने तथा गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित विधेयक को राष्ट्रपति की अनुमति के बिना विधायी एवं संसदीय कार्य विभाग, उत्तराखण्ड शासन को उपलब्ध कराए जाने के कारण विधेयक को आगे बढ़ाया जाना संभव नहीं हो पाया। इन तथ्यों के दृष्टिगत बोनस संदाय (उत्तराखण्ड संशोधन) विधेयक, 2020 को यथास्थिति विधान सभा से वापस लिए जाने का निर्णय राज्य सरकार द्वारा लिया गया है।

सुविधा और सुरक्षा पर रहेगा खास फोकसः धीराज

■ चारधाम यात्रा 2026 की तैयारियों पर हुआ मंथन

■ सचिव पर्यटन गर्ब्याल ने की उच्चस्तरीय समीक्षा

शाह टाइम्स प्रमुख संवाददाता

देहरादून। आगामी चारधाम यात्रा 2026 को लेकर तैयारियां तेज हो गई हैं। यात्रा के सफल, सुव्यवस्थित और सुरक्षित संचालन के लिए सचिव पर्यटन धीराज सिंह गर्ब्याल की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में उत्तरकाशी के जिलाधिकारी प्रशांत कुमार आर्य, चमोली के जिलाधिकारी गौरव कुमार, रुद्रप्रयाग के जिलाधिकारी प्रतीक जैन, अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी (यूटीडीबी) बीएल राणा सहित पर्यटन विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

बैठक की शुरुआत चारधाम यात्रा पंजीकरण और पर्यटक केयर प्रबंधन से जुड़ी तकनीकी टीम के विस्तृत प्रस्तुतीकरण से हुई। इसमें ऑनलाइन पंजीकरण प्रणाली, भीड़ प्रबंधन, रियल-टाइम मॉनिटरिंग, हेल्पलाइन सेवाएं और आपातकाल. ीन प्रतिक्रिया तंत्र की तैयारियों की जानकारी दी गई। इस वर्ष प्रस्तावित सुदृढ़ पंजीकरण व्यवस्था पर विशेष चर्चा हुई, जिससे तीर्थयात्रियों को पारदर्शी और समयबद्ध सुविधा मिल सके। सचिव पर्यटन ने निर्देश दिए कि यात्रा से पहले आवश्यक तैयारियों के लिए जनपदों को अग्रिम धनरा. शि समय से जारी की जाए, ताकि आधारभूत ढांचे के विकास में देरी न हो। उन्होंने यात्रा मार्गों पर स्वच्छता, शौचालयों की समुचित व्यवस्था, विश्राम स्थलों के निर्माण व रखरखाव और पेयजल की उपलब्धता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने को कहा।सुरक्षा और प्रबंधन की समीक्षा के दौरान सचिव ने पर्यटक पंजीकरण पोर्टल का तकनीकी परीक्षण भी किया। उन्होंने पोर्टल को अधिक यूजर फ्रेंडली और सर्वसुलभ बनाने के निर्देश दिए, ताकि वरिष्ठ नागरिकों और विशेष आवश्यकता वाले यात्रियों को पंजीकरण में कोई परेशानी न हो।

बैठक में सचिव पर्यटन ने तीनों जिलाधिकारियों से अलग-अलग चर्चा कर जनपदवार तैयारियों की प्रगति जानी। यात्रा मार्गों पर बुनियादी ढांचे के सुदृढ़ीकरण, सुगम आवागमन, यात्री सुविधा केंद्रों के उन्नयन और विभागीय समन्वय पर विशेष जोर दिया गया। सचिव पर्यटन धीराज सिंह गर्ब्याल ने कहा कि चारधाम यात्रा आस्था के साथ-साथ उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है।

अपराधों पर तत्काल दर्ज किए जाएं मुकदमेः सीएम

मुख्यमंत्री धामी ने ली कानून व्यवस्था को लेकर उच्च स्तरीय बैठक

■ पुलिस को सक्रिय एवं परिणामोन्मुखी कार्रवाई के आदेश

■ हर स्तर पर जवाबदेही तय की जाए

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री धामी ने सख्त शब्दों में कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था से किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने डीजीपी को निर्देश दिए कि सभी प्रकार के अपराधों पर तत्काल मुकदमे दर्ज किए जाएं और अपराधियों के विरुद्ध कठोर एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

मुख्यमंत्री धामी ने बुधवार को मुख्यमंत्री आवास में प्रदेश की कानून व्यवस्था की समीक्षा करते हुए उच्च स्तरीय बैठक ले रहे थे ।

मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से आदतन एवं संगठित अपराध में संलिप्त अपराधियों पर सख्त निगरानी रखने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि ऐसे तत्वों की पहचान कर उनके विरुद्ध विधिक प्रावधानों के तहत कठोर कार्रवाई की जाए, ताकि समाज में कानून का भय स्थापित हो और आमजन स्वयं को सुरक्षित महसूस करें।

मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि पुलिस पूरी सक्रियता, सतर्कता और जवाबदेही के साथ कार्य करे। थानों और चौकियों की कार्यप्रणाली को और अधिक सुदृढ़ किया जाए तथा संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त और निगरानी बढ़ाई जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि शहरी क्षेत्रों में यातायात एवं सुरक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए विशेष अभियान चलाए जाएं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अपराधियों को किसी भी स्थिति में बख्शा नहीं जाएगा। कानून हाथ में लेने वालों, असामाजिक तत्वों और प्रदेश की शांति भंग करने का प्रयास करने वालों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट संदेश दिया कि परिणाम दिखने चाहिए और जनता को सुरक्षा का अनुभव होना चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री धामी ने कहा कि उनकी सरकार "अपराध मुक्त उत्तराखण्ड" के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। प्रदेश की शांति, सुरक्षा और सुशासन सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना शासन की जिम्मेदारी है और इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए किया कि कानून व्यवस्था से जुड़े मामलों की नियमित समीक्षा की जाए और हर स्तर पर जवाबदेही तय की जाए, ताकि प्रदेश में कानून का राज और अधिक सशक्त हो सके।

बैठक में मुख्य सचिव, डीजीपी पुलिस, सचिव गृह, एडीजीपी (लॉ एन्ड आर्डर), गढ़वाल कमिश्नर सहित पुलिस एवं शासन के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

एस्केप टनल को पैरेलल रोड्स के रूप में करें विकसितः धामी

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। राज्य में प्रस्तावित रेल परियोजनाओं में टनल के साथ बनने वाले एस्केप टनल को समानांतर सड़कों (पैरेलल रोड्स) के रूप में विकसित किया जा सके, इसकी व्यवस्था बनाई जाए। ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल लाइन परियोजना में बनी एस्केप टनल का भविष्य में किस प्रकार इस्तेमाल किया जा सकता है, इसपर भी कार्य योजना तैयार जाए साथ ही कर्णप्रयाग से बागेश्वर तक रेल लाइन के विस्तार की संभावना पर भी कार्य किया जाए।

यह निर्देश मुख्यमंत्री धामी ने बुधवार को सचिवालय में राज्य में निर्माणाधीन एवं प्रस्तावित रेल परियोजनाओं की समीक्षा बैठक के दौरान दिए। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को टनकपुर - बागेश्वर रेल लाइन परियोजना पर भी तेजी से कार्य करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा उक्त परियोजना के अंतर्गत विभिन्न वैकल्पिक मार्गों पर भी विचार किया जाए। उन्होंने कहा परियोजना के निर्माण कार्य से अधिकांश क्षेत्र एवं जनता लाभान्वित हो सके इसके लिए अल्मोड़ा एवं सोमेश्वर क्षेत्र को भी जोड़ने की संभावनाओं पर कार्य किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा केंद्र सरकार से टनकपुर बागेश्वर रेल लाइन परियोजना को राष्ट्रीय परियोजना घोषित किए जाने का आग्रह किया जाए, जिससे इसके निर्माण कार्य को गति मिल सकेगी।

■ मुख्यमंत्री ने की राज्य में प्रस्तावित एवं निर्माणाधीन रेल परियोजनाओं की समीक्षा

ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन परियोजना के अंतर्गत 72.5 प्रतिशत कार्य पूर्ण

बैठक में बताया गया कि ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल लाइन परियोजना के अंतर्गत 72.5 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है साथ ही टनल निर्माण का 95.30 फीसदी कार्य पूरा हो गया है। इस परियोजना के अंतर्गत कुछ कल 28 टनलों का निर्माण किया है जिनमें से 16 मुख्य टनल एवं 12 एस्केप टनल हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रस्तावित रेलवे स्टेशनों का निर्माण अलग-अलग थीम के आधार पर किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि ऋषिकेश कर्णप्रयाग परियोजना के अंतर्गत प्रस्तावित रेलवे स्टेशनों के लिए इंटीग्रेटेड प्लान बनाया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माणाधीन रेलवे स्टेशनों के आसपास स्थित विभिन्न गांव, कस्बों, धार्मिक स्थलों एवं अन्य पर्यटन स्थलों के विकास के लिए भी रोड मैप तैयार किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित रेलवे स्टेशनों के आसपास के स्थानों का समुचित पुर्नविकास किया जाए। टनकपुर बागेश्वर रेल लाइन परियोजना के बारे में बताया गया कि परियोजना के अंतर्गत रेलवे द्वारा तीन सर्वेक्षण विकल्प प्रस्तावित किए गए हैं। बैठक में मुख्य सचिव आनंद बर्द्धन, प्रमुख सचिव आर.के सुधांशु, आर. मीनाक्षी सुंदरम, सचिव ब्रजेश कुमार संत, पंकज पांडे, मुख्य परियोजना प्रबंधक हिमांशु बडोनी, विजय, ओम प्रकाश, सुमन सिंह, कल्याण सिंह भंडारी, सनत कुमार सिंह एवं वर्चुअल माध्यम से रेलवे के अधिकारी मौजूद रहे।

सैनिक कल्याण मंत्री जोशी से पूर्व सैनिकों ने की मुलाकात

देहरादून। सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी से बुधवार को उनके कैंप कार्यालय में पूर्व सैनिकों ने मुलाकात की। इस दौरान पूर्व सैनिकों ने अपनी विभिन्न समस्याओं को सैनिक कल्याण मंत्री के समक्ष रखा। सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी ने पूर्व सैनिकों को उनकी समस्या के समाधान का भरोसा दिलाया। इस दौरान पूर्व सैनिकों ने सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी का पूर्व सैनिकों और उनके आश्रितों के कल्याण के लिए किए जा रहे के लिए आभार भी जताया। इस अवसर पर पीबीओआर अध्यक्ष शमशेर बिष्ट सहित अन्य पूर्व सैनिक उपस्थित रहे।

सूबे में शैक्षणिक संवर्ग का बनेगा त्रि-स्तरीय ढांचा

■ डायटों में रिक्त पदों पर होगी स्थाई नियुक्तिः डॉ. रावत

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत शैक्षणिक संवर्ग का नया त्रि-स्तरीय ढांचा बनाया जायेगा। जिसका प्रस्ताव शीघ्र ही कैबिनेट में लाया जायेगा। इसके अतिरिक्त डायटों में रिक्त प्रवक्ता संवर्ग के 222 रिक्त पदों को भरने के लिये अधियाचन लोक सेवा आयोग को भेजा जायेगा ताकि उक्त पदों पर स्थाई नियुक्ति की जा सके। नये शैक्षणिक सत्र शुरू होने से पूर्व प्रदेशभर के सभी विद्यालयों में निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध करा दी जायेगी। सूबे के विद्यालयी शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने आज शासकीय आवास पर शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक ली। जिसमें उन्हेंने केन्द्रीय विद्यालयों की भांति प्रदेश में शिक्षकों के त्रि-स्तरीय ढांचे के गठन में देरी पर विभागीय अधिकारियों को फटकार लगाई। उन्होंने संबंधित

अधिकारियों को शीघ्र प्रस्ताव तैयार कर कैबिनेट में प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। साथ ही सभी जनपदों के डायटों में लम्बे समय से रिक्त चल रहे प्रवक्ता संवर्ग के 222 पदों को भरने के लिये अधियाचन राज्य लोक सेवा आयोग को भेजने के निर्देश दिये ताकि उक्त पदों के सापेक्ष प्रतिनियुक्ति पर तैनात प्रवक्ताओं को उनके मूल विभाग में वापस भेजा जा सके। विभागीय मंत्री ने अधिकारियों को सख्त निर्देश दिये कि नये शैक्षणिक सत्र शुरू होने से पहले सभी विद्यालयों में सरकार द्वारा दी जाने वाली निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराई जाय। यदि किसी विद्यालय में समय पर पुस्तकें उपलब्ध नहीं होगी तो जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी। इसके अलावा उन्होंने एससीईआरटी के ढांचे के गठन एवं नियमावली बनाने की प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिये। बैठक में सचिव रविनाथ रमन, अपर सचिव एम.एम. सेमवाल, निदेशक प्राथमिक शिक्षा अजय कुमार नौडियाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा डॉ. मुकुल सती, अनु सचिव विकास श्रीवास्तव, अपर निदेशक पदमेन्द्र सकलानी सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे

सरस मेला और फूड फेस्टिवल की तैयारियां समय से करें पूरीः जोशी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। ग्राम्य विकास मंत्री गणेश जोशी ने आज कैंप कार्यालय में ग्राम्य विकास विभाग के अधिकारियों के साथ आगामी सरस मेला एवं फूड फेस्टिवल 2026 की तैयारियों को लेकर समीक्षा बैठक की।

बैठक के दौरान ग्राम्य विकास मंत्री गणेश जोशी ने निर्देश दिए कि जनपद उधम सिंह नगर में 14 से 23 फरवरी तक आयोजित होने वाले 10 दिवसीय सरस मेला तथा जनपद चम्पावत में 18 से 24 फरवरी तक प्रस्तावित सात दिवसीय फूड फेस्टिवल की सभी आवश्यक तैयारियां समयबद्ध रूप से पूर्ण की जाएं, ताकि कार्यक्रमों का सफल आयोजन सुनिश्चित हो सके।

इस अवसर पर मंत्री जोशी ने 'हाउस ऑफ हिमालयाज' ब्रांड की प्रगति की भी जानकारी ली। विभागीय अधिकारियों ने अवगत कराया कि पहाड़ की महिलाओं द्वारा तैयार उत्तराखण्डी उत्पादों के इस ब्रांड ने लॉन्चिंग के मात्र दो वर्षों के भीतर साढ़े तीन करोड़ रुपये से अधिक की बिक्री कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। उन्होंने बताया कि आगामी समय में हाउस ऑफ हिमालयाज के उत्पाद विदेशों में भी बिक्री के लिए उपलब्ध कराए जाएंगे, जिससे स्थानीय महिलाओं को रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। ग्राम्य विकास मंत्री जोशी ने कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण आजीविका, महिला सशक्तिकरण एवं स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

इस अवसर पर अपर सचिव ग्राम्य विकास झरना कमठान सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

■ ग्राम्य विकास मंत्री ने ग्राम्य विकास विभाग के अधिकारियों के साथ आगामी सरस मेला एवं फूड फेस्टिवल 2026 की तैयारियों की बैठक

भाजपा ने शुरू किया सबसे बड़ा राजनीतिक प्रशिक्षण अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। भाजपा, विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक प्रशिक्षण महाअभियान का शुभारंभ करने जा रही है। दीन दयाल उपाध्याय के नाम से राज्य में इस अभियान की शुरुआत प्रदेश कार्यशाला से होगी। अभियान के अंतर्गत संगठन की शक्ति और प्रभाव में वृद्धि के लिए समर्पित, उर्जावान कार्यकर्ता निर्माण और उनकी क्षमताओं के उन्नयन पर जोर दिया जाएगा।

प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने इस पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान की जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष के निर्वाचन के साथ संगठन पर्व अभूतपूर्व सदस्यता के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हो गया है। जिसके क्रम में मंडल, जिला एवं प्रदेश में 95% से अधिक अध्यक्षों एवं उनकी टीमों का चयन पूर्ण किया जा चुका है। पार्टी की सामान्य संवैधानिक प्रक्रिया के तहत, पूर्व की भांति अब विभिन्न स्तरों पर समितियों के गठन एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण किया जा रहा है। जिसके संदर्भ में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नबिन की गरिमामयी उपस्थिति में विगत 5 फरवरी को प्रशिक्षण महाभियान की राष्ट्रीय कार्यशाला, केन्द्रीय कार्यालय में सम्पन्न हुई। केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश अध्यक्ष श्री महेन्द्र भट्ट के निर्देशानुसार पार्टी, राज्य में भी यह प्रशिक्षण अभियान शुरू करने जा रही है। लगभग वर्ष भर चलने वाले इस अभियान के सफल संचालन के लिए प्रदेश महामंत्री कुंदन परिहार के प्रदेश सयोनजकत्व में प्रदेश टोली का गठन किया गया है। परिहार को अभियान का संयोजक बनाया गया है। उनकी सहायता के लिए नेहा जोशी, रमेश चौहान, प्रदीप बिष्ट, ऋषि कंडवाल, हिमांशी संगथानी, प्रवीण लेखवार को जिम्मेदारी दी गई है। कार्यक्रम रचना की जानक. ारी देते हुए चौहान ने कहा, प्रदेश स्तरीय योजना बैठक के लिए प्रदेश कार्यशाला 17 फरवरी को देहरादून में आयोजित होगी। जिसमें प्रदेश पदाधिकारी, प्रदेश मोर्चा अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रदेश के मीडिया, सोशल मीडिया एवं आईटी संयोजक व सह-संयोजक, प्रदेश प्रवक्ता, जिला अध्यक्ष, जिला प्रभारी व सह-प्रभारी एवं जिला प्रशिक्षण टोली शामिल होंगी। इसी क्रम में 26 फरवरी से 1 मार्च के बीच प्रत्येक जिले में जिला कार्ययोजना कार्यशाला बैठक आयोजित की जाएंगी। जिसमें जिला पदाधिकारी, जिला मोर्चा अध्यक्ष एवं महामंत्री, मण्डल अध्यक्ष, मण्डल प्रभारी एवं मण्डल प्रशिक्षण टोली सम्मिलित होंगी। मंडल प्रशिक्षण वर्ग 7 मार्च से प्रारंभ होकर 14 अप्रैल, बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर जयंती तक आयोजित किये जाएंगे।

■ प्रशिक्षण अभियान के लिए कुंदन परिहार के नेतृत्व में प्रदेश टोली का गठन!

प्रशिक्षण से होगा समर्पित, उर्जावान कार्यकर्ता निर्माण और उनकी क्षमता उन्नयनः महेंद्र भट्ट

अभियान के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए प्रदेश अध्यक्ष भट्ट ने बताया कि संगठन की शक्ति और प्रभाव में वृद्धि के लिए समर्पित, उर्जावान कार्यकर्ता निर्माण और उनकी क्षमताओं के उन्नयन पर प्रशिक्षण में जोर दिया जाएगा ताकि हमारे कार्यकर्ता विकसित भारत के संकल्प के साथ भारतीय जनता पार्टी को भी और अधिक सशक्त बनाने में सक्षम हों

मंडल पर 24 व जिला स्तर पर 36 घंटे का होगा प्रशिक्षण वर्ग

अभियान के प्रदेश संयोजक कुंदन परिहार ने विस्तृत जानकारी देते हुए कहा, प्रत्येक प्रशिक्षण वर्ग मंडल स्तर पर 24 घंटे और जिला स्तर पर 36 घंटे का होगा। जिसमें सभी कार्यकर्ताओं का एक रात्रि का निवास अनिवार्य रहेगा। इसमें बौद्धिक एवं सांगठनिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त साहित्य, पीपीटी एवं डिजाइन प्रारूप आदि माध्यमों से भी विषय अनुशार जानकारी साझा की जाएगी। इसके साथ-साथ बूथ एवं शक्ति केंद्र स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल भी प्रारंभ किए जाएंगे।

वनाग्नि सुरक्षा को लेकर डीएम ने कसा शिकंजा, होगी कार्रवाई

■ जिला स्तरीय वनाग्नि सुरक्षा समिति की बैठक में डीएम नितिका खंडेलवाल ने ग्राम प्रधानों की जिम्मेदारी तय करने के दिए निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। गर्मियों का मौसम शुरू होते ही पर्वतीय क्षेत्रों में वनाग्नि की घटनाओं की आशंका बढ़ जाती है, जिसे देखते हुए जिला प्रशासन ने अभी से कमर कस ली है। कलेक्ट्रेट कार्यालय के वीसी कक्ष में आयोजित जिला स्तरीय वनाग्नि सुरक्षा समिति की महत्वपूर्ण बैठक में जिलाधिकारी नितिका खंडेलवाल ने वनाग्नि प्रबंधन और रोकथाम को लेकर अधिकारियों को कड़े निर्देश जारी किए।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिलाधिकारी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वनों को आग से बचाना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है और इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने विशेष रूप से डीपीआरओ एमएम खान को निर्देशित किया कि वे जिले के सभी ग्राम प्रधानों के साथ समन्वय स्थापित करें और उन्हें नियंत्रित रूप से आग लगाने (कंट्रोल्ड बर्निंग) के संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करें। जिलाधिकारी ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि किसी क्षेत्र में अनियंत्रित तरीके से आग लगाने की घटना सामने आती है, तो संबंधित व्यक्ति के विरुद्ध वन अधिनियम के तहत सख्त दंडात्मक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

वनाग्नि की घटनाओं पर त्वरित नियंत्रण और आम जनमानस की सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी ने तकनीक के उपयोग पर भी जोर दिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे आम जनता का मोबाइल ऐप डाउनलोड करने के लिए प्रेरित करें, ताकि आग लगने की सूचना तुरंत संबंधित विभाग को मिल सके। इसके अलावा, उन्होंने जन-जन की सरकारष् शिविरों का लाभ उठाते हुए वन विभाग की पिरूल कलेक्शन योजना की जानकारी दूरदराज के ग्रामीणों तक पहुंचाने की बात कही। पिरूल (चीड़ की पत्तियां) वनाग्नि का एक प्रमुख कारण है, और इस योजना के तहत पिरूल इकट्ठा करने से आग का खतरा कम होगा बैठक के दौरान प्रभागीय वनाधिकारी (डीएफओ) टिहरी पुनीत तोमर ने एक विस्तृत प्रस्तुतीकरण के माध्यम से जिले की वनाग्नि सुरक्षा तैयारियों का खाका पेश किया। उन्होंने टिहरी वन प्रभाग, नरेंद्रनगर वन प्रभाग और मसूरी वन प्रभाग के अंतर्गत आने वाले रेंजों का वार ब्यौरा, प्रजातिवार वनों की स्थिति और पिछले वर्षों में हुई वनाग्नि दुर्घटनाओं के कारणों से समिति को अवगत कराया। डीएफओ ने बताया कि आग पर काबू पाने के लिए डाइजर में एक विशेष कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है,

साथ ही क्रू स्टेशनों को सक्रिय कर दिया गया है बैठक में वन भूमि से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी चर्चा की गई, जिसमें लैंड बैंक की वर्तमान स्थिति और फॉरेस्ट लैंड ट्रांसफर से संबंधित लंबित प्रकरण शामिल रहे। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी वरुणा अग्रवाल, डीएफओ नरेंद्रनगर दिगंत नायक, डीएफओ टिहरी डैम संदीपा, एसडीएम घनसाली अलक. ेश, एसडीएम टिहरी स्नेहिल सहित वन विभाग के संदीप सिंह चौहान और जन्मजय रमोला जैसे अधिकारी भौतिक एवं वर्चुअल माध्यम से मौजूद रहे।

सभी अधिकारियों ने वनाग्नि काल के दौरान आपसी समन्वय और तत्परता से कार्य करने की प्रतिबद्धता जताई।

शराब के नशे में वाहन दौड़ाना पड़ा भारी घनसाली पुलिस ने चालक को किया गिरफ्तार

■ सायंकालीन चेकिंग अभियान के दौरान यातायात नियमों की अनदेखी करने वालों पर पुलिस का शिकंजा, मेडिकल जांच में पुष्टि होने पर कार सीज, एसएसपी ने की नशामुक्ति और सुरक्षित यात्रा की अपील

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाने और यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से टिहरी पुलिस द्वारा जिले भर में सघन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में थाना घनसाली पुलिस ने सायंकालीन गश्त और वाहन चेकिंग के दौरान एक बड़ी कार्रवाई करते हुए शराब के नशे में वाहन चला रहे एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। पुलिस की इस तत्परता से संभावित सड़क दुर्घटना को टालने में मदद मिली है, क्योंकि नशे की हालत में वाहन चलाना न केवल चालक के लिए बल्कि सड़क पर चलने वाले अन्य लोगों के लिए भी जानलेवा साबित हो सकता है।

घटनाक्रम के अनुसार, थाना घनसाली पुलिस की टीम क्षेत्र में शांति व्यवस्था और यातायात नियमों का पालन सुनिश्चित करवाने के लिए वाहनों की नियमित जांच कर रही थी। इसी दौरान एक कार चालक की संदिग्ध गतिविधियों को देखते हुए पुलिस ने उसे रोका। पूछताछ और जांच के दौरान चालक की स्थिति असामान्य पाई गई, जिसके बाद पुलिस ने उसका मेडिकल परीक्षण करवाया। मेडिकल रिपोर्ट में चालक द्वारा शराब का सेवन किए जाने की पुष्टि हुई। आरोपी की पहचान कुंवर सिंह निवासी ग्राम जखन्याली, पट्टी नैलचामी, थाना घनसाली के रूप में हुई है। यातायात नियमों का खुला उल्लंघन करने और दूसरों की जान को खतरे में डालने के आरोप में पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए मोटर वाहन अधिनियम की सुसंगत धाराओं के तहत उसे गिरफ्तार कर लिया और उसकी कार को सीज कर दिया गया है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक टिहरी आयुष अग्रवाल ने इस कार्रवाई के बाद आम जनमानस से एक बार फिर अपील की है कि वे यातायात नियमों का कड़ाई से पालन करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि शराब पीकर वाहन चलाना एक दंडनीय अपराध है और इससे गंभीर सड़क हादसे हो सकते हैं।

एसएसपी ने कहा कि पुलिस का उद्देश्य चालान काटना नहीं, बल्कि लोगों की जान बचाना है। उन्होंने सभी वाहन चालकों को हिदायत दी है कि वे नशे की हालत में स्टेरिंग न थामें और अपनी तथा दूसरों की सुरक्षा को प्राथमिकता दें। पुलिस का यह अभियान आगे भी जारी रहेगा ताकि जिले की सड़कों को सुरक्षित बनाया जा सके।

उत्तरकाशी के 8 बाल वैज्ञानिकों का राज्य स्तर के लिए हुआ चयन

शाह टाइम्स संवाददाता

उत्तरकाशी : अटल उत्कृष्ट राजकीय बालिका इंटर कॉलेज उत्तरकाशी में इंस्पायर अवार्ड मानक के तहत दो दिवसीय जनपद स्तरीय प्रतियोगिता संपन्न हो गई है। इस प्रतियोगिता में इंस्पायर अवार्ड के लिए चयनित 78 बाल वैज्ञानिकों ने अपने नवाचार आधारित मॉडल प्रदर्शित किए। मूल्यांकन के बाद, निर्णायकों ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए जनपद के 8 बाल वैज्ञानिकों का चयन किया। कार्यक्रम के बतौर मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौहान ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर छात्रों के प्रोजेक्ट में इनकी कड़ी मेहनत, रचनात्मकता और नवाचार की प्रशंसा की। इस दौरान मुख्य शिक्षा अधिकारी अमित कोटियाल ने बाल वैज्ञानिकों का अपने संबोधन से मनोबल बढ़ाकर उन्हें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। वहीं जिला सह समन्वयक डा. संजीव डोभाल ने कहा कि इंस्पायर अवार्ड - मानक योजना के तहत कक्षा 6-12 के छात्रों से वैज्ञानिक और नवोन्मेषी विचारों को आमंत्रित किया जाता है। चयनित छात्रों को मॉडल बनाने के लिए 10,000 की प्रोत्साहन राशि भी मिलती है। जिला समन्वयक डा. राज. ेश जोशी ने स्थल संयोजिका श्रीमती प्रियंका भंडारी सभी अतिथियों, मार्गदर्शन करने वाले शिक्षकों, तथा बाल वैज्ञानिकों का हौसला अफजाई किया। समापन अवसर भारतीय रेडक्रास सोसाइटी के चेयरमैन माधव जोशी, खंड शिक्षा अधिकारी श्रीमती हर्षा रावत , निर्णायक सुमन रावत , राजपाल सिंह पंवार ने बाल वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा० अजय प्रकाश नौटियाल ने किया कार्यक्रम में ,डॉ. शंभू नौटियाल, आदि उपस्थित थे।

पेयजल व सड़क की मांग को लेकर क्रमिक अनशन जारी

■ पाव अकरी में आक्रोशित ग्रामीणों ने सरकार के खिलाफ किया प्रदर्षन

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीनगर। विकासखंड कीर्तिनगर के अकरी-बारजुला पट्टी के गांव में पेयजल व सड़क निर्माण से जुड़ी समस्याओं के निस्तारण के लिए पाव अकरी के ग्रामीणों का क्रमिक अनशन बुधवार को दूसरे दिन भी जारी रहा। दूसरे दिन सामाजिक कार्यकर्ता गौरव राणा, पूर्व प्रधान मैखण्डी मीना पुण्डीर, सुरता सिंह बिष्ट, मंजू देवी गुसांई, सुरमा देवी, सुकारी देवी, पुष्पा देवी, रीता देवी, सपना देवी, जंयती प्रसाद चमोली, धर्मानंद पोखरियाल क्रमिक अनशन पर रहें। इस दौरान ग्रामीणों ने सरकार के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करते हुए जोरदार नारेबाजी की।

इस मौके पर ग्रामीणों ने न्यूली पेयजल योजना के पुनगर्ठन करने, अकरी-बारजुला पंपिंग योजना कि उच्च स्तरीय जांच किए जाने व कोराखाल (सेल) तोक से मठुर गांव तक मोटरमार्ग का निर्माण कराएं जाने की मांग की। इस दौरान ग्रामीणों ने कहा कि बीते लम्बे समय से ग्रामीण समस्याओं के समाधान के लिए मांग करते आ रहें है, लेकिन ग्रामीणों की समस्याओं को अनसूना किया जा रहा है। जिससे आक्रोशित ग्रामीणों ने आंदोलन के लिए बाध्य हो गये है। आंदोलन का नेतृत्व कर रहें पूर्व जिला पंचायत सदस्य महिलपाल बुटोला ने कहा कि देवप्रयाग विधानसभा में सड़कों और पेयजल सम्बंधित समस्या हल होने के बड़े-बड़े दावे किए जा रहें है, लेकिन सब हवाहवाई साबित हो रही है। कहा कि पाव अकरी के ग्रामीण लम्बे समय से पेयजल और सड़क सम्बंधित समस्या को हल करने की मांग कर रहें है, लेकिन अधिकारी केवल कोर आश्वासन देकर ग्रामीणों को गुमराह करने का कार्य कर रहें है। कहा कि यदि जल्द से मांगों पर सकारात्मक कार्यवाही नहीं होती है तो वह नई टिहरी जिलाधिकारी कार्यालय में भूख हड़ताल करने को बाध्य होंगे। इस मौके पर कीर्तिनगर पूर्व ब्लॉक प्रमुख्य विजयंता निजवाला सहित आदि मौजूद थे। '' ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान को लेकर स्थानीय प्रशासन और सम्बंधित विभाग के अधिकारी धरना स्थल पर पहुंचे थे। इस दौरान अधिकारियों द्वारा ग्रामीणों कि समस्याओं के निस्तारण करने का आश्वासन दिया है। जल्द ही ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान कर दिया जायेगा।'' मंजू राजपूत, उपजिलाधिकारी, कीर्तिनगर।

एक नजर ....

विधानसभा घेराव कार्यक्रम को लेकर रणनिति तैयार की

श्रीनगर। राष्ट्रीय पुरानी पेंशन बहाली संयुक्त मोर्चा टिहरी के तत्वाधान में बुधवार को ब्लॉक कीर्तिनगर सभागार में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में विधानसभा घेराव कार्यक्रम को लेकर रणनिति तैयार की गई। मोर्चा के ब्लॉक अध्यक्ष संदीप मैठानी ने कहा कि नई पेंशन योजना कर्मचारियों के हितों के अनुकूल नहीं है और इससे भविष्य की आर्थिक सुरक्षा पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। मोर्चा के ब्लॉक मंत्री सुरजीत सिंह ने कहा कि सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए यह आंदोलन पूरी मजबूती और एकजुटता के साथ किया जाएगा। मोर्चा के जिलाध्यक्ष राजीव उनियाल ने कहा कि पुरानी पेंशन कर्मचारियों का अधिकार है और इसके लिए संघर्ष जारी रहेगा। उन्होंने सभी विभागों के कर्मचारियों से एकजुट होकर आंदोलन में भाग लेने की अपील की। मौके पर दीपक मियां, गब्बर सिंह चौहान, जगमोहन उमरियाल, निर्मला रोहिणी, विजय रावत, सोहन सिंह रावत, प्रीति कठैत, प्रीति बलोनी, हेमलता उमरियाल , नरेंद्र सलेरा, बीना कठैत, राजेंद्र कैंतुरा, महावीर पालीवाल, केंद्र सिंह, अनिल भट्ट , आदित्य कठैत, अमनदीप, विक्रम भारती, अनुराधा प्रेमी, रमेश बर्थवाल, राकेश बरमाल आदि मौजूद थे।

सीडीएस के प्रस्तावित कार्यक्रम को लेकर तैयारियां तेज

श्रीनगर। सीडीएस जनरल अनिल चौहान के 21 फरवरी को प्रस्तावित आगमन को लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन ने तैयारियाँ तेज कर दी हैं। कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश सिंह के निर्देशन में गठित विभिन्न समितियों के कार्यों की समीक्षा के लिए बैठक आयोजित की गई। बैठक में कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक प्रो. एमपीएस बिष्ट ने सभी समितियों के संयोजकों एवं सदस्यों के साथ विस्तृत चर्चा की। इस दौरान स्वागत एवं प्रोटोकॉल व्यवस्था, अतिथि सत्कार, मंच सज्जा, ध्वनि प्रणाली, बैनर एवं बैठक व्यवस्था, स्मृति-चिह्न एवं फोटोग्राफी-वीडियोग्राफी, लाइव स्ट्रीमिंग, परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स, गार्ड ऑफ ऑनर की तैयारी, सुरक्षा एवं अनुशासन व्यवस्था, पुस्तकालय प्रबंधन, हेल्पडेस्क संचालन तथा स्वागत गीत की प्रस्तुति जैसे बिंदुओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया तथा सभी समितियों को समयबद्ध एवं समन्वित रूप से कार्य संपादित करने के निर्देश दिए गए। बैठक में प्रो. मोहन पंवार प्रो. एचबीएस चौहान, प्रो. सीमा धवन, प्रो. ओपी गुसाईं, प्रो. वाईपी रैवानी, प्रो. बीपी नैथानी, डॉ. सुरेन्द्र सिंह बिष्ट, डॉ. डीके राणा, डॉ. वीके पुरोहित, डॉ. कपिल पंवार सहित आदि मौजूद थे।

पीएचडी प्रवेश परीक्षा पूर्व के भांति कराए जाने की मांग

श्रीनगर। गढ़वाल विवि में छात्र हितों से जुड़ी मांगों पर सकारात्मक कार्यवाही न होने पर छात्रों ने कड़ा रोष व्यक्त करते हुए बुधवार को कोतवाली सचिवालय के बाहर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान छात्रों ने गढ़वाल विवि प्रशासन के खिलाफ जोरदार नारेबाजी करते हुए जल्द मांगों पर सकारात्मक कार्यवाही की मांग की। गढ़वाल विवि के छात्र संघ महासचिव अनिरूद्ध पुरोहित के नेतृत्व में छात्र विभिन्न मांगों को लेकर कुलपति कार्यालय पहुंचे। इस मौके पर महासचिव अनिरूद्ध पुरोहित, उपाध्यक्ष शिवांक नौटियाल, पूर्व छात्रा प्रतिनिधि प्रियंका खत्री ने कहा कि लम्बे समय से छात्र पीएचडी प्रवेश परीक्षा पूर्व की भांति कराएं जाने, पीएचडी के रिक्त सीटों प्रवेश कराएं जाने, विवि के भीतर पांच एम्बुलेंसों कि व्यवस्था किए जाने, डीआर वित्त की नियुक्ति की जांच किए जाने सहित अन्य समस्याओं के निस्तारण मांग कर रहें है, लेकिन गढ़वाल विवि इस पर सकारात्मक कार्यवाहीं नहीं कर पा रहा है।

धराली आपदा प्रभावितों के आवेदनों को डीएम ने बिना देरी दी स्वीकृति

■ रोजगारपरक योजनाओं से आपदा प्रभावित न रहे वंचित : प्रशांत आर्य

शाह टाइम्स संवाददाता

उत्तरकाशी : जिलाधिकारी प्रशांत आर्य ने दीन दयाल उपाध्याय होमस्टे योजना , वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना और ट्रेकिंग ट्रेक्शन सेंटर योजना के लिए आए आवेदनों के लिए गठिन चयन समिति में गहन समीक्षा की। बुधवार को जिला सभागार में आयोजित बैठक में जिलाधिकारी प्रशांत आर्य ने होम स्टे योजना के तहत इको सेंसटिव जोन को ध्यान में रखने और पारंपरिक शैली में बनाए जाने वाले होमस्टे के प्रस्तावों को प्राथमिकता के आधार पर स्वीकृत करने के निर्देश दिये। समिति की बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने आपदा प्रभावित क्षेत्र धराली के निवासियों के आजी. विका के पुन: पटरी पर लाने के लिए श्वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजनाश के तहत वाहन मद में प्राप्त सभी आवेदनों को बिना किसी देरी के स्वीकृति प्रदान कर दी है। जिलाधिकारी ने कहा कि रोजगारपरक योजनाओं से आपदा प्रभावित किसी प्रकार वंचित न रहे । जिलाधिकारी ने टीटीसी के अंतर्गत 4 ट्रेकिंग सेंटरों में शामिल 25 गांव में से जो आवेदन प्राप्त हुए उनके सभी दस्तावेजों की जांच कर नियमानुसार ऋण प्रदान करने की कार्यवाही करने निर्देश दिए ।

समिति की बैठक में वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के अंतर्गत वाहन मद में 08, गैर वाहन मद में 01, दीन दयाल उपाध्याय होमस्टे योजना के अंतर्गत 10 और ट्रेकिंग ट्रेक्शन योजना में तहत प्राप्त कुल 45 आवेदनों की समीक्षा की गई।बैठक के दौरान सीडीओ जय भारत सिंह , डीटीडीओ केके जोशी सहित समस्त संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

कूड़ा डंपिंग जोन हटाने के लिए 55 वें दिन धरना जारी

उत्तरकाशी। तांबाखानी सुरंग के बाहर से कचरा डंपिंग जोन हटाने मांग को लेकर स्थानीय लोगों का जिला मुख्यालय पर धरना बीते 55 वें दिनों से जारी है। आंदोलनका. रियों ने मांग सुरंग के बाहर से कूड़ा हटने के बाद धरना समाप्त करने पर अडे हुए हैं। बता दें बाबा विश्वनाथ की नगरी की स्वच्छता, तांबाखानी सुरंग के बाहर से कूड़ा डंपिंग जोन हटाने की मांग को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता गोपीनाथ रावत के नेतृत्व में स्थानीय लोगों का धरना लगातार जारी है। कड़ाके की ठंड में श्रीदेव सुमन चौक पर चल रहे धरने को नगर के विभिन्न सामाजिक संगठन से जुड़े लोगों का खूब समर्थन मिल रहा है। बुधवार को दोपहर धरना स्थल पर प्रदर्शनकारियों ने नगर पालिका के खिलाफ नारेबाजी की। सामाजिक कार्यकर्ता गोपीनाथ कहा कि जिला प्रशासन और नगर पालिका प्रशासन की ओर से अभी तक कोई ठोस सुनवाई नहीं की गई है।

गोवंश उपेक्षा पाप नहीं, गंभीर अपराध दोषियों का हो सामाजिक बहिष्कार

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। गौवंश को सड़कों पर मरने के लिए छोड़ना अब सिर्फ अमानवीय नहीं, बल्कि गंभीर अपराध माना जाएगा। गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष राजेंद्र अंथवाल ने साफ शब्दों में कहा कि ऐसे लोगों का सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए।उत्तराखंड गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष राजेंद्र अंथवाल दो दिवसीय दौरे पर रुद्रप्रयाग पहुंचे। उन्होंने कहा कि गौवंश का उपयोग करने के बाद उन्हें बेसहारा छोड़ देना घोर पाप और गंभीर अपराध है।उन्होंने चेतावनी दी कि रात में शराब के नशे में गौवंश को कुचलने वाले वाहन चालकों पर सख्त कार्रवाई होगी!! पहाड़ों से कैंटर व ट्रकों में गौवंश तस्करी करने वालों पर पुलिस, प्रशासन और गौ सेवकों की संयुक्त निगरानी जारी है!!अंथवाल ने रुद्रप्रयाग जनपद में गौ रक्षा विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि घायल निराश्रित गौवंशों का उपचार, संरक्षण और संवर्धन अनुकरणीय है।

"गौवंश को सड़कों पर छोड़ना पाप भी है और अपराध भी। ऐसे लोगों को समाज में स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। प्रदेश सरकार निराश्रित गौवंशों के संरक्षण को प्राथमिकता दे रही है और दोषियों पर सखष्त कार्रवाई होगी। कहा,, भगवान नंदी के संरक्षण को लेकर गौ सेवा आयोग द्वारा ग्राम गौ सेवक योजना चलाई जा रही है। योजना के तहत इच्छुक ग्रामीण अपने गांव में पांच निराश्रित नंदी का संरक्षण करेंगे, जिसके बदले पशुपालन विभाग की ओर से 12 हजार रूपए की सहायता राशि दी जाएगी। इस योजना से जुड़कर युवा और महिलाएं अपने गांव में ही रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। गौ सेवा आयोग अध्यक्ष ने बताया कि पपड़ासू, रैंतोली और अगस्त्यमुनि स्थित गौशालाओं में लगभग 130 निराश्रित गौवंशों की देखरेख की जा रही है।

भाजपा सरकार हर मोर्चो पर विफल:डॉ. हरक रावत

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीनगर। कांग्रेस चुनाव प्रबंधन समिति के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ नेता डॉ. हरक सिंह रावत ने महिला अपराध, कानून व्यवस्था, बेरा. ेजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को उठाते हुए सरकार को हर मोर्चे पर विफल बताया। बुधवार को पत्रकारों से मुखातिब होते हुए पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. हरक सिंह रावत ने कहा कि भाजपा सरकार की कार्यशैली से प्रदेश की जनता में भारी आक्रोश है।

मुख्य विपक्षी दल होने के नाते कांग्रेस आम जनता के मुद्दों को लेकर सड़क से सदन तक संघर्ष करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश की कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है और हत्या, डकैती व महिला उत्पीड़न की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि इन घटनाओं में भाजपा से जुड़े चेहरों की संलिप्तता सामने आ रही है।

डॉ. रावत ने कहा कि देवभूमि उत्तराखंड में भ्रष्टाचार चरम पर है, बेरोजगार युवा सड़कों पर अपने हक के लिए आंदोलनरत हैं और किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में जंगली जानवरों के बढ़ते आतंक का मुद्दा उठाते हुए उन्होंने सरकार को संवेदनहीन बताया। इस अवसर पर डॉ. रावत ने श्रीनगर, पौड़ी और देवप्रयाग विधानसभा क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक कर राजभवन घेराव की रणनीति पर विस्तार से चर्चा की। कांग्रेस ने पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से अधिक से अधिक संख्या में जनता से संवाद स्थापित कर राजभवन कूच में शामिल होने का आह्वान किया। कहा कि 16 फरवरी को राजभवन घेराव के माध्यम से कांग्रेस भाजपा सरकार के खिलाफ निर्णायक लड़ाई का आगाज करेगी। इस मौके पर पौड़ी जिलाध्यक्ष विनोद नेगी, महानगर अध्यक्ष सूरज घिल्डियाल, सुंदर लाल मुयाल, लाल सिंह नेगी, सूरज नेगी, जगदीश भट्ट, अंजना भट्ट सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जिला कार्यालय में ई-ऑफिस संचालन पर प्रशिक्षण कार्यशाला

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। जनपद के सभी कार्यालयों में ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से पत्रावलियों का संच. ालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मंगलवार को जिला कार्यालय सभागार में प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ई-ऑफिस प्रणाली के प्रभावी उपयोग के संबंध में व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। प्रशिक्षण के दौरान डिजिटल पत्रावली निर्माण, अंकन, अग्रसारण, अनुमोदन, डिजिटल हस्ताक्षर तथा अभिलेखों के सुरक्षित संधारण की प्रक्रिया का चरणबद्ध प्रदर्शन किया गया। साथ ही फाइल ट्रैकिंग व्यवस्था और समयबद्ध निस्तारण की प्रणाली पर भी विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षण सत्र में उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए ई-ऑफिस पोर्टल के विभिन्न तकनीकी पहलुओं को सरल ढंग से समझाया गया। जिलाधिकारी प्रतीक जैन ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन की मंशा के अनुरूप अधिकतम कार्यालयी कार्य ई-ऑफिस प्रणाली के माध्यम से किए जाएं, ताकि कार्यप्रणाली में पारदर्शिता बढ़े, त्वरित निस्तारण सुनिश्चित हो तथा अभिलेखों का सुव्यवस्थित डिजिटल संधारण संभव हो सके।

इस अवसर पर उपजिलाधिकारी ऊखीमठ अनिल रावत, जिला युवा कल्याण अधिकारी वरद जोशी, जिला मत्स्य अधिकारी, जिला सेवायोजन अधिकारी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

न्याय पंचायत पंचाली में आयोजित हुआ बहुउद्देश्यीय शिविर

शाह टाइम्स संवाददाता

सतपुली । मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देशन पर संचालित जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार अभियान के तहत विकासखंड कल्जीखाल की न्याय पंचायत पंच. ाली में बहुउद्देश्यीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 25 शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें से अधिकांश का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया। वहीं 110 पात्र लाभार्थियों को विभिन्न सरक. ारी योजनाओं का लाभ दिया गया। शिविर में कुल 502 लोगों ने प्रतिभाग किया। अपर सचिव पशुपालन, मत्स्य एवं शहरी विकास संतोष बडोनी ने कहा कि जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार अभियान सरकार की एक जनहितकारी पहल है, जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की समस्याओं का समाधान उनके द्वार पर ही किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस अभियान से आमजन को सरकारी योजनाओं का लाभ सरलता से उपलब्ध हो रहा है।

उन्होंने कहा कि ऐसे शिविरों से जनता को विभिन्न विभागों की सेवाएं एक ही स्थान पर मिल रही हैं, जिससे समय और संसाधनों की बचत हो रही है। साथ ही सरकार की प्राथमिकता है कि हर व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचे और कोई भी पात्र व्यक्ति लाभ से वंचित न रहे । शिविर की अध्यक्षता डीएफओ सिविल एवं सोयम पवन नेगी ने की। उन्होंने स्थानीय लोगों की समस्याएं सुनते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों को शेष शिकायतों का शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिए। डीएफओ ने कहा कि ऐसे शिविरों के माध्यम से आम जनमानस को सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे मिल रहा है और समस्याओं के समाधान में भी तेजी आ रही है ।शिविर में स्वास्थ्य विभाग, समाज कल्याण विभाग, बाल विकास विभाग, कृषि, उद्यान, आयुर्वेदिक एवं यूनानी, पशुपालन, राजस्व सहित कुल 23 विभागों के स्टॉल लगाए गए, जहां लोगों को योजनाओं की जानकारी देने के साथ ही मौके पर आवेदन और समाधान भी किए गए ।इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख गीता देवी, ग्राम प्रधान पंचाली अशोक रावत, क्षेत्र पंचायत सदस्य कविता देवी व अंजू देवी, नोडल अधिकारी शिविर एवं जिला समाज कल्याण अधिकारी रोहित सिंह, खंड विकास अधिकारी चंद्र प्रकाश बलूनी, एडीओ पंचायत प्रदीप गुसाईं, मत्स्य निरीक्षक सौरभ जोशी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद रहे।

...क्या मां ही बनी थी बेटे के खून की प्यासी?

अर्जुन हत्याकांड में बहू ने सासू मां पर लगाया 'सुपारी' देने का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। राजधानी के पॉश इलाके डालनवाला में हुए सनसनीखेज अर्जुन शर्मा हत्याकांड में नया मोड़ आ गया है। मृतक की पत्नी अभिलाषा शर्मा ने अपनी ही सास और कुछ रसूखदार लोगों पर पति की हत्या की साजिश रचने का गंभीर आरोप लगाया है। पुलिस ने मृतक की पत्नी के द्वारा दी गई तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है।डालनवाला कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए मृतक की पत्नी अभिलाषा शर्मा ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उनकी सास बीना शर्मा का विनोद उनियाल, संगीता उनियाल और डॉ. अजय खन्ना (एस.के. मेमोरियल हॉस्पिटल) के साथ पैसों का बड़ा लेन-देन था। अर्जुन शर्मा इस लेन-देन का विरोध कर रहे थे,

पारिवारिक विवाद या कुछ और?

पुलिस की प्रारंभिक जांच में एक चौंकाने वाला तथ्य सामने आया है। बताया जा रहा है कि मृतक का अपने परिवार के साथ व्यवसाय को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था। विवाद इतना गहरा था कि मृतक की माता ने स्वयं माननीय उच्च न्यायालय से अपने बेटे (मृतक) से जान का खतरा बताते हुए सुरक्षा की मांग की थी। पुलिस अब इस पारिवारिक रंजिश और श्कॉन्टैक्ट किलिंगश के पहलुओं को जोड़कर जांच कर रही है। घटना के बाद पुलिस मुख्यालय से लेकर कोतवाली तक हड़कंप मचा है। एसएसपी अजय सिंह ने टीमों का गठन कर पूरे जनपद में श्सघन चेकिंगश का आदेश दिया है, लेकिन जनता के मन में कुछ सवाल चल रहे हैं।

जिसके कारण माँ-बेटे में लंबे समय से विवाद चल रहा था। यह मामला न्यायालय में भी लंबित है। पत्नी का सीधा आरोप है कि इसी विवाद के चलते उक्त लोगों ने मिलकर उनके पति की हत्या कराई है। वहीं दूसरी और इस हत्याकांड को लेकर पुलिस के आला अधिकारी जल्द खुलासे की बात भी कर रहे हैं। राजधानी में बेखौफ घूमते अपराधियों और दिनदहाड़े होती हत्याओं ने यह साबित कर दिया है कि देहरादून पुलिस का इकबाल अब अपराधियों के मन में खत्म हो चुका है, जिससे आम नागरिक खुद को असुरक्षित महसूस कर रहा है।

कहां गई 'स्मार्ट सिटी' की निगरानी?

शहर के सबसे व्यस्त और हाई-प्रोफाइल इलाके में बदमाश हत्या करके आसानी से फरार हो गए। क्या सीसीटीवी कैमरों का जाल सिर्फ चालान काटने के लिए है।पुलिस का दावा है कि जनपद में सघन चेकिंग चल रही है, फिर सरेआम हथियार लहराते बदमाश शहर की सीमाओं से बाहर निकलने में कैसे कामयाब हो रहे हैं।जब पहले से ही पारिवारिक विवाद और जान के खतरे की बात माननीय न्यायालय तक पहुँच चुकी थी, तो क्या स्थानीय इंटेलिजेंस को इसकी भनक नहीं थी। अब इस हत्याकांड को गंभीरता से लेते हुए पुलिस में अलग-अलग टीमें गठित की गई हैं। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। पुलिस हर पहलू पर गहनता से जांच कर रही है।

पिछली घटनाओं से नहीं लिया सबक: देहरादून में पिछले कुछ समय में अपराधी घटनाएं एवं हत्याओं के सिलसिले में इजाफा हुआ है। हर बार वारदात के बाद पुलिस नाकाबंदी का श्रस्मश अदायगी तो करती है, लेकिन अपराधियों के बुलंद हौसले यह बता रहे हैं कि खाकी का इकबाल खत्म होता जा रहा है। अब देखना यह है कि राजधानी की पुलिस इन स्कूटी सवार हत्यारों को कब तक सलाखों के पीछे पहुँचा पाती है।

अर्जुन हत्याकांड में पुलिस ने कई को लिया हिरासत में

डालनवाला क्षेत्र में हुई हत्या की घटना के संबंध में मृतक अर्जुन शर्मा की पत्नी अभिलाषा शर्मा पत्नी स्व0 अर्जुन शर्मा निवासी 41/1 बसन्त विहार देहरादून द्वारा अपनी सास बीना शर्मा का विनोद उनियाल, संगीता उनियाल पत्नी विनोद उनियाल, डॉ0 अजय खन्ना, एस०के० मैमोरियल हास्पिटल के साथ पैसों के लेने देन होने के कारण उनके पति अर्जुन शर्मा द्वारा इस बात का विरोध करने पर सास द्वारा ही उसकी हत्या करने का आरोप लगाते हुए कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया है। मुकदमे में मृतक का की पत्नी ने कई लोगों को नामजद किया है।वहीं दूसरी और पुलिस ने इस हत्याकांड को लेकर कई लोगों को हिरासत में लिया है। जल्द ही इस हत्याकांड का पुलिस खुलासा कर सकती है

दून में बढ़ती आपराधिक घटनाओं को लेकर सौंपा ज्ञापन

■ संयुक्त प्रतिनिधिमंडल ने जनपद में बिगड़ती कानून व्यवस्था पर जताई गहरी चिंता

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। जनपद में लगातार बढ़ रही आपराधिक घटनाओं को लेकर विभिन्न संगठनों में भारी रोष व्याप्त है। बुधवार को लगभग 10:30 बजे तिब्बती बाजार में हुई सरेआम हत्या तथा एक दिन पूर्व डालनवाला स्थित दून इंटरनेशनल स्कूल में छात्रा के अपहरण के प्रयास की घटना के विरोध में एक संयुक्त प्रतिनिधिमंडल ने जिलाधिकारी देहरादून को ज्ञापन सौंपा।

डीएम की अनुपस्थिति में प्रतिनिधिमंडल ने उपजिलाधिकारी सदर हरगिरी को ज्ञापन सौंपते हुए जनपद में बिगड़ती कानून व्यवस्था पर गहरी चिंता व्यक्त की। ज्ञापन में ऋषिकेश, मच्छी बाजार और तिब्बती बाजार में हुई हत्याओं सहित महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा की घटनाओं को गंभीर बताते हुए प्रशासन से तत्काल कठोर कदम उठाने की मांग की गई। प्रतिनिधियों ने आरोप लगाया कि अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और पुलिस प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो रहे हैं। ज्ञापन सौंपने वालों में सीपीआईएम के सचिव अनन्त आकाश, उत्तराखंड आंदोलनकारी संयुक्त परिषद के संरक्षक नवनीत गुंसाई, प्रवक्ता चिंतन सकलानी, यूकेडी की वरिष्ठ नेत्री प्रमिला रावत, बीजीवीएस की स्वाति नेगी, नेताजी संघर्ष समिति के अध्यक्ष प्रभात डंडरियाल, जिलाध्यक्ष सुरेश कुमार, राजेश शर्मा सहित बड़ी संख्या में सामाजिक व राजनीतिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल रहे।

आईजी ने संभाला मोर्चा, अपराधियों की जल्द होगी गिरफ्तारी

■ लापरवाह अफसरों की तय होगी जवाबदेही
■ सीओ स्तर के अधिकारियों को दिए कड़े निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। राजधानी के पॉश इलाके डालनवाला में हुई सनसनीखेज गोलीबारी की घटना के बाद पुलिस महकमा पूरी तरह से अलर्ट मोड पर है। बुधवार को पुलिस महानिरीक्षक गढ़वाल परिक्षेत्र राजीव स्वरूप ने खुद घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया और अधिकारियों को स्पष्ट चेतावनी दी कि अपराध के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए।

आईजी गढ़वाल ने बुधवार को डालनवाला पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने भौतिक और तकनीकी साक्ष्यों का अवलोकन करते हुए अब तक की पुलिस तफ्तीश की समीक्षा की। आईजी ने एसएसपी देहरादून को कड़े निर्देश दिए कि आरोपियों की पहचान के लिए सर्विलांस और तकनीकी संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाए। उन्होंने कहा, ष्अपराधी किसी भी सूरत में बचने नहीं चाहिए, विशेष टीमें गठित कर उनकी जल्द से जल्द गिरफ्तारी सुनिश्चित करें।

सीओ स्तर के अधिकारियों की लगी क्लास

घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए आईजी राजीव स्वरूप ने परिक्षेत्रीय कार्यालय में जनपद के सभी क्षेत्राधिकारियों के साथ आपात बैठक की। बैठक में उन्होंने हालिया अपराधों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों की क्लास लगाई। उन्होंने स्पष्ट किया कि अब केवल थाना या चौकी स्तर पर ही नहीं, बल्कि क्षेत्राधिकारियों की भी जवाबदेही तय की जाएगी।

लापरवाही मिली, तो नपेंगे अधिकारी

आईजी ने कड़े शब्दों में कहा कि यदि भविष्य में किसी भी क्षेत्र में इस तरह की गंभीर आपराधिक घटना की पुनरावृत्ति होती है, तो संबंधित थानाध्यक्ष और चौकी प्रभारी के साथ-साथ क्षेत्राधिकारी के विरुद्ध भी कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने जनता में सुरक्षा की भावना पैदा करने और अपराधियों में खौफ पैदा करने के लिए पुलिस को पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम करने को कहा है।

दून जिले में दो हफ्ते के अंदर चार हत्याएं

तिब्बती मार्केट में 40 साल के व्यक्ति की हत्या के साथ देहरादून जिले में दो हफ्ते के अंदर ये चौथा हत्याकांड है।इनमें तीन हत्याएं महिलाओं की हुई हैं। 29 जनवरी को विकासनगर इलाके में छात्रा की हत्या हुई थी।इसके बाद 31 जनवरी को ऋषिकेश में महिला की गोली मारकर हत्या की गई थी। फिर 2 फरवरी को देहरादन के मच्छी बाजार में गुंजन नाम की युवती की हत्या कर दी गई थी। इन घटनाओं ने राजधानी देहरादून में पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था को खुली चुनौती दी है।

कानून व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए 'मास्टर प्लान'

आईजी ने बैठक के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबंद करने के लिए सभी सीओ अपने क्षेत्रों में नियमित भ्रमण करेंगे और पुलिस बल की उपस्थिति सड़क पर नजर आनी चाहिए।जमीन से जुड़े विवाद या आपसी रंजिश के मामलों को प्राथमिकता के आधार पर सुलझाया जाए ताकि वे बड़े अपराध का रूप न लें। संदिग्धों की धरपकड़ के लिए शहर के विभिन्न हिस्सों में नियमित और आकस्मिक (रैंडम) चेकिंग की जाएगी।

एक नजर ....

मुख्यमंत्री एकल महिला स्वरोजगार योजना की शुरुआत ऐतिहासिक कदम: रुचि भट्ट

देहरादून। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष रुचि भट्ट ने मुख्यमंत्री एकल महिला स्वरोजगार योजना की शुरुआत का स्वागत किया है। जिसके अंतर्गत चयनित 1024 महिलाओं को स्वरोजगार कर आत्मनिर्भर बनाने का यह कदम ऐतिहासिक होगा। उन्होंने कहा कि कल 6 जिलों की 484 महिलाओं के बैंक खातों में सीधे करीब 3 करोड़ 45 लाख रुपये की धनराशि भेजी गयी है। बाकी के जिलों में चयनित 540 महिलाओं को भी चार करोड़ रुपये की धनराशि इसी माह भेज दी जाएगी। इस योजना में एकल महिलाओं को 75% सब्सिडी दी जा रही है। इसमें स्वरोजगार की कुल लागत का केवल 25 फीसदी महिला की तरफ से लगेगा, बाकी की धनराशि सरकार अनुदान देगी। रुचि भट्ट ने कहा कि यह योजना सही मायनों में एकल महिलाओं को आत्मनिर्भर बना कर अपने पैरों पर खड़ा करेगी, उनको समाज में सही सम्मान, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता दिलाएगी

मैगी के भारत में 50 साल पूरे करने पर जारी स्मारक डाक टिकट

देहरादून। नेस्ले इंडिया ने भारत में मैगी के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर एक विशेष उपलब्धि का जश्न मनाते हुए एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। यह डाक टिकट नितिन भदौरिया, जिला मजिस्ट्रेट, उधम सिंह नगर, तथा अमित दुग्गल, फैक्ट्री मैनेजर, नेस्ले इंडिया के पंतनगर कारखाने द्वारा संयुक्त रूप से अनावरण किया गया। उन्होंने इस क्षेत्र में अनावरण समारोह का नेतृत्व किया। यह डाक टिकट मैगी की उस विकास यात्रा को समर्पित है, जिसमें ब्रांड ने समय से आगे रहते हुए एक अत्यंत लोकप्रिय श्रेणी के पर्याय के रूप में अपनी पहचान बनाई और पीढ़ियों से लोगों को एक साथ लाने का कार्य निरंतर किया।

एमडीडीए ने 25 बीघा अवैध प्लॉटिंग की ध्वस्त

■ प्राधिकरण क्षेत्र में अवैध निर्माण पर की सीलिंग की कार्रवाई

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। नियोजित विकास की दिशा में प्रतिबद्ध मसूरी-देहरादून विकास प्राधिकरण (एमडीडीए) द्वारा अवैध प्लॉटिंग एवं अनधिकृत निर्माणों के विरुद्ध व्यापक और निरंतर अभियान संचालित किया जा रहा है। बुधवार को विभिन्न स्थानों पर ध्वस्तीकरण एवं सीलिंग की प्रभावी कार्रवाई की गई।

रामपुर शंकरपुर, सेलाकुई में लगभग 10 बीघा अवैध प्लॉटिंग ध्वस्त: प्राधिकरण को प्राप्त शिकायतों एवं क्षेत्रीय निरीक्षण के उपरांत यह पाया गया कि जावेद, डेविड एवं अन्य व्यक्तियों द्वारा रामपुर शंकरपुर, सेलाकुई, देहरादून में लगभग 10 बीघा भूमि पर बिना मानचित्र स्वीकृति एवं विधिक अनुमति के अवैध रूप से प्लॉटिंग की जा रही थी। संबंधित व्यक्तियों को नियमानुसार पूर्व में नोटिस जारी कर कार्य तत्काल बंद करने के निर्देश दिए गए थे। निर्देशों की अवहेलना किए जाने पर प्राधिकरण की प्रवर्तन टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर अवैध रूप से विकसित की गई सड़कों, प्लॉटों के सीमांकन, मिट्टी समतलीकरण एवं अन्य संरचनात्मक गतिविधियों का ध्वस्तीकरण किया गया। कार्रवाई के दौरान सहायक अभियंता शशांक सक्सेना, अवर अभियंता सिद्धार्थ सेमवाल, सुपरवाइजर एवं पुलिस बल मौके पर उपस्थित रहे। संपूर्ण कार्रवाई विधिसम्मत एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराई गई।

ढकरानी, हरबर्टपुर में 10-15 बीघा अवैध प्लॉटिंग पर सख्त कार्यवाही: इसी क्रम में पांवटा रोड स्थित ढकरानी हॉस्पिटल के पीछे, हरबर्टपुर, देहरादून क्षेत्र में अतुल विकास एवं त्यागी द्वारा लगभग 10 से 15 बीघा भूमि पर अनधिकृत प्लॉटिंग किए जाने की सूचना प्राप्त हुई। स्थलीय निरीक्षण में अवैध विकास की पुष्टि होने पर संबंधित पक्षों को विधिक नोटिस निर्गत किए गए थे। नोटिस के बावजूद अवैध गतिविधियां जारी रहने पर प्राधिकरण की संयुक्त टीम द्वारा मौके पर पहुंचकर अवैध मार्ग निर्माण, प्लॉटों के चिन्हांकन एवं अन्य विकास कार्यों को ध्वस्त किया गया। कार्रवाई के दौरान प्राधिकरण के अधिकारीगण, तकनीकी कार्मिक एवं पर्याप्त पुलिस बल तैनात रहा।

सेवला कला में अवैध निर्माण किया सील: चन्द्र परिसर, सेवला कला, देहरादून में नितिन चौहान द्वारा बिना स्वीकृत मानचित्र के निर्माण कार्य किए जाने की पुष्टि होने पर संयुक्त सचिव श्री गौरव चटवाल के आदेशों के अनुपालन में उक्त भवन पर सीलिंग की कार्रवाई की गई। इस दौरान सहायक अभियंता विजय सिंह रावत, अवर अभियंता अभिजीत सिंह थलवाल, सुपरवाइजर तथा पुलिस बल मौके पर उपस्थित रहे।

नियोजित विकास ही सुरक्षित भविष्य की गारंटी: तिवारी

उपाध्यक्ष बंशीधर तिवारी ने कहा कि मसूरी-देहरादून विकास प्राधिकरण सुनियोजित एवं संतुलित विकास के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अवैध प्लॉटिंग और अनधिकृत निर्माण न केवल शहरी व्यवस्था को प्रभावित करते हैं, बल्कि आमजन की गाढ़ी कमाई को भी जोखिम में डालते हैं। प्राधिकरण द्वारा ऐसे मामलों में किसी भी प्रकार की शिथिलता नहीं बरती जाएगी। उन्होंने कहा कि बिना स्वीकृत मानचित्र एवं वैधानिक अनुमति के किए जा रहे निर्माणों पर कठोर कार्रवाई की जाएगी और आवश्यकता पड़ने पर ध्वस्तीकरण एवं सीलिंग की प्रक्रिया अपनाई जाएगी। उन्होंने आम नागरिकों से अपील की कि भूखंड खरीदने से पूर्व उसकी विधिक स्थिति की जांच अवश्य करें तथा अवैध कॉलोनियों में निवेश से बचें। नियोजित विकास ही सुरक्षित भविष्य की गारंटी है।

वारदात के बाद हर अपराधी सलाखों के पीछे चुस्त कानून व्यवस्था का प्रमाण: चौहान

■ किसी भी सूरत मे नही बख्शे जायेंगे अपराधी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने कहा कि सरकार जन सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी अपराधी को कानून व्यवस्था से खिलवाड़ की इजाजत नही दी जायेगी। उन्हे कानून के दायरे मे सख्त सजा दिलाने के लिए कार्य किया जायेगा। अब तक किसी बारदात को अंजाम देने के बाद अपराधी सलाखो के पीछे पहुंचे है यह चुस्त कानून व्यवस्था का प्रमाण है।

पार्टी मुख्यालय मे पत्रकारों के सवालों पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि कुछ दुखद घटनाएं इस दौरान सामने आई है, लेकिन अब तक हर बरदात के बाद अपराधी सलाखों के पीछे हैं और आज राजधानी मे हुए हत्याकांड का भी पुलिस जल्दी ही खुलासा करेगी। उन्होंने कहा कि सीएम धामी उच्च स्तरीय बैठक मे अधिकारियों को इस बारे मे कड़े निर्देश दे चुके है। उन्होंने कहा कि मच्छी बाजार की घटना का आरोपी सलाखों के पीछे है और उसमे पुलिस चार्ज शीट तैयार कर चुकी है। वहीं ऋषिकेश मे महिला की हत्या के मामले मे भी आरोपी को सलाखों के पीछे भेजकर पुलिस जांच मे जुटी है। राजधानी मे आज हुई घटना को पारिवारिक विवाद से जोड़कर देखा जा रहा है और पुलिस कड़ी जांच मे जुटी है।

अधिवक्ताओं का नौ सूत्रीय मांग को लेकर कार्य बहिष्कार

हल्द्वानी। अपनी नौ सूत्रीय मांगों को लेकर अधिवक्ताओं ने बुधवार को कार्य बहिष्कार कर दिया। इस दौरान न तो जजी कोर्ट और न ही एसडीएम कोर्ट में कोई कार्य हुआ। अधिवकताओं ने पहले आग्रह, सांकेतिक प्रदर्शन और लिखित शिकायत दी थी, लेकिन जब उनका समाधान नहीं हुआ, तो उन्होंने यह कदम उठाया। अधिवक्ताओं ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं, तो 23 फरवरी को प्रदेश की अन्य बार एसोसिएशन को शामिल कर वे अनिश्चितकालीन प्रदर्शन करेंगे। हल्द्वानी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष किशोर पंत ने बताया कि नैनीताल जिले के राजस्व न्यायालयों में हो रही अनियमितताओं को लेकर यह हड़ताल की गई है। कई बार न्यायिक अधिकारियों का सहयोग नहीं मिलता, और जिले के कुछ न्यायिक अधिकारियों का व्यवहार सहज और गरिमापूर्ण नहीं है।

सार्वजनिक सूचना

मेरे पुत्रों के जन्म प्रमाण पत्रों B20110404483 और 06832 में उनके नाम गलती से **शशांक** और **काव्यांश** दर्ज हो गए हैं, जबकि सही नाम क्रमशः **काव्य कुमार** और **देवांश कुमार** हैं। इसे उनके जन्म प्रमाण पत्रों में अपडेट करना न्यायोचित है।

अरुण कुमार पुत्र **रणवीर सिंह थापा**, निवासी हरिपुर, सेलाकुई, देहरादून।

सिटी फॉरेस्ट पार्क की भांति सहस्त्रधारा ट्रेंचिंग ग्राउण्ड में बनेगा आधुनिक पार्क

■ मुख्य सचिव के समक्ष किया गया पार्क के लेआउट का प्रस्तुतिकरण

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यसचिव आनंद वर्द्धन ने सहस्त्रधारा रोड़ स्थित ट्रेंचिंग ग्राउण्ड को आधुनिक सुविधाओं युक्त पार्क के रूप में विकसित करने के निर्देश एमडीडीए को दिये हैं। उन्होंने इस पार्क को सिटी पार्क की भांति विकसित करने को भी कहा है।

बुधवार को सचिवालय में सहस्त्रधारा ट्रेंचिंग ग्राउण्ड पार्क के निर्माण से संबंधित प्रस्तुतिकरण का अवलोकन करते हुए मुख्य सचिव ने नगर निगम आयुक्त नमामि बंसल को ट्रेंचिंग ग्राउण्ड से यथाशीघ्र कचरे के निस्तारण के भी निर्देश दिये। बैठक में सचिव शहरी विकास नितेश झा भी उपस्थित थे। सीएस ने कहा कि शहर की बढ़ती आबादी तथा बढ़ते यातायात दबाव आदि के मध्य शहर में आधुनिक पार्कों की नितांत जरूरत है। उन्होंने निर्देश दिये कि पार्क में ओपन जिम, जॉगिंग ट्रेक, साईकिल ट्रेक, मल्टीपरपज हॉल, बॉलीबाल व बैडमिंटन कोर्ट, थियेटर, मेडिटेशन आदि की व्यवस्था हो। ग्राउण्ड वाटर को रिचार्ज करने के लिए वाटर फाउण्टेन आदि की भी इसमें व्यवस्था रखी जाए, इसमें प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का भी सहयोग लिया जाए। मुख्यसचिव ने उपाध्यक्ष एमडीडीए बंशीधर तिवारी को पार्क के लेआउट को शीघ्र अंतिम रूप देते हुए डीपीआर तैयार करने के भी निर्देश दिये।

यूजेवीएन लिमिटेड
मुख्यालय 'उज्जवल' महारानी बाग, जी0एम0एस0 रोड, देहरादून-248006
दूरभाष संख्या: 0135-2763808, फैक्स नं0 0135-2763507
CIN No. U4101UR2001SGC025866 Website: www.ujvnl.com

पत्रांक: 118 **निविदा सूचना** दिनांक 11.02.2026

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता (वि0 एवं यॉ0) व्यासी डैम जुड्डो, डाकपत्थर यूजेवीएन लिमिटेड, द्वारा इच्छुक निविदादाताओं से निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है:
1. निविदा संख्या-13/ अधि0अभि0(वि0 एवं यॉ0)/व्यासी डैम/25-26 एवं 14/ अधि0अभि0(वि0 एवं यॉ0)/व्यासी डैम/25-26
कार्य का नाम -1. व्यासी बाँध, जुड्डो, देहरादून में 60 टन क्षमता वाली गैन्ट्री क्रेन की मरम्मत और ओवरहॉलिंग का कार्य।
2. व्यासी बाँध, जुड्डो, देहरादून स्थित मीटिंग रूम का मोडिफेशन एवं अपग्रेडेशन
अनुमानित लागत- 1. रु0 18,65,000.00 + जी0एस0टी0 अतिरिक्त, रु0 23,87,068.00 + जी0एस0टी0 अतिरिक्त
वेबसाईट पर निविदा प्रपत्र की उपलब्धता की तिथि-12/02/2026 15:00 बजे से।
निविदा जमा करने की अन्तिम तिथि-05/03/2026 16:00 बजे तक।
अन्य जानकारी हेतु कृपया www.ujvnl.com देखें। अधिशासी अभियन्ता (वि0 एवं यॉ0)
"बिजली के दुरूपयोग से बचें"

16 फरवरी को लोक भवन घेराव की तैयारियों में जुटी कांग्रेस

■ वरिष्ठ नेताओं ने की बैठक, रणनीति बनाई

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। अखिल भारतीय कांग्रेस के आह्वान पर 16 फरवरी 2026 को प्रस्तावित 'लोकभवन घेराव' कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर प्रदेश कांग्रेस ने कमर कस ली है। बुधवार को प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल की अध्यक्षता में राजीव भवन स्थित कार्यालय में वरिष्ठ नेताओं की बैठक आयोजित हुई, जिसमें कार्यक्रम की रूपरेखा और रणनीति पर चर्चा की गई।

निवर्तमान मीडिया प्रभारी राजीव महर्षि ने बताया कि जनहित के मुद्दों को लेकर होने वाले इस प्रदर्शन में विधायक, पूर्व विधायक, एआईसीसी व पीसीसी सदस्य, विभिन्न प्रकोष्ठों के पदाधिकारी और प्रदेशभर से हजारों कार्यकर्ता शामिल होंगे। कांग्रेस ने राज्य में बिगड़ती कानून व्यवस्था, महिलाओं पर बढ़ते अपराध और बेरोजगारी को प्रमुख मुद्दा बनाया है। प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने भाजपा सरकार पर जनविरोधी नीतियों का आरोप लगाते हुए कहा कि प्रदेश की जनता मौजूदा सरकार से त्रस्त है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से 16 फरवरी को बड़ी संख्या में राजभवन घेराव में शामिल होने का आह्वान किया। बैठक में प्रदेश महामंत्री राजेंद्र भंडारी, राजेंद्र शाह, डॉ. जसविंदर सिंह गोगी, डॉ. प्रतिमा सिंह समेत कई नेता मौजूद रहे।

कांग्रेस ने सरकार पर लगाया 76 हेक्टेयर भूमि निजी क्षेत्र को सौंपने का आरोप

■ ऊर्जा सुरक्षा बेचने की साजिश, सरकार जनता के भविष्य से कर रही खिलवाड़: आर्य

शाह टाइम्स प्रमुख संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की जल विद्युत परियोजनाओं से जुड़ी बहुमूल्य भूमि को निजी क्षेत्र को सौंपने के सरकार के निर्णय पर नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा जल विद्युत परियोजनाओं की रणनीतिक भूमि को उत्तराखंड अवसंरचना एवं औद्योगिक विकास बोर्ड के माध्यम से निजी हाथों में देने का फैसला प्रदेश की ऊर्जा सुरक्षा, राज्यहित और राष्ट्रीय हितों के खिलाफ खतरनाक और अल्पदृष्टि भरा कदम है।

आर्य ने आरोप लगाया कि यह निर्णय उत्तराखंड की ऊर्जा आत्मनिर्भरता को कमजोर करने और सार्वजनिक संपत्तियों को निजी मुनाफाखोरों के हवाले करने की सुनियोजित साजिश प्रतीत होता है।

उन्होंने बताया कि शासनादेश 3 दिसंबर 2025 के तहत उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड की डाकपत्थर एवं ढालीपुर स्थित परियोजनाओं से संबंधित 76.7348 हेक्टेयर भूमि को उत्तराखंड अवसंरचना एवं औद्योगिक विकास बोर्ड को हस्तांतरित करने के निर्देश जारी किए गए हैं। जिला प्रशासन को भूमि का दाखिल-खारिज, सीमांकन और अधिग्रहण करने के आदेश देना इस बात का प्रमाण है कि सरकार इस फैसले को जनभावनाओं की अनदेखी करते हुए जबरन लागू करने पर आमादा है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि यह भूमि कोई सामान्य संपत्ति नहीं है, बल्कि अविभाजित उत्तर प्रदेश के समय से उत्तराखंड की जल विद्युत परियोजनाओं के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए संरक्षित की गई रणनीतिक परिसंपत्ति है। इसी क्षेत्र से यमुना चरण-एक, यमुना चरण-दो, व्यासी, लखवाड़, किशाऊ और टौंस जैसी अत्यंत महत्वपूर्ण परियोजनाओं का संचालन और निर्माण जुड़ा हुआ है।

उत्तराखण्ड पॉवर कारपोरेशन लिमिटेड
(उत्तराखण्ड सरकार का उपक्रम)
विक्टोरिया क्रास विजेता गबर सिंह ऊर्जा भवन, कांवली रोड, देहरादून-248001, दूरभाष : 0135-2763672-75, फैक्स 0135-2760289, कारपोरेट आईडेन्टीटी संख्या : U40109UP2001SGC025867/2358, वेबसाईट www.uktenders.gov.in

ई-निविदा सूचना
निविदा विशिष्टीकरण संख्या सीसीपी-II/20/2025-2026

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि0, देहरादून निम्नलिखित ई-निविदा आमंत्रित करता है जिसका विवरण निम्नवत है :-

क्र0 सं0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रू. करोड़)	विगत तीन वित्तीय वर्षो का औसत टर्न ओवर (रू. करोड़)	धरोहर राशि (रू. लाख)	निविदा प्रपत्र का मूल्य जी0एस0टी0 सहित (रू.)	निविदा से पूर्व आयोजित सभा की तिथि एवं समय	निविदा क्रय करने एवं निविदा प्रपत्र आनलाईन एवं आफलाईन जमा करने की अन्तिम तिथि एवं समय	आनलाईन एवं आफ लाईन निविदा भाग-एक खुलने की तिथि एवं समय
1	पावर परचेज के क्लाउड आधारित स्वचालित मासिक बीजक सत्यापन हेतु सॉफ्टवेयर/एप्लिकेशन के डिजाइन, डेवलमेंट एवं कार्यान्वियन हेतु एक वर्ष के लिए एजेंसी की नियुक्ति एवं पावर परचेज के पिछले पांच वर्षों के बीजकों का सत्यापन एवं प्रमाणीकरण।	2.48	4.00	4.96	11 800	21.02.2026 को 12:30 बजे	27.02.2026 को 17:00 बजे तक	28.02.2026 को 15:30 बजे

अन्य विवरण के लिए कृपया हमारी वेबसाईट www.uktenders.gov.in को देखें। अधीक्षण अभियन्ता
No.: 122/EE(CM)/UPCL/A-2 Dated : 11.02.2026 कारपोरेट (अनुबन्ध एवं क्रय-द्वितीय)
राष्ट्र हित में बिजली बचायें, बिजली बचाने हेतु एल.ई.डी. का बल्ब प्रयोग करें।
(टोल फ्री नं. 1800 419 0405) विद्युत बिलों के 24x7 ऑनलाइन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जाएँ।
(विद्युत चोरी की सूचना टोल फ्री नं. 1800 180 4185/फैक्स संख्या 0135-2760911 पर दें।)

कुंभ मेले को सकुशल संपन्न कराना प्राथमिकता : सोनिका सिंह

प्रेस क्लब में संवाद कार्यक्रम में कुंभ मेलाधिकारी ने दी योजनाओं की जानकारी

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। प्रेस क्लब में संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथी कुंभ मेलाधिकारी सोनिका सिंह ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रेस क्लब अध्यक्ष धर्मेंद्र चौधरी व महामंत्री दीपक मिश्रा ने संवाद कार्यक्रम में पधारने पर कुंभ मेलाधिकारी सोनिका सिंह का आभार जताते हुए कहा कि सोनिका सिंह कुशल प्रशासक हैं। प्रसिद्ध किंग्स कालेज लंदन से कॉमनवैल्थ गुरूकुल फेलोशिप का सम्मान मिला है। वर्ष 2019 में राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरूस्कार, 2021 में स्कॉच अवार्ड एवं 2022 में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से भी सम्मान मिला है। उनके कुशल नेतृत्व में कुंभ मेला भव्य रूप से संपन्न होगा। कुंभ मेला अधिकारी सोनिका सिंह ने कहा कि कुंभ मेला 2027 के स्थाई प्रकृति के सभी कार्य पूरी गुणवत्ता के साथ समय पर पूरे कर लिए जाएंगे। कार्यो की गुणवत्ता की थर्ड पार्टी जांच आईआईटी रुड़की व अन्य जांच एजेंसियां करेंगी। मेला अधिकारी सोनिका सिंह ने कहा कि कुंभ मेले को सकुशल संपन्न कराना उनकी प्राथमिकता है। संत समाज और स्थानीय लोगों के सहयोग से कुंभ मेला भव्य और दिव्य स्वरूप में संपन्न होगा। कुंभ मेले के प्रस्तावित 1224 करोड़ के बजट से स्थाई और अस्थाई प्रकृति के कार्य कराए जाएंगे। जिसमें स्थाई प्रकृति के कार्यो पर विशेष फोकस किया जा रहा है। 219 करोड़ की लागत से स्थाई प्रकृति के 35 कार्य गतिमान हैं। अस्थाई प्रकृति के कार्यो के प्रस्ताव शासन को प्रेषित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि कुंभ मेले में स्नान के लिए आने वाले श्रद्धालु अच्छी यादें और अनुभव लेकर लौटें, इसके लिए स्वच्छता और सुन्दरता पर खास ध्यान दिया जा रहा है। स्नान के लिए भारी संख्या में श्रद्धालुओं के आने की संभावना को देखते हुए नए घाट बनाए जा रहे हैं। सीवर, सड़क, पुल, पेयजल, बिजली की व्यवस्था आदि का निर्माण किया जा रहा है। शहर में दो स्थाई पार्किंग बनाने के साथ शहर के बाहरी इलाकों में भी पार्किंग की व्यवस्था की जा रही है। स्नान के लिए आने वाले बुजुर्गो की सुविधा के लिए कार्य योजना तैयार की जा रही है। मेला बजट से ज्वालापुर में सड़क और पुल निर्माण आदि कराए जा रहे हैं। हरकी पैड़ी पर कांगड़ा घाट के विस्तार को लेकर उन्होंने कहा कि इसकी प्रक्रिया चल रही है। भूमि अधि ग्रहण के लिए शासन को पत्रावली भेजी गई है। शासन से स्वीकृति मिलने पर आगे की कार्यवाही शुरू की जाएगी। इसके अलावा सीसीआर टावर-2 के निर्माण के लिए भी शासन को प्रस्ताव भेजा गया है। शासन से स्वीकृति प्राप्त होते ही निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि रिकॉर्ड समय में सभी कार्यों को पूरा करना चुनौती है। लेकिन मेला अधिष्ठान में लोक निर्माण विभाग और सिंचाई विभाग के खंड स्थापित होने से सभी चुनौतियों पर पार पा लिया जाएगा। प्रेस क्लब अध्यक्ष धर्मेद्र चौधरी, महामंत्री दीपक मिश्रा, वरिष्ठ पत्रकार आदेश त्यागी, रजनीकांत शुक्ला, संजय आर्य, रामचंद्र कनौजिया, ललितेंद्र नाथ, शिवा अग्रवाल, अविक्षित रमन ने पुष्प

गुच्छ और स्मृति चिन्ह भेंट कर मेलाधिकारी का स्वागत किया। संवाद के दौरान पत्रकारों ने मेलाधिकारी को कई सुझाव भी दिए। जिस पर उन्होंने सकारात्मक कदम उठाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में आदेश त्यागी, रजनीकांत शुक्ला, विजेंद्र हर्ष, अविक्षित रमन, संजय आर्य, गुलशन नैयर, बालकृष्ण शास्त्री, श्रवण झा, रामचंद्र कनौजिया, डा. हिमांशु द्विवेदी, राजकुमार, जोगिंदर मावी, सुरेंद्र शर्मा, संदीप शर्मा, कुमार दुष्यंत, लव शर्मा, आशीष मिश्रा, ललितेंद्र नाथ, कुमकुम शर्मा, प्रतिभा वर्मा, अश्वनी अरोड़ा, अहसान अंसारी, महताब आलम, सुभाष कपिल, अमित शर्मा, तनवीर अली, राहुल वर्मा, नवीन चौहान, रूपेश वालिया, राव रियासत पुंडीर, सूर्यकांत बेलवाल, महेश पारीक, महावीर नेगी, रामेश्वर गौड़, मुदित अग्रवाल, शैलेंद्र कुमार, राधेश्याम विद्याकुल, रत्नमणी डोभाल, मयूर सैनी, सतीश गुजराल, चंद्रशेखर, सुरेंद्र कुमार, सुमित यश कल्याण, पुलकित शुक्ला, हरीश, सुमित सैनी, विकास कुमार, सुमेश खत्री, अर्चना ढींगरा, अमरीश, पुलकित शुक्ला, विशाल गोस्वामी, संतोष कुमार, सचिन सैनी, वरुण वशिष्ठ सहित बड़ी संख्या में पत्रकार मौजूद रहे।

पुलिस ने कुनाल हत्याकांड का किया खुलासा

बहनों पर की गई अभद्र टिप्पणी से नाराज अरविन्द ने हत्या कर दोस्त से लिया बदला

पुलिस ने आरोपी को मथुरा से किया गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। कनखल पुलिस ने कुछ दिन पहले झाड़ियों में मिले युवक के शव की गुत्थी सुलझाते हुए पुलिस ने उसके दोस्त को मथुरा से गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी को न्यायालय के समक्ष पेश कर जेल भेज दिया है।

हरिद्वार एसएसपी प्रमेंद्र सिंह डोबाल ने सोमवार को प्रेस वार्ता कर घटना का खुलासा करते हुए बताया कि बीती 7 फरवरी को कनखल थाना क्षेत्र के श्रीयंत्र पुलिया के पास झाड़ियों में एक अज्ञात युवक का खून से लथपथ शव मिला था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मृतक की पहचान कुणाल निवासी लाटोवाली, कनखल के रूप में हुई। मृतक के पिता की शिकायत पर पुलिस ने हत्या का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की थी। आरोपी को पकड़ने के लिए पुलिस की

पांच टीमें बनाई गईं। पुलिस ने इलाके के सैकड़ों सीसीटीवी कैमरे खंगाले। एक फुटेज में मृतक कुणाल शराब के ठेके पर एक संदिग्ध व्यक्ति के साथ स्कूटी पर जाता हुआ दिखाई दिया। जांच करने पर पता चला कि स्कूटी सवार व्यक्ति अरविंद उर्फ शिवम है, जो घटना के बाद से ही फरार था। पुलिस टीम ने तेजी से कार्रवाई करते हुए आरोपी अरविंद को मथुरा से गिरफ्तार कर लिया।

कनखल थाना प्रभारी देवेन्द्र सिंह रावत ने बताया कि पूछताछ में अरविंद ने बताया कि वह और कुणाल दोस्त थे और पड़ोसी थे। 6 फरवरी की रात दोनों ने साथ बैठकर शराब पी। नशे में कुणाल ने अरविंद की बहनों के बारे में गलत बातें कहीं और उसे थप्पड़ मार दिया। इसी विवाद में गुस्साए अरविंद ने पास पड़े भारी पत्थर से कुणाल के सिर पर हमला कर दिया जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।पुलिस ने आरोपी को न्यायालय के समक्ष पेश कर जेल भेज दिया है। आरोपी के पास से मृतक का मोबाइल फोन भी बरामद कर लिया है। पुलिस को आरोपी ने अपना नाम अरविन्द उर्फ शिवम पुत्र संदीप शर्मा निवासी पतवारी मन्दिर के पीछे दुर्गा कॉलौनी थाना गोवर्धन मथुरा उ.प्र., हाल निवासी लाटोवाली थाना कनखल जनपद हरिद्वार बताया। पुलिस टीम में थाना कनखल एसएचओ देवेंद्र सिंह रावत, एसएसआई सतेन्द्र भण्डारी, एएसआई ललित मोहन अधिकारी, एएसआई नन्द किशोर, कां. सतेन्द्र रावत, उमेद सिंह, मनीष रावत व विशन सिंह के अलावा सीआईयू प्रभारी नरेंद्र सिंह बिष्ट, सीआईयू कां.हरबीर सिंह, वसीम व नरेंद्र, नगर कोतवाली के एसआई अंशुल अग्रवाल, कां. सतीश नौटियाल, रानीपुर कोतवाली के कां. दीप गौड़ शामिल रहे।

महिलाओं और बालिकाओं को दी विभिन्न कानूनों की जानकारी

शाह टाइम्स संवाददाता

पथरी। थाना क्षेत्र की पुलिस द्वारा चलाये जा रहे जागरुकता अभियान पुलिस आपके द्वार कार्यक्रम के अन्तर्गत थाना पथरी पुलिस टीम ने एंकर फैक्ट्री मे महिलाओं एवं बालिकाओं को महिला सुरक्षा से संबंधित विभिन्न कानूनों, गौरा शक्ति एप्प. उत्तराखंड पुलिस एप्प, आपातकालीन हेल्पलाइन नंबर 112, महिला हेल्पलाइन 1090/1091, साइबर अपराध से बचाव, हेल्पलाइन 1930, छेड़छाड़, घरेलू हिंसा तथा किसी भी आपात स्थिति में त्वरित सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी दी। स्थानीय लोगों ने पुलिस की इस पहल की सराहना करते हुए इसे समाज में सुरक्षा एवं विश्वास बढ़ाने वाला कदम बताया तथा पुलिस स्टाफ से भविष्य में भी इस प्रकार के जनजागरूकता कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाने का आग्रह किया।

फैक्ट्री में नकबजनी का आरोपी चोरी के माल सहित गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। फैक्ट्री में नकबजनी के फरार आरोपी को थाना सिडकुल पुलिस ने चोरी के माल सहित गिरफ्तार कर लिया है। 29 जनवरी को सिडकुल स्थित ग्रापैनल्स कंपनी के पजानी भागवतिप्पन पुलिस को तहरीर देकर फैक्ट्री का ताला तोड़कर पीतल व तांबा चोरी कर लिए जाने के संबंध में मुकदमा दर्ज कराया था। मुकद्मा दर्ज करने के बाद पुलिस ने एक आरोपी वसीम पुत्र शराफत को गिरफ्तार कर लिया था। मंगलवार को मुखबिर की सूचना पर विवेचक

एसआई बबलू चौहान ने सहयोगी पुलिसकर्मियों हेडकांस्टेबल कुलदीप बगासी व कांस्टेबल रोहित के साथ मुन्जयाल शोवा क्षेत्र से आरोपी दानिश पुत्र इरशाद निवासी जमालपुर खुर्द कोतवाली रानीपुर को चोरी किए गए माल 4 पैकेट टर्मिनल बुश कॉपर सहित दबोच लिया।

कॉमर्स केवल अकाउंट्स की किताब नहीं, निर्णय क्षमता विकसित करने वाला विषय : नेहा

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज की वाणिज्य प्रवक्ता नेहा जोशी ने कहा है कि कॉमर्स विषय केवल अकाउंट्स तक सीमित नहीं है, बल्कि यह निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने वाला महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने कहा कि कॉमर्स के छात्रों के पास करियर के सबसे अधिक विकल्प उपलब्ध हैं, लेकिन विडंबना यह है कि वही छात्र सबसे अधिक भ्रमित भी नजर आते हैं। उन्होंने बताया कि सीए, सीएस, सीएमए, बी.कॉम, एम.कॉम, एमबीए, बैंकिंग, स्टार्टअप जैसे अनेक विकल्पों के बीच छात्र अक्सर यह तय नहीं कर पाते कि उन्हें किस दिशा में आगे बढ़ना है। कई विद्यार्थी यह सोचकर कॉमर्स चुन लेते हैं कि इसमें साइंस की तरह कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ेगा, लेकिन यही सोच आगे चलकर उनकी सबसे बड़ी बाधा बन जाती है। नेहा जोशी ने कहा कि आज समस्या अवसरों की कमी नहीं, बल्कि समय पर दिशा तय न कर पाने की है। कक्षा 11 में प्रवेश लेते समय ही छात्र को यह स्पष्ट कर लेना चाहिए कि वह प्रोफेशनल कोर्स, मैनेजमेंट, रिसर्च या शिक्षण में से किस क्षेत्र में जाना चाहता है। बिना लक्ष्य के पढ़ाई करना बिना नक्शे के यात्रा करने जैसा है, जिसमें मेहनत तो बहुत होती है, लेकिन मंजिल अनिश्चित रहती है। उन्होंने कहा कि केवल परीक्षा पास करना ही उद्देश्य नहीं होना चाहिए। अंक भविष्य की दिशा तय करने का आधार होते हैं और अच्छे अंक कई अवसरों के द्वार खोलते हैं। बच्चों को केवल स्वतंत्र छोड़ देना पर्याप्त नहीं, बल्कि उनकी क्षमता के अनुरूप मार्गदर्शन और सही समय पर उचित सलाह देना आवश्यक है।

नारकोटिक दवाओं की अवैध बिक्री रोकने को गठित क्यूआरटी, 10 औषधि प्रतिष्ठानों की जांच

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। अपर आयुक्त के निर्देशों के क्रम में उप औषधि नियंत्रक द्वारा जनपद हरिद्वार में नारकोटिक एवं साइकोट्रोपिक औषधियों की अवैध खरीद-फरोख्त पर प्रभावी रोकथाम के लिए क्विक रिस्पॉन्स टीम (QRT) का गठन किया गया है। सलेमपुर एवं लक्सर क्षेत्र के बसीड़ी में अवैध दवाओं की बिक्री की लगातार मिल रही शिकायतों के बाद QRT ने सघन निरीक्षण एवं छापेमारी अभियान चलाया। अभियान के दौरान एनडीपीएस अधिनियम के अंतर्गत प्रतिबंधित कोई भी औषधि मौके पर नहीं पाई गई। जांच के तहत कुल 10 औषधि विक्रय प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया गया, जिनमें से 7 दुकानों को कारण बताओ नोटिस जारी किए गए, जबकि एक दुकान की क्रय-विक्रय गतिविधियों पर रोक लगाई गई। इसके अलावा 2 थोक औषधि विक्रेताओं का भी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान औषधि विक्रेताओं को सख्त निर्देश दिए गए कि नारकोटिक एवं साइकोट्रोपिक औषधियों का विक्रय केवल वैध चिकित्सकीय पर्चे पर ही किया जाए तथा पंजीकृत फार्मासिस्ट की अनुपस्थिति में किसी भी प्रकार की दवा का विक्रय न किया जाए। यह कार्रवाई वरिष्ठ औषधि निरीक्षक श्रीमती अनीता भारती के नेतृत्व में

की गई। टीम में औषधि निरीक्षक हरिश सिंह, सुश्री मेघा, ऋषभ धमा, हार्दिक भट्ट एवं विनोद जगूड़ी शामिल रहे। औषधि विभाग ने स्पष्ट किया कि भविष्य में भी इस प्रकार की निरीक्षण एवं प्रवर्तन कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी।

होटल के मैनेजर पर 3 लाख व सोने की अंगूठी लेकर फरार होने का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। सिडकुल थाना क्षेत्र में पूर्व विधायक सुरेश राठौर के स्वामित्व वाले होटल से जुड़ा विश्वासघात का मामला सामने आया है। होटल में तैनात मैनेजर पर तीन लाख रुपये नकद और सोने की अंगूठी लेकर फरार होने का आरोप लगा है। संपर्क करने पर गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी देने दी गई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस को दी गई तहरीर में शिवालिक नगर स्थित टिहरी विस्थापित कॉलोनी निवासी सोमिल चौधरी ने बताया कि उनके ससुर सुरेश राठौर के होटल 'रानीपुर राजवाड़ा' में देवेश शर्मा को मैनेजर नियुक्त किया गया था। शुरुआत में उसने कार्यकुशलता और ईमानदारी का परिचय देते हुए मालिक पक्ष का भरोसा जीत लिया। इसी विश्वास के चलते होटल के बैंक खाते की जानकारी, चेकबुक और डेबिट कार्ड जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां भी उसे सौंप दी गईं।

आरोप है कि कुछ समय बाद देवेश शर्मा ने कर्मचारियों का वेतन देना बंद कर दिया। पिछले तीन महीनों से होटल स्टाफ को वेतन नहीं मिला। इसी दौरान उसने लगभग तीन लाख रुपये नकद और एक सोने की अंगूठी लेकर बिना किसी सूचना के होटल छोड़ दिया। बताया गया है कि वह बीते कुछ समय से हरिपुर कलां क्षेत्र में रह रहा था। आरोप है कि जब उससे फोन पर संपर्क करने का प्रयास किया गया तो उसने अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए जान से मारने की धमकी दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने संबंधित धाराओं में प्राथमिकी दर्ज कर ली है। थाना प्रभारी नितेश शर्मा ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। जांच की जा रही है।

बहादराबाद में अपराधी शहजाद अली की हिस्ट्रीशीट खुली

बहादराबाद। शहर में अपराध कम करने और गुंडों पर लगाम कसने के लिए पुलिस ने एक और बड़ी कार्रवाई की है। लगातार लड़ाई-झगड़े, मारपीट और धोखाधड़ी जैसे गंभीर मामलों में शामिल अपराधी शहजाद अली के खिलाफ पुलिस ने सख्ती दिखाते हुए उसकी हिस्ट्रीशीट खोल दी है। पुलिस अब उसकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखेगी। बहादराबाद प्रभारी विजय सिंह ने बताया कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर जिले में अपराधियों के खिलाफ एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत बहादराबाद पुलिस ने यह कदम उठाया है। पुलिस का कहना है कि आरोपी शहजाद अली, जो कि राजपूतान इलाके का रहने वाला है, लंबे समय से इलाके की शांति भंग कर रहा था। उसके खिलाफ हत्या के प्रयास और बलवा जैसे कई मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस की इस कार्रवाई से साफ है कि गलत काम करने वालों को अब बख्शा नहीं जाएगा। जानकारी के अनुसार, इस साल अब तक बहादराबाद इलाके में 10 अपराधियों की हिस्ट्रीशीट खोली जा चुकी है।

बाइक की आमने-सामने की टक्कर में एक युवक की मौत, दो गंभीर रूप से घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। कनखल क्षेत्र के मिस्सरपुर में मंगलवार देर रात कार और मोटरसाइकिल की आमने-सामने टक्कर में 25 वर्षीय युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसके दो साथी गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को पहले जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां से हालत नाजुक देखते हुए एम्स ऋषिकेश रेफर कर दिया गया। पुलिस ने कार को कब्जे में लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है। रोहित (25) पुत्र मेवानाथ, शीतल (26) पुत्र कमलनाथ निवासी सपेरा बस्ती चंडीघाट थाना श्यामपुर और गदरनाथ (23) पुत्र रविनाथ निवासी विष्णुपुरा थाना पथरी एक ही मोटरसाइकिल पर सवार होकर लक्सर रोड की ओर जा रहे थे। मिस्सरपुर के पास उन्होंने आगे चल रहे ई-रिक्शा को ओवरटेक करने का प्रयास किया। इसी दौरान सामने से आ रही काले रंग की कार से उनकी बाइक की जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि तीनों युवक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल भिजवाया, लेकिन चिकित्सकों ने रोहित को मृत घोषित कर दिया। हादसे में कार और मोटरसाइकिल दोनों क्षतिग्रस्त हो गए। थाना प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र सिंह रावत ने बताया कि शीतल और गदरनाथ को एम्स ऋषिकेश में भर्ती कराया गया है। तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज किया जाएगा। हादसे के कारणों की विस्तृत जांच की जा रही है।

कुंभ मेला-2027 की तैयारियों को लेकर परामर्शदात्री समिति की बैठक

चार जिलों में फैले 150 वर्ग किमी क्षेत्र को मेला क्षेत्र में शामिल करने का प्रस्ताव, 32 सेक्टरों में माइक्रो प्लानिंग तैयार

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। आगामी कुंभ मेला-2027 के सफल और सुव्यवस्थित आयोजन को लेकर मेलाधिकारी श्रीमती सोनिका की अध्यक्षता में परामर्शदात्री समिति की बैठक आयोजित की गई। हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण के सभागार में आयोजित बैठक में मेला व्यवस्थाओं, प्रस्तावित कार्यों और तैयारियों पर विस्तृत चर्चा की गई तथा विभिन्न हितधारकों से सुझाव और फीडबैक लिया गया।

मेलाधिकारी श्रीमती सोनिका ने बताया कि आगामी कुंभ मेले के लिए चार जिलों के अंतर्गत लगभग 150 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को मेला क्षेत्र में शामिल करने का प्रस्ताव है। इस विस्तृत क्षेत्र को 32 सेक्टरों में विभाजित कर व्यवस्थाओं की माइक्रो प्लानिंग तैयार कर ली गई है। प्रस्तावित क्षेत्र में हरिद्वार के 23, देहरादून के 4, टिहरी के 2 और पौड़ी गढ़वाल के 3 सेक्टर शामिल किए गए हैं। सभी सेक्टरों में सड़क, पेयजल, विद्युत, सुरक्षा और जनसुविधाओं की विस्तृत योजना बनाई गई है। स्थायी और अस्थायी कार्यों को चरणबद्ध तरीके से समयसीमा के भीतर पूरा करने पर जोर दिया गया।

बैठक में दो स्थायी पार्किंग स्थलों के निर्माण, आंतरिक सड़कों के सुधार और जलभराव की समस्या के समाधान पर विशेष चर्चा हुई। मेलाधिकारी ने नगर में सीवर लाइन कार्यों के कारण खोदी गई सड़कों को एक सप्ताह में दुरुस्त करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि समिति से प्राप्त सुझावों को अंतिम कार्ययोजना में शामिल कर मेले को और अधिक सुव्यवस्थित बनाया जाएगा। बैठक में अपर मेलाधिकारी दयानंद सरस्वती ने स्वीकृत एवं प्रस्तावित कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया, जबकि अपर जिलाधिकारी पी.आर. चौहान ने प्रशासनिक तैयारियों की जानकारी दी।

इस अवसर पर मेयर हरिद्वार किरण जैसल, मेयर ऋषिकेश शंभू पासवान, मुनि की रेती नगर पालिका अध्यक्ष नीलम बिजल्वाण, भाजपा जिलाध्यक्ष आशुतोष शर्मा, श्री गंगा सभा अध्यक्ष नितिन गौतम, महामंत्री तन्मय वशिष्ठ, प्रेस क्लब अध्यक्ष धर्मेंद्र चौधरी, युवा साधु समाज के महामंत्री रविदेव शास्त्री, एसपी जितेंद्र चौधरी, धर्मशाला समिति अध्यक्ष महेश गौड़, जिला व्यापार मंडल के पदाधिकारी संजीव नैय्यर, प्रदीप कालरा, विकास तिवारी सहित विभिन्न संगठनों और धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। साथ ही एसपी सिटी अभय प्रताप सिंह, एसपी (ऑप्स) जितेंद्र चौधरी, उप मेलाधिकारी आकाश जोशी, मंजीत सिंह समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे।

भीमगोड़ा कुंड की हालत सुधारने की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। समाजवादी पार्टी के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष महंत शुभम गिरी ने सरकार और प्रशासन से पौराणिक भीमगोड़ा कुंड की हालत सुधारने की मांग की है। प्रेस को जारी बयान में महंत शुभम गिरी ने कहा कि पौराणिक महत्व वाले भीमगोड़ा कुंड की हालत जर्जर हो चुकी है। वहां लगी भीम की प्रतिमा भी क्षतिग्रस्त है। भीमगोड़ा कुंड और भीम की प्रतिमा की हालत सुधारने के लिए सरकार और प्रशासन को तुरंत कदम उठाने चाहिए। उन्होंने कहा कि भीमगोड़ा कुंड केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आस्था और इतिहास का प्रतीक है, लेकिन वर्षो से इसकी दशा सुधरने के बजाय और बिगड़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि यह प्रशासनिक संवेदनहीनता का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने मांग की कि भीमगोड़ा कुंड को नमामि गंगे योजना के अंतर्गत शामिल कर व्यापक सौंदर्यीकरण कराया जाए, ताकि श्रद्धालुओं को सुविधाएं मिलें और पौराणिक धरोहर संरक्षित रह सके।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने दी पंडित दीनदयाल उपाध्याय को श्रद्धांजलि

देश सेवा के लिए समर्पित रहा पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन : कौशिक

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। मध्य हरिद्वार में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक मदन कौशिक ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि को हम समर्पण दिवस के रूप में मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि अंत्योदय व एकात्म मानववाद के प्रणेता, महान राष्ट्रचिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का विकास ही राष्ट्र के विकास का परिचायक है। उनका तपस्यापूर्ण जीवन देश की सेवा के लिए आजीवन समर्पित रहा। राष्ट्र के पुनर्निर्माण की उनकी विचारधारा हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। मेयर किरण जैसल ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि डबल इंजन सरकार में सबका साथ, सबका विकास की भावना उनके चिंतन की ही जीवंत अभिव्यक्ति है। उनके आदर्शों से प्रेरित होकर प्रदेश सरकार गांव, गरीब, किसान, नारी और अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उत्थान के लिए पूरी तरह संकल्पबद्ध है। उन्होंने कहा कि संघ के स्वयंसेवक से भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष तक का पंडित दीनदयाल उपाध्याय का वैचारिक और संगठनात्मक योगदान भारतीय

राजनीति में एक मूल्यपरक दृष्टि का परिचायक है। अंत्योदय और एकात्म मानववाद के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रनिर्माण को सामाजिक समरसता, सेवा और आत्मनिर्भरता से जोड़ा। भाजपा के प्रदेश सह मीडिया प्रभारी विकास तिवारी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद और अंत्योदय की विचारधारा ने सेवा-भाव को राजनीति की आत्मा के रूप में स्थापित किया है, जो राष्ट्रनिर्माण के पथ पर सदैव दिशा और प्रेरणा प्रदान करती रहेगी सांसद प्रतिनिधि अनिल पुरी ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का समग्र मानवतावाद का सिद्धांत आज भी पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक है। जिला उपाध्यक्ष तरुण नैयर ने कहा कि करुणा के साथ सबसे पिछड़े और वंचित लोगों की सेवा करना और नैतिकता पर आधारित सार्वजनिक जीवन को बनाए रखना उनके जीवन का संदेश है। श्रद्धांजलि देने वालों में मुकेश कौशिक, राजकुमार अरोड़ा, मंडल अध्यक्ष तुषांक भट्ट, राजेंद्र कटारिया, प्रशांत शर्मा, किशन बजाज, सरदार हरमोहन सिंह, पार्षद मोनिका सैनी, सुनील सैनी, गौरव वर्मा, अनिल कुमार, गौरव भाटिया, विष्णु अग्रवाल, हिना दुआ आदि शामिल रहे।

ट्रैक्टर ट्राली चोरी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

पथरी। क्षेत्र के गांव रानीमाजरा में घर के सामने से ट्रैक्टर-ट्राली चोरी करने का मामला सामने आया है। पीड़ित ने मामले में पुलिस को तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराया। जाँच के दौरान पुलिस ने सीसीटीवी, कैमरों की मदद से दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनकी निशानदेही पर ट्रैक्टर ट्राली भी बरामद कर ली गई। पुलिस के अनुसार गांव रानीमाजरा निवासी रौनक वालिया ने घर के सामने से ट्रैक्टर ट्राली चोरी होने का मुकदमा दर्ज कराया था। चोरों की धरपकड़ के लिए एक पुलिस टीम गठित की गई। सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने के बाद मुखबिर तंत्र एव संदिग्धों से पूछताछ की गई। अहम सुराग मिलने पर पुलिस ने बंसल स्टोन क्रशर के पास से दो आरोपितों को चोरी की ट्रैक्टर ट्राली के साथ दबोच लिया। पूछताछ में आरोपितों ने अपने नाम अर्जुन और अनुज निवासी ग्राम रानीमाजरा पथरी बताया। पुलिस ने उनकी निशानदेही पर चोरी की ट्रैक्टर-ट्राली भी बरामद कर ली। दोनों आरोपी गांव रानीमाजरा के ही निकले। एसओ पथरी मनोज नोटियाल ने बताया टैक्टर ट्राली चोरी करने वाले दोनों आरोपियों को पकड़ा है। उनकी निशानदेहि पर टैक्टर ट्रॉली भी बरामद कर ली गई है। आरोपितों को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया गया।

सूचना (खोया-पाया)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 3 फरवरी 2026 को फेरूपुर जाते हुए मेरी कक्षा 10 की अंक तालिका एवं अन्य आवश्यक कागजात कहीं रास्ते में गिरकर खो गए हैं जो काफी खोजबीन के बाद भी उक्त दस्तावेज प्राप्त नहीं हुए, जिनका प्रयोग अवैध होगा। तोशीबा पुत्री अफरोजदीन निवासी ग्राम पदार्था उर्फ धनपुरा थाना पथरी तहसील व जिला हरिद्वार।

हरिद्वार में समाचार व विज्ञापन के लिये सम्पर्क करें।

सैफ सलमानी

ब्यूरो चीफ

शाह टाइम्स हरिद्वार

कार्यालय : रामनगर, तहसील के पीछे, ज्वालापुर, हरिद्वार

मो.: 9639554327, ई-मेल : shahtimeshr2026@gmail.com

आवास सचिव ने किया नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग का औचक निरीक्षण

■ आवास सचिव डॉ. आर. राजेश ने की बायोमेट्रिक उपस्थिति एवं अनुशासन पर सख्ती ,बागेश्वर एवं गरुड़ जीआईएस आधारित महायोजना की समीक्षा

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। आवास सचिव डॉ. आर. राजेश कुमार ने आज देहरादून के बंसत विहार स्थित नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग का औचक निरीक्षण कर विभागीय कार्यप्रणाली का व्यापक आकलन किया। निरीक्षण के दौरान सचिव ने विभिन्न शाखाओं में चल रहे कार्यों की प्रगति, फाइल निस्तारण की स्थिति, योजनाओं के क्रियान्वयन एवं प्रशासनिक व्यवस्था की समीक्षा की तथा अधिकारियों को समयबद्ध, पारदर्शी एवं उत्तरदायी कार्य संस्कृति अपनाने के निर्देश दिए। सचिव डॉ. आर. राजेश कुमार ने स्पष्ट किया कि राज्य सरकार की प्राथमिकता के अनुरूप विकास कार्यों में गति और गुणवत्ता दोनों सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि लंबित प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण करते हुए जनहित से जुड़े मामलों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

बागेश्वर एवं गरुड़ जीआईएस आधारित महायोजना की समीक्षा

निरीक्षण के बाद डॉ. आर. राजेश कुमार ने बागेश्वर एवं गरुड़ की जीआईएस आधारित महायोजना (मास्टर प्लान) की समीक्षा बैठक में सहभागिता की। बैठक में बागेश्वर जनपद के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों सहित जिलाधिकारी

कार्यालय के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के दौरान महायोजना के प्रस्तावों पर विस्तार से चर्चा की गई। नगरीय विस्तार, यातायात प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, जल निकासी व्यवस्था, सार्वजनिक सुविधाओं एवं आधारभूत संरचना विकास से संबंधित बिंदुओं पर गहन विचार-विमर्श हुआ। सचिव डॉ. आर. राजेश कुमार ने निर्देश दिए कि महायोजना को स्थानीय आवश्यकताओं, भौगोलिक परिस्थितियों एवं भविष्य की जनसंख्या वृद्धि को ध्यान में रखते हुए अंतिम रूप दिया जाए, ताकि योजनाबद्ध और सतत विकास सुनिश्चित हो सके।

उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि सरलीकरण एवं विनियमन शिथिलीकरण से संबंधित कार्यों को समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जाए, जिससे निवेश प्रोत्साहन एवं ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को बढ़ावा मिल सके। डॉ. आर. राजेश ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप प्रक्रियाओं को सरल, पारदर्शी एवं डिजिटल माध्यम से सुलभ बनाना समय की आवश्यकता है। बायोमेट्रिक उपस्थिति एवं अनुशासन पर सख्ती 'निरीक्षण के दौरान सचिव ने मुख्य प्रशासनिक अधिकारी से बायोमेट्रिक उपस्थिति का विवरण प्राप्त किया तथा अनुपस्थित कार्मिकों के संबंध में स्पष्टीकरण मांगा। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि बिना अनुमति अथवा अनुचित कारण के किसी भी कार्मिक का अवकाश स्वीकार नहीं किया जाएगा। बिना अनुमति अनुपस्थित कार्मिकों को स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश भी प्रदान किए गए।

सरकार जनता के द्वार' शिविर में गूंजे सड़क, स्वास्थ्य व बिजली के मुद्दे

■ शिविर में महुंचे ग्रमीणों ने क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं को प्रमुखता से उठाया

शाह टाइम्स संवाददाता

चकराता। विकासखंड चकराता के खत भरम अंतर्गत ग्राम कांडोई में बहुउद्देश्यीय शिविर 'सरकार जनता के द्वार' का आयोजन किया गया। शिविर में उपजिलाधिकारी आईएएस डॉ. हर्षिता सिंह मुख्य रूप से मौजूद रहीं। उनके साथ स्वास्थ्य, जल संस्थान, पीएमजीएसवाई, लोक निर्माण विभाग, शिक्षा, कृषि एवं वन विभाग सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

शिविर में बड़ी संख्या में पहुंचे ग्रामीणों ने क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। ग्रामीणों ने तिलूर लिंक रोड के निर्माण व डामरीकरण, कांडोई से कावा खेड़ा तक 5 किलोमीटर सड़क निर्माण तथा देहरादून से बायला तक रोडवेज बस सेवा संचा. लित करने की मांग रखी। उन्होंने बताया कि भरम क्षेत्र में यातायात का मुख्य साधन यूटिलिटी वाहन है, जिसमें ओवरलोडिंग के कारण दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है। इसके अलावा कांडोई व बुल्हाड़ अस्पताल में डॉक्टरों की तैनाती, वेटरनरी अस्पताल में स्टाफ व दवाइयों की उपलब्धता सुनिश्चित करने, विभिन्न गांवों में विद्युत आपूर्ति बहाल करने तथा बायला क्षेत्र के डाकुरखेड़ा व बड़ऊखेड़ा में पेयजल पाइपलाइन की व्यवस्था करने की मांग की गई। राजकीय इंटर कॉलेज कांडोई में कला संकाय शुरू किए जाने का मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया गया, ताकि छात्र-छात्राओं को अन्यत्र न जाना पड़े।

ग्रामीणों ने पिंगवा-बायला पीएमजीएसवाई सड़क के पुनः डामरीकरण, बुल्हाड़-मीनस मोटर मार्ग के सुधारीकरण तथा बुल्हाड़ से मोईला टॉप तक सीसी मार्ग निर्माण की मांग भी रखी। उपजिलाधिकारी डॉ. हर्षिता सिंह ने सभी समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए और शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया। ज्ञापन देने वालों में विजयपाल सिंह रावत (पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष, अनुसूचित जनजाति मोर्चा भाजपा उत्तराखंड), पप्पू रावत, अमर सिंह, करम सिंह रावत, सरदार सिंह, मोहन सिंह सहित खत भरम क्षेत्र के समस्त ग्रामीण मौजूद रहे।

स्नेहा मुरारी को भारत बौद्धिक्स राष्ट्रीय परीक्षा में तृतीय पुरस्कार

विकासनगर। विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, के तत्वावधान में आयोजित भारत बौद्धिक्स राष्ट्रीय परीक्षा-2026 में प्रांत की स्नेहा मुरारी (कुमाऊं विश्वविद्यालय) ने देश में चौथा स्थान प्राप्त कर तृतीय पुरस्कार हासिल किया है। पुरस्कार वितरण में प्रथम पुरस्कार 1,00,000, द्वितीय पुरस्कार दो छात्रों को 50,000-50,000 तथा तृतीय पुरस्कार चार छात्रों को 25,000 प्रत्येक प्रदान किया जाएगा। यह सफलता उत्तराखंड प्रांत की लगभग 12,500 छात्र-छात्राओं की अभूतपूर्व सहभागिता का परिणाम है, जिन्होंने 31 जनवरी एवं 1 फरवरी को 115 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा दी। विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान उत्तराखंड प्रांत मंत्री डॉ. राजकुमारी भंडारी चौहान ने कहा स्नेहा मुरारी का तृतीय पुरस्कार विजेता बनना भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षा को मजबूत करने वाली ऐतिहासिक उपलब्धि है।

महिला सुरक्षा को लेकर सेलाकुई पुलिस का औद्योगिक क्षेत्र में आत्मरक्षा प्रशिक्षण शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

सेलाकुई। महिला अपराधों के प्रति संवेदनशीलता को देखते हुए पुलिस मुख्यालय तथा एसएसपी देहरादून के निर्देशन में औद्योगिक क्षेत्र के ईस्ट अफ्रीकन तथा अंबर कंपनी में कार्यरत महिलाओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गय

पुलिस महानिदेशक के निर्देशों के अनुपालन में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निकट पर्यवेक्षण में थाना सेलाकुई क्षेत्र अंतर्गत स्थित औद्योगिक क्षेत्र ईस्ट अफ्रीकन तथा अंबर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में लगभग 500 महिलाओं को अलग-अलग चरणों में आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। पुलिस मुख्यालय द्वारा भेजे गए कुशल प्रशिक्षकों द्वारा आत्मरक्षा संबंधी सभी तकनीकियों से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण में बड़ी संख्या में महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय पुलिस के गोरा शक्ति एप से महिलाओं को

महिला संबंधी सुरक्षा के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। सीओ प्रेम नगर द्वारा भी महिलाओं को आत्मरक्षा प्रशिक्षण एवं गोरा शक्ति अप की लाभप्रद सूचनाओं से अवगत कराया गया।

पुलिस टीम में सीओ प्रेमनगर विवेक कुटियाल, पीडी भट्ट थाना अध्यक्ष सेलाकुई, एसआई मीना रावत, महिला कांस्टेबल वर्षा, अपर उपनिरीक्षक शालू चौधरी, उत्तराखंड पुलिस जूडो टीम कोच अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता, फायर वूमेन अर्चना चौधरी, जूडो खिलाड़ी, महिला कांस्टेबल अंजना रानी वूसू कोच उत्तराखंड पुलिस राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शामिल रहे।

बुल्हाड़ की सामूहिक भूमि पर अवैध खनन व हरे पेड़ों की कटाई का आरोप

■ ग्रामीणों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन, जांच कर कार्रवाई की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

चकराता। विकासखंड चकराता अंतर्गत ग्राम बुल्हाड़ के डुंगरी क्षेत्र में सामूहिक भूमि पर अवैध खनन और हरे पेड़ों की कटाई का मामला प्रकाश में आया है। "जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार" कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी चकराता को ज्ञापन सौंपकर मामले की निष्पक्ष जांच एवं शीघ्र कानूनी कार्रवाई की मांग की। ग्रामीणों का आरोप है कि गांव निवासी रमेश पुत्र मोहर सिंह द्वारा डुंगरी स्थित सामूहिक भूमि पर अतिक्रमण कर अवैध खनन किया जा रहा है। ग्रामीणों के अनुसार उक्त भूमि को गांव के बारात घर एवं बहुउद्देश्यीय केंद्र के रूप में चिन्हित किया गया था, जहां विवाह एवं अन्य सामाजिक आयोजनों के दौरान टेंट आदि लगाए जाते रहे हैं। ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया कि मंदिर समिति द्वारा पूर्व में किए गए वृक्षारा. पण के तहत लगाए गए हरे पेड़ों को भी काट दिया गया है। उनका कहना है कि सड़क निर्माण के समय लोक निर्माण विभाग द्वारा संबंधित भूमि का मुआवजा मोहर सिंह आदि को दिया जा चुका है, इसके बावजूद उक्त भूमि पर पुनः कब्जे का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि इस संबंध में पूर्व में क्षेत्रीय पटवारी को भी शिकायत दी गई थी, किंतु अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। ग्रामीणों ने प्रशासन को चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं की गई तो गांव में शांति व्यवस्था प्रभावित हो सकती है।ज्ञापन देने वालों में विजय रावत,दान सिंह, सरदार सिंह, मोहर सिंह सहित समस्त ग्रामवासी उपस्थित रहे। ग्रामीणों ने प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषी के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करने की मांग की है। उपजिला अधिकारी डां हर्षिता सिंह ने एनटीसी,ई ई पीएमजीएसवाई विकासनगर को जांच के आदेश कर दिए है।

एक नजर ....

जेबीआईटी में दो दिवसीय फाउंडर डे समारोह का आयोजन

सेलाकुई। जेबीआईटी ग्रुप ऑफ इंस्टीटयूट में दो दिवसीय 18वें फाउंडर डे समारोह का शुभारंभ उत्साह एवं श्रद्धा के साथ किया गया। इस अवसर पर संस्थापक की दूरदर्शिता और योगदान को सम्मान देने के लिए आत्म चिंतन का प्रतीक रहा। दो दिवसीय समारोह के पहले दिन कुल 46 टेक्निकल और नॉन टेक्निकल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 300 से 350 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया तथा दूसरे दिन निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर और रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा जिसमें निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं दवाईयां वितरित की जाएगी। संस्थान की चेयरपर्सन हेमलता सिंघल ने संस्थापक के दूरदर्शी नेतृत्व, शिक्षा के माध्यम से विकसित समाज और प्रगतिशील भारत का निर्माण, संस्थान की प्रगति तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर वाईस चेयरमैन संदीप सिंघल के साथ मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति उत्तराखंड टेक्निकल विश्वविद्यालय प्रो. वीके तिवारी, भारतीय प्रौधोगिकी संस्थान प्रो. राजकुमार सिंह, अशोक कुमार, डा. पीके चौधरी निदेशक, डा. विशांत कुमार निदेशक प्रशासनिक व अन्य लोग मौजूद रहे।

ओटीपी लीक से होने वाले फ्रॉड' रोकने के लिए एयरटेल ने नया एआई-आधारित सुरक्षा फीचर किया लॉन्च

देहरादून। एयरटेल ने स्पैम की समस्या से निपटने के अपने लगातार प्रयासों के तहत आज अपना नया एआई-पावर्ड फ्रॉड अलर्ट सिस्टम लॉन्च किया है। यह फीचर ग्राहकों को ओटीपी से जुड़े बैंकिंग फ्रॉड से रियल-टाइम में सुरक्षित रखने में मदद करेगा।आजकल धोखेबाज डिलीवरी, कस्टमर सपोर्ट या अन्य रोजमर्रा की सेवाओं का बहाना बनाकर ग्राहकों पर जल्दबाजी का दबाव बनाते हैं और उनसे बैंकिंग ट्रांजैक्शन से जुड़ा ओटीपी साझा करवा लेते हैं। जैसे ही ओटीपी साझा किया जाता है, ग्राहक के बैंक खाते में जमा राशि धोखाधड़ी के खतरे में पड़ जाती है।एयरटेल का नया एआई-पावर्ड सिस्टम ऐसी संदिग्ध परिस्थितियों की पहचान कर ग्राहकों को समय रहते सचेत करता है। जब किसी संभावित जोखिम भरी इनकमिंग कॉल के दौरान बैंक द्वारा भेजा गया ओटीपी डिटेक्ट होता है, तो एयरटेल तुरंत 'फ्रॉड अलर्ट' के जरिये ग्राहक को चेतावनी देता है कि कॉल पर रहते हुए बैंकिंग ट्रांजैक्शन का ओटीपी साझा करना जोखिम भरा हो सकता है।इस मौके पर एयरटेल इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ शाश्वत शर्मा ने कहा,"हम एयरटेल को एक सुरक्षित नेटवर्क बनाने के मिशन पर काम कर रहे हैं।

हिमंत विस्वा के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग को लेकर जन अधिकार पार्टी का प्रदर्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

विकासनगर। जन अधिकार पार्टी (जनशक्ति) द्वारा सहसपुर में असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के खिलाफ प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन उनके द्वारा दिए गए कथित भड़काऊ, साम्प्रदायिक और समाज में नफरत फैलाने वाले बयानों/समुदाय विशेष को टारगेट कर भड़काऊ वीडियो पोस्ट करने के विरोध में तथा उनके विरुद्ध मुकदमा दर्ज किए जाने की मांग को लेकर किया गया।

पार्टी कार्यकर्ताओं ने कहा कि मुख्यमंत्री जैसे संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति द्वारा इस प्रकार की भाषा और अभिव्यक्तियाँ देश की साम्प्रदायिक सौहार्द, सामाजिक सद्भावना और राष्ट्रीय एकता के लिए गंभीर खतरा पैदा करती हैं। कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि

ऐसे बयान संविधान में निहित धर्मनिरपेक्षता, समानता और भाईचारे के मूल सिद्धांतों के विपरीत हैं। प्रदर्शन के दौरान पार्टी पदाधिकारियों ने पुलिस प्रशासन से मांग की कि हिमंत बिस्वा सरमा के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुक. दमा दर्ज कर निष्पक्ष जांच शुरू की जाए, ताकि समाज में नफरत फैलाने वाली गतिविधियों पर रोक लगाई जा सके और कानून की मर्यादा कायम रहे।

इस अवसर पर जन अधिकार पार्टी (जनशक्ति) के प्रदेश सचिव अमजद इलाही, प्रदेश सचिव इकराम मलिक, जिला अध्यक्ष नभ बंसल, सय्याद अली, निखिल राणा, फैयाज अली, आसिफ, शराफत अली, रईस अहमद, सलीम, नदीम, आबाद अली, कुर्बान मोहम्मद, जाकिर, शाहरुख अली, अल्ताफ अंसारी, शुभम राठौड़, अनवर अली, कुर्बान अली, जाकिर हुसैन आदि उपस्थित रहे।

चारधाम यात्रा की तैयारियों को लेकर डीएम की टैक्सी यूनियनों के साथ बैठक

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। आगामी चारधाम यात्रा को सफल, सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी रुद्रप्रयाग प्रतीक जैन ने टैक्सी-मैक्सी यूनियन संचालकों, होटल यूनियन पदाधिकारियों तथा डंडी-कंडी संचालकों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की।

बैठक में जिलाधिकारी ने यात्रा संचालन के दौरान उत्पन्न होने वाली संभावित समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की और सभी यूनियन प्रतिनिधियों से सुझाव आमंत्रित किए। प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र से जुड़ी व्यावहा. रिक समस्याओं को जिलाधिकारी के समक्ष रखा। डीएम ने संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्राप्त सुझावों पर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने विशेष रूप से परिवहन विभाग को निर्देशित किया कि जनपद में निजी वाहनों द्वारा अवैध रूप से किराये पर सवारी ढोने की प्रवृत्ति पर कठोर प्रवर्तन कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि अधिकृत वाहन संचालकों के हितों की रक्षा तथा यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिकता है।

बैठक के उपरांत उपजिलाधिकारी ऊखीमठ अनिल रावत एवं एआरटीओ रुद्रप्रयाग खुशवंत सिंह चौहान ने बताया कि जिलाधिकारी के निर्देशों के अनुपालन में जनपद में शीघ्र विशेष चेकिंग अभियान चलाया जाएगा। अभियान के दौरान यदि कोई निजी वाहन व्यावसायिक रूप से सवारी ढोते हुए पाया गया तो संबंधित धाराओं में चालान की कार्रवाई करते हुए वाहन को सीज किया जाएगा।

बैठक में अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत संजय कुमार सहित टैक्सी यूनियन के पदाधिकारी एवं अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यालय सहायक अभियन्ता, सिंचाई उपखण्ड कर्णप्रयाग

पत्रांकः 31 / स.अ.–द्वितीय / टी–4 दिनांक–11.02.2026

निविदा सूचना संख्या–13 / स.अ.–द्वितीय / 2025–26

महामहिम राज्यपाल महोदय, उत्तराखण्ड की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु वर्गीकृत श्रेणी के पंजीकृत ठेकेदारों से दिनांक 25.02.2026 को 11:30 बजे तक मुहरबन्द निविदायें आमंत्रित की जाती हैं जो उसी दिन 15:00 बजे उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष अधोहस्ताक्षरी द्वारा खोली जायेंगीं निविदा से सम्बन्धित शर्तें तथा प्रपत्र दिनांक 11.02.2026 से 24.02.2026 तक सायं 17:00 बजे तक किसी भी कार्यदिवस पर इस कार्यालय से निर्धारित मूल्य अदा करने पर प्राप्त किये जा सकते हैं

क्र. सं.	कार्य का नाम	धरोहर धनराशि	कार्यावधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	ठेकेदार की वर्गीकृत श्रेणी
दैवीय आपदा (शि०वि०)					
1	रा.इ.का. बरतोली में क्षतिग्रस्त सुरक्षा दीवार का निर्माण कार्य	21000.00	03 माह	1000+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
2	रा.प्रा.वि. नैल में प्रांगण का पुस्ता पुर्ननिर्माणं	15000.00	03 माह	500+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
3	रा.प्रा.वि. मक्षखोला में क्षतिग्रस्त सुरक्षा दीवार मरम्मत कार्य	22500.00	03 माह	1000+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
4	रा.प्रा.वि. जैंटी में विद्यालय प्रांगण की क्षतिग्रस्त सुरक्षा दीवार का मरम्मत कार्य	15000.00	03 माह	500+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
5	दैवीय आपदा सिमली मुख्य बाजार में पिण्डर नदी के बांये तट पर बाढ सुरक्षा कार्य — जेब नं. 01	15000.00	03 माह	500+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
6	जेब नं. 02	15000.00	03 माह	500+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
7	जेब नं. 03	15000.00	03 माह	500+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
8	जिला योजना के अन्तर्गत राज्य संरक्षित स्मारक गोविन्द मन्दिर समूह सिमली जनपद चमोली में सौन्दर्यकरण कार्य	24000.00	03 माह	1000+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत
9	जिला योजना (प्रा.शि.) विकासखण्ड थराली के रा.प्रा.वि. जबरकोट वृहद मरम्मतं	21000.00	03 माह	1000+ 18% GST	ई अथवा उच्चीकृत

निविदा से राम्बन्धित अन्य शर्तें किसी भी कार्य दिवस में इस कार्यालय के नोटिस बोर्ड से देखी जा सकती हैं

सहायक अभियन्ता
सिंचाई उपखण्ड कर्णप्रयाग

चकराता में 'प्रशासन गांव की ओर' शिविर में उमड़ी भीड़

शाह टाइम्स संवाददाता

चकराता। विकासखंड चकराता में मंगलवार को "प्रशासन गाँव की ओर" कार्यक्रम के अंतर्गत विशाल जनसुनवाई एवं बहुउद्देशीय शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपजिलाधिकारी (एसडीएम) चकराता ने की। शि. विर में खंड विकास अधिकारी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीण पहुंचे और अपनी समस्याएं अधिकारियों के समक्ष रखीं। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग का स्टॉल विशेष आकर्षण का केंद्र रहा, जहां उपजिलाधिकारी ने स्वयं पहुंचकर व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) चकराता के चिकित्सा अधीक्षक ने उन्हें उपलब्ध स्वास्थ्य

सेवाओं, दवाइयों के स्टॉक तथा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। स्वास्थ्य शिविर में कुल 196 मरीजों की ओपीडी की गई। 106 लोगों के शुगर और बीपी परीक्षण (49 शुगर, 57 बीपी) किए गए। 34 लोगों को स्वास्थ्य परामर्श दिया गया, जबकि आरबीएसके एवं आरकेएसके के तहत 60 परामर्श किए गए। 19 लैब टेस्ट संपन्न हुए तथा 6 बच्चों व गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया गया। इसके अतिरिक्त 9 नए आयुष्मान कार्ड भी बनाए गए।

शिविर में विभिन्न विभागों से संबंधित कुल 39 शिकायतें दर्ज की गईं। उपजिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि शासन का उद्देश्य अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना है।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपना नाम निखिल से बदलकर निखिल कुमार कर लिया है भविष्य में मुझे निखिल कुमार पुत्र श्री नरेन्द्र कुमार के नाम से जाना पहचाना जाए। **पता मकान न. ए 306 लॉर्ड कृष्णा ग्रीन केदारपुर दून यूनिवर्सिटी रोड बंजारावाला पो.ओ. बंजारावाला देहरादून उत्तराखण्ड 248001 मोबाइल नंबर- 91-886894072.**

शी फॉर स्टेम के तहत हर जनपद में पांच छात्राओं को दी जाएगी छात्रवृत्ति : सीएम

देहरादून में आयोजित शी फॉर स्टेम उत्तराखण्ड विषय पर आयोजित कार्याशाला में पहुंचे सीएम

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला एवं बालिका विज्ञान दिवस के अवसर पर उत्तराखण्ड तकनीकी विश्व. विद्यालय, सुद्धोवाला (प्रेमनगर, देहरादून) में आयोजित 'शी फॉर स्टेम उत्तराखण्ड' विषयक कार्यशाला में प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री धामी ने 'अंतर्राष्ट्रीय महिला एवं बालिका विज्ञान दिवस' के अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं तथा कार्यशाला में उपस्थित सभी महानुभावों का अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने 'शी फॉर स्टेम' विशिष्ट कार्यक्रम के माध्यम प्रदेश की 20 प्रतिभाशाली बेटियों को 50-50 हजार रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की।मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने घोषणा की कि शी फॉर स्टेम के तहत हर जनपद में पांच छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी द्यइसके साथ ही मुख्यमंत्री ने यह भी घोषणा की कि स्टेम हेतु स्टार्टअप आरंभ करने के लिए में छात्राओं को वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे द्य महिला प्रौद्योगिकी केंद्रों में स्वयं सहायता समूहो को जोड़ा जाएगा मुख्यमंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त की कि इस कार्यक्रम के माध्यम से होनहार बेटियों को स्टेम अर्थात साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथमेटिक्स के क्षेत्रों में शिक्षा एवं करियर के लिए प्रेरित किया जा रहा है। साथ ही दूरस्थ एवं सीमांत क्षेत्रों में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार को बढ़ावा देने तथा महिलाओं को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए इन-मोबी, विज्ञानशाला इंटरनेशनल, यूकॉस्ट तथा उत्तराखंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय सहित सभी आयोजकों को साधुवाद देते हुए कहा कि उन्होंने इस दूरदर्शी पहल को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय इतिहास साक्षी है कि नारीशक्ति केवल सामाजिक या पारिवारिक जीवन तक सीमित नहीं रही, बल्कि विज्ञान, दर्शन, खगोलशास्त्र एवं चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में भी अग्रणी रही है। वैदिक काल में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियाँ दार्शनिक विमर्श में अग्रणी थीं, जबकि लीलावती ने गणित के क्षेत्र में विश्व को दिशा प्रदान की। उन्होंने उल्लेख किया कि चरक-संहिता और सुश्रुत-सं. हता जैसे आयुर्वेदिक ग्रंथों के विकास में भी स्त्रियों के योगदान के प्रमाण मिलते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आधुनिक काल में भी अनेक महिलाओं ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में असाधारण योगदान देकर देश का गौरव बढ़ाया है। स्वतंत्रता से पूर्व के समय में, जब महिलाओं के लिए घर से बाहर निकलना भी चुनौतीपूर्ण था, कार्यक्रम में विधायक सहदेव सिंह पुंडीर, सचिव रंजीत सिन्हा, महा. निदेशक यूकॉस्ट प्रो. दुर्गेश पंत सहित छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

देहरादून-मसूरी मार्ग पर दौड़ रहे ओवर हाइट वाहनों से हटाई छतें

कांवड़ यात्रा के मद्देनजर छाम पुलिस ने चलाया चेकिंग अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। पहाड़ी मार्गों पर सुरक्षित यातायात व्यवस्था सुनिश्चित करने और संभावित दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से टिहरी पुलिस लगातार सक्रिय है।

इसी क्रम में थाना छाम पुलिस ने देहरादून-मसूरी मोटर मार्ग पर एक विशेष चेकिंग अभियान चलाया, जिसमें यातायात नियमों की अनदेखी करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की गई। पुलिस का यह अभियान मुख्य रूप से उन वाहनों पर केंद्रित था, जिन्होंने नियमों के विपरीत अपने वाहनों की ऊंचाई बढ़ा रखी थी या अवैध रूप से अतिरिक्त निर्माण कर रखा था। मटियाली तिराहा पर पुलिस टीम ने नाकेबंदी कर ऐसे कई वाहनों को रोका और मौके पर ही सुधारात्मक कार्रवाई की। पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, कांवड़ यात्रा और अन्य धार्मिक आयोजनों के दौरान अक्सर देखा जाता है कि श्रद्धालु अपने वाहनों में क्षमता से अधिक सवारियां बैठाने या सजावट के नाम पर वाहनों के ऊपर दूसरी छत (डबल डेकर) बना लेते हैं। इस तरह के ओवर हाइट वाहन पहाड़ी रास्तों पर दुर्घटना का बड़ा कारण बन सकते हैं, क्योंकि इससे वाहन का संतुलन बिगड़ने का खतरा रहता है और साथ ही बिजली के तारों या पेड़ों से टकराने की आशंका भी बनी रहती है। छाम पुलिस ने मटियाली तिराहा से गुजर रहे ऐसे सभी ओवर हाइट कांवड़ वाहनों की जांच की और जिन वाहनों में मानकों के विपरीत अतिरिक्त छत पाई गई, उन्हें तत्काल प्रभाव से हटवाया गया।

पुलिस ने वाहनों की ऊंचाई को निर्धारित मानकों के अनुरूप कम कराया ताकि मार्ग पर अन्य वाहनों का आवागमन सुचारु और सुरक्षित बना रहे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक टिहरी आयुष अग्रवाल ने इस कार्रवाई को लेकर स्पष्ट निर्देश जारी किए हैं कि किसी भी सूरत में यातायात नियमों का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक एस.एन. राना द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं 63/9 ई-राजपुर रोड देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादकः
एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
स्थानीय सम्पादक
चेतन गुरूंग
देहरादून कार्यालय 63/9 ई-राजपुर रोड देहरादून
☎0135-2743363
R.N.I. No.UTT HIN 2001/05656
मोबाइल-9720007290
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

चंबा और देवप्रयाग पुलिस ने चलाया व्यापक जन जागरूकता अभियान

नई टिहरी। टिहरी जिले में पुलिस प्रशासन द्वारा अपराधों पर अंकुश लगाने और आमजन को सुरक्षित परिवेश प्रदान करने के उद्देश्य से लगातार जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी क्रम में थाना चंबा और थाना देवप्रयाग पुलिस ने अपने-अपने क्षेत्रों में विशेष जन-जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से पुलिस ने न केवल स्कूली छात्र-छात्राओं, बल्कि महिलाओं और स्थानीय व्यापारियों को भी सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारियों से रूबरू कराया। थाना चंबा पुलिस की टीम ने राजकीय इंटर कॉलेज नागनी में पहुंचकर छात्रों को जागरूक किया, तो वहीं देवप्रयाग पुलिस ने भल्लेगांव बाजार क्षेत्र में जन-संवाद स्थापित किया।

शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में कार्य सूबे को ले जाएंगे ऊंचाइयों पर: पुण्डीर

शाह टाइम्स संवाददाता

सहसपुर। विधानसभा सहसपुर के अंतर्गत वीर माधो सिंह भंडारी उत्तराखंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में विधायक सहदेव सिंह पुंडीर और प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विधायक

सहदेव सिंह पुंडीर ने कहा कि प्रदेश सरकार शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार, पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया और युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए निरंतर कार्य कर रही है। नकल विरोधी सख्त कानून लागू कर युवाओं के हितों की रक्षा सुनिश्चित की गई है, जिससे योग्य और परिश्रमी युवाओं को न्यायपूर्ण अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि लगभग 28,000 से अधिक युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना सरकार की प्रतिबद्धता और दूरदर्शी सोच का प्रमाण है।

इससे हजारों परिवारों में नई आशा और आर्थिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। विधायक सहदेव सिंह पुंडीर ने यह भी कहा कि सहसपुर विधानसभा में देश की पाँचवीं साइंस सिटी का निर्माण होना क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह परियोजना विज्ञान, तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में युवाओं को नई दिशा प्रदान करेगी तथा क्षेत्र को शैक्षणिक एवं तकनीकी दृष्टि से सशक्त बनाएगी। उन्होंने मुख्यमंत्री का सहसपुर विधानसभा को निरंतर विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में किए जा रहे कार्य आने वाले समय में उत्तराखंड को नई ऊँचाइयों पर ले जाएंगे।

पारंपरिक खेती और खानपान को बचाने के लिए छात्रों ने ली शपथ

■ ग्राफिक एरा और ध्रुवपथ संस्थान की अनूठी पहल से गूंज रहे पहाड़ के विद्यालय

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। आधुनिकता की दौड़ में छूटती जा रही अपनी जड़ों और पारंपरिक विरासत को सहेजने के लिए नई पीढ़ी को जागरूक करना समय की मांग बन गया है। इसी उद्देश्य को लेकर ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी देहरादून और ध्रुवपथ ग्रामीण विकास संस्थान नागणी ने एक संयुक्त अभियान की शुरुआत की है, जिसके तहत चंबा प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों में छात्र-छात्राओं के बीच जाकर उन्हें अपनी मिट्टी, बीज और भोजन के महत्व से परिचित कराया जा रहा है। बुधवार को इसी कड़ी में राजकीय इंटर कॉलेज रानीचौरी में एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका विषय हमारी धरती, हमारे बीज और पारंपरिक खानपान रखा गया था। इस दौरान न केवल ज्ञानवर्धक संवाद हुआ, बल्कि रोचक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों की समझ को भी परखा गया। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ के तौर पर बीज बचाओ आंदोलन के प्रणेता और प्रसिद्ध पर्यावरणविद् रघुभाई जड़धारी ने शिरकत की। उन्होंने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए पहाड़ की पारंपरिक खेती और बीजों की वैज्ञानिक महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। रघुभाई ने बताया कि हमारे पूर्वजों द्वारा संजोए गए पारंपरिक बीज और अनाज केवल पेट भरने का साधन नहीं थे, बल्कि वे औषधीय गुणों से भी भरपूर थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा के गंभीर संकट से जूझ रही है, तब हमारे ये पारंपरिक मोटे अनाज और बीज ही मानवता के लिए उम्मीद की किरण साबित हो सकते हैं। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य रामेश्वर प्रसाद सकलानी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया और इसे छात्रों के लिए एक अनूठा अनुभव बताया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक शैलेंद्र दत्त डोभाल, रानी पयाल, जगमोहन सिंह, योगिता रावत, रघुवीर सिंह नेगी, राजेंद्र जोशी, रजनी बड़थ्वाल, हरीश बडोनी, मुकेश बहुगुणा और प्रियंका भंडारी सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

हमारे हर काम के केंद्र में हैं हमारे ग्राहक: अभिनव

देहरादून। अमेजन ने आज घोषणा की कि 2025 प्राइम सदस्यों के लिए अब तक का सबसे तेज डिलीवरी वाला साल रहा। इस दौरान 55 करोड़ से अधिक प्रोडक्ट्स की डिलीवरी उसी दिन या अगले दिन की गई, जो साल-दर-साल आधार पर 40 प्रतिशत की बढ़ोतरी है। भारत में प्राइम सदस्यों ने 2025 में औसतन अपनी सालाना प्राइम मेंबरशिप की कीमत से दो गुना से अधिक की बचत की, जिससे यह साफ होता है कि प्राइम देशभर के ग्राहकों को कितना ज्यादा फायदा देता है। प्राइम के टॉप 10 प्रतिशत सदस्यों ने अपनी मेंबरशिप फीस से आठ गुना से ज्यादा की बचत की। अमेजन इंडिया में प्राइम के डायरेक्टर और हेड, अभिनव अग्रवाल ने कहा, "हमारे ग्राहक हमारे हर काम के केंद्र में हैं और यह देखना हमारे लिए गर्व की बात है।

पूर्व मंत्री धनाई ने चंबा के गांवों में लगाई चौपाल

■ सुरकंडा पेयजल योजना और रोपवे से बदली क्षेत्र की तस्वीर

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। टिहरी विधानसभा क्षेत्र में राजनीतिक सरगर्मियां तेज होने लगी हैं। इसी क्रम में पूर्व कैबिनेट मंत्री दिनेश धनाई ने विकासखंड चंबा के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा कर जन-संवाद कार्यक्रम के तहत ग्रामीणों से सीधा संपर्क साधा। उन्होंने ग्राम पंचायत आराकोट और ग्राम पंचायत गुनोगी बमुण्ड में पहुंचकर चौपाल लगाई और स्थानीय लोगों की समस्याएं सुनीं। इस दौरान पूर्व मंत्री ने अपने कार्यकाल में किए गए विकास कार्यों का लेखा-जोखा जनता के सामने रखा और भरोसा दिलाया कि वे हमेशा सुख-दुख में क्षेत्रवासियों के साथ खड़े रहेंगे। उन्होंने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि उनकी जो भी समस्याएं हैं, उनका प्राथमिकता के आधार पर निराकरण किया जाएगा। बुधवार को आयोजित इस जन-संवाद कार्यक्रम में दिनेश धनाई ने कहा कि क्षेत्र का विकास ही उनकी प्राथमिकता रही है। उन्होंने याद दिलाया कि इस क्षेत्र में सुरकंडा पेयजल योजना की मांग दशकों से लंबित थी, जिसे उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान न केवल स्वीकृत कराया बल्कि धरातल पर उतारकर लोगों की प्यास बुझाने का काम किया। कार्यक्रम में ज्येष्ठ प्रमुख चंबा संजय मैठाणी, पूर्व प्रधान देव पुंडीर, व्यापार मंडल अध्यक्ष चंबा बलबीर पुंडीर, सैनिक कल्याण संगठन के अध्यक्ष संजय रावत, कृष्णा मंमगाई, ग्राम प्रधान आराकोट रामेश्वरी देवी, प्रधान सिलकोटी विनीत पुंडीर, मौजुद रहें।

दीनदयाल उपाध्याय को भाजपाइयों ने दी श्रद्धांजलि

■ विधि विहार स्थित पार्क में आयोजित गोष्ठी में वक्ताओं ने अंत्योदय के विचारों को बताया समाज कल्याण का मूल मंत्र

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। भारतीय राजनीति में सुचिता और अंत्योदय का विचार देने वाले महान विचारक एवं जनसंघ के संस्थापक पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर बुधवार को जिला मुख्यालय पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर आयोजित विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने उनके आदर्शों को आत्मसात करने और समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के उत्थान के लिए कार्य करने का संकल्प लिया। वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि पंडित दीनदयाल का जीवन दर्शन आज भी प्रासंगिक है और युवा पीढ़ी को उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। नगर क्षेत्र के विधि विहार स्थित दीनदयाल पार्क में आयोजित इस श्रद्धांजलि सभा का नेतृत्व भाजपा जिलाध्यक्ष उदय रावत ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्प अर्पित कर की गई। इसके उपरांत उपस्थित कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने एक गोष्ठी के माध्यम से उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। गोष्ठी को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद का जो सिद्धांत दिया, वह भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर आधारित एक ऐसी विचारधारा है जो समाज को जोड़ने का काम करती है। उन्होंने हमेशा यही सिखाया कि राजनीति का उद्देश्य सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि सेवा और समाज के वंचित वर्ग का कल्याण होना चाहिए। इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम में पूर्व मंत्री दिनेश धनाई और पूर्व जिलाध्यक्ष विनोद रतूड़ी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में जिला महामंत्री जीतराम भट्ट, प्रमोद उनियाल, राम लाल नौटियाल, शांति खंडूरी, राजेंद्र डोभाल, तौफीक अहमद, असगर अली और अब्दुल अतीक सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कार्यालय परियोजना प्रबन्धक निर्माण एवं अनुरक्षण इकाई (गंगा), उत्तराखण्ड पेयजल निगम बडकोट-249141
Email-pmgangabarkot@gmail.com

पत्रांक 87/विविध-5/02 दिनांक : 12.02.2026

अल्पकालीन निविदा सूचना

प्रबन्ध निदेशक, उत्तराखण्ड पेयजल संसाधन विकास एवं निर्माण निगम की ओर से विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्यों हेतु मुहर बन्द निविदायें दिनांक 28/02/2026 को अपरान्ह 3.00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है जो कि उसी दिन अपरान्ह 4.00 बजे उपस्थित निविदा दाताओं अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के सम्मुख अधोहस्ताक्षरी/नामित प्रतिनिधि द्वारा खोली जायेगी। निविदा शाखा कार्यालय से दिनांक 27/02/2026 को 5.00 बजे तक क्रय की जा सकती है। निविदा प्रपत्र डाक से मांगने पर निविदा प्रपत्र मूल्य एवं डाक व्यय अतिरिक्त रू० 200.00 (दो सौ) मात्र का डिमान्ड ड्राफ्ट भेजकर जो परियोजना प्रबन्धक, निर्माण एवं अनुरक्षण इकाई बड़कोट, के पदनाम से पेबिल एट उत्तरकाशी हो के साथ निर्धारित तिथि तक भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। विलम्ब से डाक प्राप्त होने पर विभाग जिम्मेदार नहीं होगा।

क्र. सं	योजना का नाम	निविदा का मूल्य बिक्रीकर सहित	निविदा की तिथि	कार्य की अवधि माह	धरोहर धनराशि	न्यूनतम पंजीकरण श्रेणी
1	फूलबार पे० योजना	1000.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	12500.00	डी श्रेणी
2	देवलसारी पे० योजना	1000.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	14500.00	डी श्रेणी
3	बंचाण गांव पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
4	फूलधार खड्ड (गौल) पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	6000.00	डी श्रेणी
5	गटका नामे तोक से सलेटी पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
6	बैलुडका नामे तोक से बसराली पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
7	कोका से टखला पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
8	पनेठी पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
9	सगोली पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	10000.00	डी श्रेणी
10	सिमलसारी बटवेरा पे०	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	8500.00	डी श्रेणी
11	ब्याली पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	8500.00	डी श्रेणी
12	झाटा तोक पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	5500.00	डी श्रेणी
13	खांन्सी पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	7500.00	डी श्रेणी
14	पालुका पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	7500.00	डी श्रेणी
15	घुटक पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9500.00	डी श्रेणी
16	बिल्ला पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
17	बिणाई गाड पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	10000.00	डी श्रेणी
18	बिरंथा पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	8000.00	डी श्रेणी
19	जोशी मोहल्ला (बिल्ला) पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
20	जेस्टवाडी पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	10000.00	डी श्रेणी
21	उपला फोगली पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	5000.00	डी श्रेणी
22	सुनारा पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9000.00	डी श्रेणी
23	रा०प्रा०वि० गोल बनाल पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	9500.00	डी श्रेणी
24	गौल (बनाल) पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	5000.00	डी श्रेणी
25	अरूण (बनाल) पे० योजना	500.00+18% GST	28/03/2026	45 दिन	6500.00	डी श्रेणी

नोटः- धरोहर धनराशि परियोजना प्रबन्धक, निर्माण एवं अनुरक्षण इकाई (गंगा), बड़कोट, के पदनाम से बन्धक करते हुये राष्ट्रीय बचत पत्र पो०ओ० सेविंग बैंक, किसान विकास पत्र, एफ.डी. जनपद उत्तरकाशी से निर्गत / मान्य होगी।

(मानविरेन्द्र सिंह कफोला)
परियोजना प्रबन्धक

खेड़ाजट फायरिंग में दो गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर। कोतवाली मंगलौर क्षेत्र अंतर्गत ग्राम खेड़ाजट में 3 फरवरी 2026 की शाम हुए चर्चित फायरिंग प्रकरण में पुलिस को एक और अहम सफलता हाथ लगी है। मामले में पूर्व में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है, वहीं अब पुलिस टीम ने घटना में शामिल दो अन्य आरोपियों को भी दबोच लिया है।

पुलिस के अनुसार, घटना के बाद से फरार चल रहे आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दी जा रही थी। इसी क्रम में सटीक सूचना और सक्रिय कार्रवाई के चलते पुलिस ने पवन रथी पुत्र नरेंद्र राठी निवासी ग्राम नारसन कला, कोतवाली मंगलौर तथा नितिन उर्फ चिंटू पुत्र कपिल निवासी ग्राम खेड़ाजट, कोतवाली मंगलौर को गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों से पूछताछ की जा रही है और आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है। इस कार्रवाई को सफल बनाने में उप निरीक्षक हेमदत्त भारद्वाज, कांस्टेबल सुधीर और कांस्टेबल पंकज की टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सख्त कार्रवाई जारी रहेगी और प्रकरण में संलिप्त अन्य व्यक्तियों की भी जांच की जा रही है।

बिजली विभाग के खिलाफ गरजे किसान

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। सभारतीय किसान यूनियन (रोड) के राष्ट्रीय अध्यक्ष पदम सिंह रोड ने बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर तीखा प्रहार करते हुए विभाग पर किसानों और ग्रामीणों का उत्पीड़न करने का गंभीर आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि बिजली विभाग की मनमानी और तानाशाही रवैये से किसान और गरीब परिवार बुरी तरह त्रस्त हैं, जिसे किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। विद्युत विभाग कार्यालय में आयोजित धरना-प्रदर्शन के दौरान पदम सिंह रोड ने कहा कि विभाग द्वारा जबरन स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं और उपभोक्ताओं पर बिजली चोरी के झूठे आरोप लगाकर उनका मानसिक और आर्थिक शोषण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पहले से ही महंगाई और फसल के उचित दाम न मिलने से किसान परेशान हैं, ऐसे में बिजली विभाग की सख्ती उनके जख्मों पर नमक छिड़कने जैसा काम कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में बिना उचित जांच-पड़ताल के बिजली चोरी के नाम पर नोटिस थमाए जा रहे हैं और भारी-भरकम जुर्माना लगाया जा रहा है। इससे गरीब परिवारों में भय और आक्रोश का माहौल है। पदम सिंह रोड ने स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी कि यदि बिजली विभाग ने अपनी कार्यप्रणाली में सुधार नहीं किया और किसानों-गरीबों का उत्पीड़न बंद नहीं किया, तो भारतीय किसान यूनियन सड़क से लेकर सदन तक बड़ा आंदोलन करने को मजबूर होगी। उन्होंने कहा कि जरूरत पड़ी तो प्रदेश स्तर पर विशाल धरना-प्रदर्शन और घेराव किया जाएगा, जिसकी पूरी जिम्मेदारी बिजली विभाग और प्रशासन की होगी। धरना-प्रदर्शन में मौजूद किसानों और ग्रामीणों ने भी बिजली विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और अपनी समस्याएं रखीं। किसानों ने मांग की कि जबरन स्मार्ट मीटर लगाने की प्रक्रिया तत्काल रोकी जाए, बिजली चोरी के नाम पर हो रहे उत्पीड़न पर अंकुश लगाया जाए और ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित व पारदर्शी बिजली आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

डीएम व सीडीओ ने दिए प्रेरक संदेश

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। बोर्ड परीक्षार्थियों को कठिन विषयों की सरल एवं प्रभावी तैयारी उपलब्ध कराने हेतु संचालित "मिशन ज्ञान गंगा" की प्रगति की 'आज आयोजित समीक्षा बैठक' में जिला प्रशासन ने इस अभिनव पहल को शिक्षा क्षेत्र में एक सकारात्मक परिवर्तनकारी कदम बताया। बैठक में डिजिटल माध्यम से तैयार किए जा रहे विषयख्रआधारित वीडियो कंटेंट की पहुँच, उपयोगिता एवं प्रभाव पर विस्तार से चर्चा की गई।

समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने कहा कि मिशन ज्ञान गंगा विद्यार्थियों के लिए 'सुगम, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री' उपलब्ध कराने का सशक्त माध्यम बन रहा है। उन्होंने कहा डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से कठिन विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत करना समय की आवश्यकता है। यह पहल विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ा रही है और परीक्षा तैयारी को अधिक व्यवस्थित बना रही है। सामूहिक सहभागिता से यह अभियान और व्यापक रूप लेगा। मुख्य विकास अधिकारी डॉ. ललित नारायण मिश्रा'' ने कहा कि यह मिशन केवल परीक्षा उन्मुख प्रयास नहीं, बल्कि 'अवधारणात्मक समझ विकसित करने की दिशा में एक दूरदर्शी पहल' है। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा व्हाट्सऐप समूहों, फेसबुक पेज और अन्य डिजिटल माध्यमों के जरिए शैक्षिक वीडियो का प्रसार विद्यार्थियों तक ज्ञान की समान पहुँच सुनिश्चित कर रहा है। शिक्षकों और स्वयंसेवी टीम की प्रतिबद्धता सराहनीय है, जो शिक्षा को आधुनिक और प्रभावी बना रही है। डायट रूड़की के प्राचार्य मेराज अहमद ने बताया कि मिशन के अंतर्गत गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषा जैसे विषयों के जटिल अध्यायों को स्थानीय संदर्भ, दृश्यख्रश्रव्य प्रस्तुति और सरल व्याख्या के माध्यम से तैयार किया जा रहा है। उन्होंने कहा विद्यार्थियों की वास्तविक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कंटेंट तैयार किया जा रहा है। प्रारंभिक प्रतिक्रियाएँ अत्यंत उत्साहजनक हैं, जो इस पहल की उपयोगिता को सिद्ध करती हैं। बैठक में मिशन से स्वयंसेवी रूप से जुड़े शिक्षकों और सहयोगी टीम के प्रयासों की सराहना की गई। जिला प्रशासन ने जनपद के सभी शिक्षकों, शिक्षाविदों, विषय विशेषज्ञों तथा यूट्यूबर कंटेंट क्रिएटर्स से आह्वान किया कि वे कक्षाख्रआधारित उपयोगी शैक्षिक वीडियो तैयार कर डायट रूड़की को उपलब्ध कराएं, ताकि इसे व्यापक स्तर पर विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सके।

कुंवर प्रणव सिंह चैंपियन के मुद्दा उठाने के बाद लक्सर में सघन चेकिंग अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। जनपद हरिद्वार में लगातार बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं और अवैध रूप से संचालित वाहनों पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के स्पष्ट निर्देश पर लक्सर क्षेत्र में व्यापक स्तर पर सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। प्रशासन की इस कार्रवाई को हाल के दिनों में हुई दुर्घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में बेहद गंभीर और निर्णायक कदम माना जा रहा है। शासन स्तर से भी स्पष्ट संकेत दिए गए हैं कि नियमों की अनदेखी करने वाले वाहन चालकों और अवैध खनन से जुड़े डंपरों के खिलाफ कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाए।

जिलाधिकारी के निर्देश पर परिवहन विभाग की टीम ने सड़कों पर उतरकर बिना नंबर प्लेट, ओवरलोड तथा नियमों का उल्लंघन कर रहे वाहनों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की। अभियान का नेतृत्व एआरटीओ कृष्ण चंद्र पलड़िया द्वारा किया गया, जबकि एआरटीओ कृष्ण कुमार पडियाल भी स्वयं मौके पर मौजूद रहकर जांच कार्रवाई की निगरानी करते रहे। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि अवैध रूप से संचालित भारी वाहनों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।अब तक 10 से 20 वाहनों को सीज किया जा चुका है, जबकि कई वाहनों के चालान भी काटे गए हैं। प्रशासन ने संकेत दिए हैं कि यह कार्रवाई एक दिन की औपचारिकता नहीं बल्कि निरंतर अभियान का हिस्सा है। प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार, सड़क दुर्घटनाओं में हो रही जनहानि को अत्यंत गंभीरता से लिया गया है और भविष्य में भी ऐसे विशेष अभियान जारी रहेंगे।दो दिन पूर्व खानपुर के पूर्व विधायक कुंवर प्रणव सिंह चौंपियन ने सोशल मीडिया के माध्यम से बिना नंबर प्लेट सड़कों पर दौड़ रहे अवैध खनन से जुड़े डंपरों का मुद्दा प्रमुखता से उठाया था। उन्होंने वीडियो जारी कर शासन-प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग की थी और चेतावनी दी थी कि यदि प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो वह मुख्यमंत्री से मिलकर इस मामले को उठाएंगे।पूर्व विधायक द्वारा मामला सार्वजनिक किए जाने के बाद प्रशासन ने तत्परता दिखाते हुए व्यापक चेकिंग अभियान शुरू किया, जिसे अब जिलाधिकारी के निर्देश पर तेज गति से आगे बढ़ाया जा रहा है।

'पुलिस आपके द्वार' अभियान के तहत छात्राओं को किया जागरूक

महिलाओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता : पुलिस

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा को लेकर हरिद्वार पुलिस लगातार सक्रिय भूमिका निभा रही है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर चलाए जा रहे "पुलिस आपके द्वार" अभियान के अंतर्गत कोतवाली रुड़की पुलिस टीम ने आज दिनांक 11 फरवरी 2026 को मेथोडिस्ट कॉलेज, रुड़की में एक विशेष जागरूकता चौपाल का आयोजन किया।

कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को उनकी सुरक्षा से जुड़े अधिकारों, कानूनों और हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी देना तथा किसी भी आपात स्थिति में तुरंत पुलिस से संपर्क करने के लिए प्रेरित करना रहा। पुलिस अधिकारियों ने छात्राओं से खुलकर संवाद किया और आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने व किसी भी प्रकार की असहज स्थिति में चुप न रहने की सलाह दी। इस अवसर पर उप निरीक्षक अंशु चौधरी ने कहा कि पुलिस का उद्देश्य केवल अपराध होने के बाद कार्रवाई करना नहीं, बल्कि पहले से जागरूकता के माध्यम से अपराध की संभावनाओं को समाप्त करना है। उन्होंने छात्राओं को महिला हेल्पलाइन, साइबर अपराध से बचाव और आत्मरक्षा के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में उप निरीक्षक चंद्रमा, महिला कांस्टेबल दीपा शर्मा एवं कांस्टेबल 51 अमित रावत भी उपस्थित रहे। पुलिस टीम ने छात्राओं के प्रश्नों के उत्तर देते हुए उन्हें हर परिस्थिति में पुलिस सहयोग का भरोसा दिलाया।

कार की चपेट में आकर स्कूटी सवार युवती घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

झबरेड़ा। ग्राम माजरा के पास कार की चपेट में आने से इलेक्ट्रिक स्कूटी सवार दो युवती घायल हो गई ।घायलों को वहां से आने जाने वाले लोगों द्वारा डॉक्टर के यहां भर्ती कराया गया ।परिजनों के आने पर दोनों को रुड़की डॉक्टर के यहां ले जाया गया। ग्राम बिलासपुर निवासी दो युवती स्कूटी से रुड़की किसी काम से जा रही थी। जैसे ही वह ग्राम माजरा मोड पर आई तो एक कार की चपेट में आ गई। कार की चपेट में आने से स्कूटी सवार दोनों युवती गीता व माही स्कूटी सहित सड़क पर गिर गई तथा घायल हो गई। दोनों घायलों को वहां से आने जाने वाले लोगों द्वारा डॉक्टर के यहां ले जाया गया। बाद में युवती के परिजनों के आने पर घायलों को रुड़की डॉक्टर के यहां इलाज हेतु भर्ती कराया गया है।

समाजसेवी को जान से मारने की धमकी, फार्म हाउस से मजदूर भगाए

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर। कोतवाली मंगलौर क्षेत्र के ग्राम झबीरण में एक वर्षीय सेवानिवृत्त उप शिक्षा निदेशक एवं समाजसेवी ने गांव के ही एक व्यक्ति पर लगातार धमकाने, गाली-गलौज करने, फार्म हाउस पर काम रुकवाने और सरकारी सोलर लाइट चोरी कराने जैसे गंभीर आरोप लगाते हुए पुलिस से कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

पीड़ित का कहना है कि पूर्व में दर्ज मुकदमे के बाद से आरोपी रंजिश रखे हुए है और मुकदमा वापस लेने का दबाव बना रहा है। ग्राम झबीरण निवास अतर सिंह, ने बताया कि उन्होंने पूर्व में ग्राम कुरड़ी-झबीरण रोड पर लगे एक सरकारी हैंडपंप की चोरी के मामले में प्रशांत उर्फ मोनू पुत्र चन्द्रभान के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। इस मामले में मंगलौर कोतवाली में मु0अ0सं0 0392/24 पंजीकृत हुआ था। आरोप है कि तभी से प्रशांत उर्फ मोनू उनसे रंजिश रखने लगा और मुकदमा वापस लेने के लिए दबाव बनाने लगा।आरोपी कई बार पीड़ित के साथ अभद्र व्यवहार कर सके। पीड़ित का कहना है कि आरोपी का क्षेत्र में प्रभाव होने के कारण ग्रामीण खुलकर गवाही देने से कतराते हैं। उन्होंने प्रभारी निरीक्षक, कोतवाली मंगलौर से आरोपी के विरुद्ध गाली-गलौज, जान से मारने की धमकी, कार्य में बाधा पहुंचाने एवं चोरी जैसे गंभीर आरोपों में सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है इसके आधार पर निष्पक्ष जांच व कठोर कार्रवाई की मांग की है

सोलर प्लांट में चोरी का विरोध करने पर मारपीट

शाह टाइम्स संवाददाता

झबरेड़ा। थाना क्षेत्र के गांव निवासी एक व्यक्ति द्वारा थाने में तहरीर देकर तीन लोगों पर गाली गलोच व मारपीट करने तथा सोलर प्लांट में चोरी करने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। ग्राम भलस्वागाज निवासी राजीव राणा द्वारा थाने में तहरीर देकर बताया कि वह ग्राम भलस्वा गाज के पास स्थित सोलर प्लांट में ए एस ओ सुरक्षा कर्मी के पद पर कार्य करता हूं। दो फरवरी की रात्रि लगभग 12:00 बजे प्लांट में ड्यूटी दे रहे सुरक्षा गार्ड सुपरवाइजर ओवन कुमार राउंड पर थे। उसने देखा कि प्लांट में तीन लोग वायर काट कर चोरी करने का प्रयास कर रहे हैं। सुपरवाइजर द्वारा उक्त लोगों को चोरी करते देखा तो शोर मचा दिया ।शौर होने पर उक्त तीनों लोग वहां से खेतों की तरफ चले गए। सुपरवाइजर द्वारा मुझे फोन कर बुलाया। घटनास्थल पर पहुंचा तो घटनाक्रम की जानकारी मिलते ही वह कुछ लोगों को लेकर वायर काट रहे लोगों का पीछा कर उन्हें प्लांट से लगभग 100 मीटर दूर गन्ने के खेत में पकड़ लिया ।उक्त तीनों विमल कुमार सुमित कुमार व मुकेश कुमार ग्राम बाल्लूपुर निवासी थे। सोलर प्लांट में चोरी करने के संबंध में पूछताछ करने पर उक्त लोगों द्वारा हमारे साथ गाली गलोज व मारपीट कर भाग गए। उक्त लोगों में सुमित कुमार पूर्व में इसी प्लांट में हमारे साथ ही नौकरी करता था। जिसे चोरी करने के शक में हटा दिया गया था ।जिससे उक्त लोग पहले से ही हमारे साथ रंजिश रखते हैं। थानाध्यक्ष अजय शाह का कहना है कि तहरीर के आधार पर संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

4.5 ग्राम स्मैक के साथ एक तस्कर को दबोचा

शाह टाइम्स संवाददाता

भगवानपुर। जनपद में मादक पदार्थों की तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए हरिद्वार पुलिस लगातार सख्त अभियान चला रही है। इसी कड़ी में कोतवाली भगवानपुर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए एक स्मैक तस्कर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 4.5 ग्राम अवैध स्मैक बरामद की है। गिरफ्तार आरोपी पूर्व में भी एनडीपीएस एक्ट के मामले में जेल जा चुका है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 10 फरवरी 2026 को प्रभारी निरीक्षक भगवानपुर के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा क्षेत्र में चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था। इसी दौरान ईदगाह कॉलोनी, भगवानपुर क्षेत्र से संदिग्ध अवस्था में घूम रहे जब्बार उर्फ कल्लू पुत्र जफर निवासी ईदगाह कॉलोनी शाहपुर, भगवानपुर, जनपद हरिद्वार को रोककर तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान उसके पास से 4.5 ग्राम अवैध स्मैक बरामद हुई। पुलिस ने आरोपी को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया तथा उसके विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। कार्रवाई को अंजाम देने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक प्रदीप चौहान, कांस्टेबल दीपक ममंगाई और कांस्टेबल राजेन्द्र वर्मा शामिल रहे। पुलिस का कहना है कि "ड्रग्स फ्री देवभूमि अभियान" के तहत मादक पदार्थों की तस्करी करने वालों के खिलाफ आगे भी सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

देहरादून में 16 फरवरी को विधानसभा घेराव करेंगे कांग्रेसी

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। कांग्रेस जिला अध्यक्ष बालेश्वर सिंह के नेतृत्व में एक मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें 16 फरवरी को देहरादून भारी संख्या में चलने का आह्वान किया। हरिद्वार ग्रामीण कांग्रेस जिला अध्यक्ष बालेश्वर सिंह ने कहा कि 16 फरवरी को सभी देहरादून में विधानसभा घेराव करेंगे। उन्होंने कहा डबल इंजन की सरकार लोगों को गुमराह कर रही हैं उन्होंने कहा केंद्र सरकार द्वारा मनरेगा योजना का नाम बदल दिया गया है और आहिस्ता आहिस्ता उसको खत्म करने की साजिश है उन्होंने कहा डबल इंजन की सरकार ने लोगों की नौकरी खत्म कर दी है कोई विकास कार्य इनके पास नहीं है इनके द्वारा अभी तक क्षेत्र में कोई विकास कार्य बड़ा नहीं किया गया है। उन्होंने कहा यह डबल इंजन की सरकार स्कूल बनाने की बजाए स्कूल बंद कर रही है उन्होंने यह भी कहा कि यह सरकार कुछ दिनों की मेहमान है उन्होंने सभी को यह भी कहा कि 16 फरवरी को देहरादून में सभी कार्यकर्ता ज्यादा से ज्यादा संख्या में देहरादून पहुंचे जिससे इस सरकार के पैर उखड़ जाएं वहां पर मीटिंग में जो मुख्य व्यक्ति मौजूद थे उनमें गुफरान अंसारी विनोद कुमार फिरोज सिद्दीकी अकिल हसन जगदेव सिंह उर्फ जग्गी ताहिर हसन संजय सैनी जिला पंचायत मेंबर रईस अहमद प्रधान बाबा रवि चौधरी एहसान आदि दर्जनों कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल रहे।

बच्चों के विवाद में बड़ों में हुई मारपीट

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। सिविल लाइन कोतवाली क्षेत्र में एक मामूली विवाद ने अचानक हिंसक रूप ले लिया। इमली रोड पर बच्चों के बीच शुरू हुई कहासुनी ने देखते ही देखते दो पक्षों के परिवारों को आमने-सामने ला खड़ा किया। विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों ओर से लाठी-डंडे चलने लगे और हालात बेकाबू हो गए।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि, पहले बच्चों में बहस हुई थी, लेकिन कुछ ही देर में उनके परिजन भी मौके पर पहुंच गए। दोनों पक्षों के बीच तीखी नोकझोंक के बाद मारपीट शुरू हो गई। आरोप है कि कुछ लोग एक-दूसरे के घरों तक पहुंच गए और वहां भी हाथापाई की। इलाके में अफरा-तफरी मच गई और लोग दहशत में अपने घरों में दुबक गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। भीड़ को तितर-बितर करने और स्थिति को काबू में करने के लिए पुलिस को हल्का बल प्रयोग करना पड़ा। पुलिस ने कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। फिलहाल पूरे मामले की जांच की जा रही है और क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस तैनात शुरुआती जानकारी के अनुसार बच्चों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हुई थी। बाद में उनके परिवार के लोग भी इसमें शामिल हो गए, जिससे मामला बढ़ गया। फिलहाल स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है और मामले की जांच जारी है।

खोया-पाया-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है की मेरे बैनामे की मूल प्रति जहूर हसन पुत्र रफीक रियासत अली पुत्र जलालुद्दीन तस्लीम पुत्र जमील हसन वॉल्यूम नंबर 1202 पेज 53 से 72 सीरियल नंबर 4847 दिनांक 19. 06. 2012 वास्वत में कहीं खो गया है जिसका प्रयोग किसी दूसर को अवैध होगा।

फुरकान पुत्र अब्दुल हमीद नि. बसेड़ी खादर तह. लक्सर, हरिद्वार

आईआईटी रुड़की के शोध में हिमालयी मौसम में बड़े बदलाव के संकेत

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रुड़की के ताजा शोध ने हिमालयी क्षेत्र की मौसम प्रणालियों में उभरते जलवायु संकेतों का खुलासा करते हुए पश्चिमी विक्षोभों के बदलते स्वरूप पर गंभीर चिंता जताई है। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्लाइमेटोलॉजी में प्रकाशित इस अध्ययन में पाया गया कि पारंपरिक रूप से शीतकालीन हिमपात से जुड़े पश्चिमी विक्षोभ अब प्री-मानसून अवधि में भी अधिक सक्रिय हो रहे हैं, जिससे वर्षा के मौसमी संतुलन में परिवर्तन आ रहा है। शोध के अनुसार जलवायु ऊष्मायन के प्रभाव से ये मौसम प्रणालियाँ लंबी दूरी तय कर अधिक नमी एकत्रित कर रही हैं, जिसके कारण मार्च से मई के बीच वर्षा में वृद्धि देखी जा रही है। इससे हिमालय की नाजुक पारिस्थितिकी में अचानक बाढ़, भूस्खलन और अत्यधिक वर्षा जैसी आपदाओं का जोखिम बढ़ सकता है, साथ ही निचले क्षेत्रों में जल उपलब्धता भी प्रभावित हो सकती है। सात दशकों से अधिक के वायुमंडलीय और वर्षा संबंधी आंकड़ों के विश्लेषण में शोधकर्ताओं ने पश्चिमी विक्षोभों के मार्ग, संरचना और व्यवहार में स्पष्ट बदलाव दर्ज किए हैं। इनमें तेज ऊपरी हवाएँ, अधिक नमी अवशोषण और पारंपरिक शीतकालीन अवधि से बाहर भी वर्षा की तीव्रता शामिल है। जल विज्ञान विभाग की पीएचडी शोधार्थी स्पंदिता मित्रा ने कहा कि अनियमित वर्षा और अचानक चरम मौसम घटनाएँ इन व्यापक वायुमंडलीय परिवर्तनों को दर्शाती हैं। उन्होंने 2023 की हिमाचल बाढ़ और 2025 की उत्तराखंड बाढ़ को ऐसे बढ़ते प्रभावों का उदाहरण बताया। प्रधान अन्वेषक प्रो. अंकित अग्रवाल ने कहा कि पश्चिमी विक्षोभों में हो रहे मौसमी और संरचनात्मक परिवर्तन जल संसाधनों, आपदा जोखिम और क्षेत्रीय संवेदनशीलता पर दूरगामी असर डाल सकते हैं। वहीं, आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. के.के. पंत ने वैज्ञानिक निष्कर्षों को नीति निर्माण और आपदा तैयारी से जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया। अध्ययन हिमालयी राज्यों के लिए जलवायु मॉडल, पूर्वानुमान तंत्र और आपदा प्रबंधन रणनीतियों की पुनर्समीक्षा की तात्कालिक जरूरत को रेखांकित करता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि बदलते मौसम पैटर्न से निपटने के लिए विज्ञान, शासन और अवसंरचना के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक होंगे, ताकि संवेदनशील पर्वतीय क्षेत्रों में जीवन, आजीविका और पारिस्थितिकी तंत्र सुरक्षित रह सकें।

श्री साईं सेवा मण्डल ने लगाया रक्तदान शिविर

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। श्री साईं सेवा मण्डल ट्रस्ट (रजि.) रुड़की द्वारा चावमंडी स्थित गौशाला परिसर में 10वें रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में शहरवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और कुल 117 रक्तदाताओं ने रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया।

कार्यक्रम में पहुंचे विधायक प्रदीप बत्रा ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा महादान है, जो जरूरतमंदों को नया जीवन देता है। उन्होंने साईं सेवा मण्डल के इस सामाजिक प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन समाज में सेवा और सहयोग की भावना को मजबूत करते हैं तथा युवाओं को भी प्रेरित करते हैं। व्यापार मण्डल अध्यक्ष एवं मंडल के संरक्षक अरविन्द कश्यप ने कहा कि रक्तदान एक पुनीत कार्य है और हर स्वस्थ व्यक्ति को समय-समय पर रक्तदान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि साईं सेवा मण्डल द्वारा लगातार ऐसे शिविर आयोजित कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई जा रही है, जो अत्यंत सराहनीय है। इस दौरान चौम्पियन सूरज रोड, पूर्व मेयर गौरव गोयल, साईं सेवा मण्डल अध्यक्ष पारस सोई, महासचिव खुशहाल मिगलानी, कोषाध्यक्ष नितिन चौहान, मुख्य सदस्य जीतेश ग्रोवर, अंकुर सखूजा, सचिन अरोड़ा, सुमित अरोड़ा, नीटू आहूजा, रोहित कुमार, अरुण कुमार, सौरभ सबरवाल, रवि सोनकर, अंशुल मित्तल, अंशुल सोनकर, रोहित कुकरेजा सहित ट्रस्ट के सभी सदस्य मौजूद रहे

Dainikshahtimes@gmail.com For Articles

ट्रेड पर रार

बुधवार को लोकसभा में राहुल गांधी ने बजट 2026 पर चर्चा में भाग लिया। उन्होंने अमेरिका संग हालिया ट्रेड डील से लेकर वैश्विक मुद्दों पर अपनी बात रखी। राहुल गांधी ने आम बजट और वित्त मंत्रालय की ओर से पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण का जिक्र किया, उनका कहना था कि इसमें उन्हें मुख्य रूप से दो बिन्दु दिखाई दिए, पहला बिन्दू बताता है कि हम ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहां भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता बढ़ती जा रही है। इसका मतलब है कि अमेरिका को आज रूस व चीन से बड़ी चुनौती मिल रही है। जहां ऊर्जा और वित्त को हथियार बना लिया गया है। राहुल का यह भी कहना था कि आज हम स्थिरता वाली दुनिया से अस्थिरता वाली दुनिया में जा रहे हैं। ऐसा कहते हुए उन्होंने रूस और इरान का उदाहरण दिया और याद दिलाया कि पीएम और एनएसए ने कुछ समय पहले कहा था कि युद्ध का समय अब खत्म हो चुका है, लेकिन यूक्रेन में संघर्ष जारी है और इरान में संघर्ष हो रहा है। यानि में स्थिरता से अस्थिरता की ओर जा रहे हैं। उन्होंने भारत का जिक्र करते हुए कहा कि देश की 140 करोड़ जनता के सामने आज चुनौतियां काफी अलग हैं। डॉलर को चुनौती दी जा रही है। जैसाकि मेरे कुछ दोस्त समझते हैं। इस तरह हम दो सुपर या कई सुपर पॉवर वाले दौर में जा रहे हैं। उन्होंने अमेरिकी ट्रेड पर भी खुलकर बात की। ट्रेड को लेकर अभी मिली जुली प्रतिक्रिया आ रही है। अमेरिका की तरफ से नई-नई बातें सामने आ रही हैं, जो कई बार भारत को भी असहज करती हैं। अमेरिका ने भारत के साथ हुई हालिया ट्रेड डील पर जारी फैक्ट शीट में फिर बदलाव किए हैं और पहले जिन बातों का साफ जिक्र था अब उन्हें हटा दिया गया है या उसकी भाषा बदल दी गई है। सबसे बड़ा बदलाव दाल को लेकर है। पहले कहा गया था कि भारत-अमेरिकी औद्योगिक और कृषि उत्पादों पर टैरिफ कम या खत्म करेगा जिसमें दाल भी शामिल थी, अब नए दस्तावेज से दाल का जिक्र हटा दिया गया है। इसी तरह 500 अरब डॉलर की खरीद को लेकर भी भाषा बदल गई है। पहले लिखा था कि भारत अमेरिका से 500 अरब डॉलर का सामान खरीदने के लिए कमिटिड है, अब इसे बदलकर इरादा रखता है कर लिया गया है। भारत रूस से तेल का आयात दोबारा शुरू न करे इस पर निगरानी के लिए ट्रम्प ने तीन मंत्रियों की एक टास्क फोर्स का गठन किया है। इसमें वाणिज्य मंत्री, विदेश मंत्री व वित्त मंत्री शामिल हैं। अगर इनको लगता है कि भारत ने रूस से तेल का दोबारा इम्पोर्ट शुरू कर दिया है तो वह राष्ट्रपति ट्रम्प से दोबारा 25 फीसदी पैनल्टी लगाने के लिए कह सकते हैं। राहुल गांधी भी सरकार को ट्रेड पर घेर रहे हैं और उनकी नजर में भारत डॉलर को चुनौती देने के बजाए उसको मजबूती देने में लगा हुआ है।

अस्थिरता वाली दुनिया में जा रहे हम

हम ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहां भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता बढ़ती जा रही है, यानी जो अमेरिका आधारित सिस्टम था, उसे चुनौती मिल रही है, उसे अब रूस और चीन फिर से चुनौती दे रहे हैं, दूसरा- हम ऐसी दुनिया में रह रहे हैं, जहां ऊर्जा और वित्त को हथियार बना लिया गया है, हम स्थिरता वाली दुनिया से अस्थिरता वाली दुनिया में जा रहे हैं, प्रधानमंत्री और एनएसए ने कुछ समय पहले चौंकाने वाले रूप से कहा था कि युद्ध का समय अब खत्म हो चुका था, लेकिन यूक्रेन में संघर्ष जारी है, ईरान में संघर्ष हो रहा है, यानी हम स्थिरता से अस्थिरता की तरफ जा रहे हैं, देश की 140 करोड़ जनता के सामने आज चुनौतियां काफी अलग हैं, हमने ऑपरेशन सिंदूर किया था, तो हम अस्थिरता की दुनिया में जा रहे हैं, हम सुपरपावर वाली दुनिया से किसी नई दुनिया में जा रहे हैं, जिसका हम अंदाजा नहीं लगा सकते।

-राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता

मन के विकार के निदान में उदासीनता

पंकज चतुर्वेदी

विकसित भारत के सामने आज जो प्रमुख चुनौतियां हैं उनमें सबसे ऊपर युवाओं की बिगड़ती मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति है। बकौल इंडियन साइकियाट्रिक सोसायटी देश में मानसिक विकारों के 60 प्रतिशत मामले 35 वर्ष से कम उम्र के युवाओं में पाए जा रहे हैं। इन युवाओं के सामने काम का बदता दवाब, प्रतिस्पर्धा, बेरोजगारी, सामाजिक अपेक्षाओं जैसे पृष खड़े हैं और इनसे जूझते समय बड़ी संख्या में वे अवसाद , बैचेनी की गिरफ्त में आ जाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इस तरह के मानसिक विकार होने पर रोगी समझ ही नहीं पाता कि उसके मन के साथ कुछ असामान्य है। कहने की जरूरत नहीं कि जिस तरह मानसिक रोग तेजी से फाइल रहे हैं, हमारे पास उस तुलना में चिकित्सक और इलाज के विकल्प गौण हैं। यही वजह है कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी बीमारियां देश की बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती बन गई है।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण स्वीकार कर रहा है कि माकूल उपचार अधिकांश मरीजों की पहुंच से बाहर है। लैंसेट साइकियाट्री जर्नल में प्रकाशित ग्लोबल बर्डन आफ डिजीज स्टडी के अनुसार वर्ष 2017 में भारत में19।73 करोड़ लोग (कुल आबादी का लगभग 14.3 प्रतिशत) किसी न किसी मानसिक विकार से पीड़ित थे। इनमें 4.57 करोड़ अवसाद और 4.49 करोड़ बैचेनी के शिकार हैं । बेंगलुरु के नेशनल इंस्टीट्यूट आफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेस (निमहांस) के सर्वे में सामने आया है कि 13 से 17 वर्ष वाले लगभग 7.3 प्रतिशत किशोर किसी न किसी मानसिक विकार से पीड़ित हैं। प्रतिस्पर्धा, परीक्षा-दबाव, सामाजिक अपेक्षाएं व डिजिटल जीवन-शैली इसके प्रमुख कारण हैं। सर्वाधिक खराब हालत राजधानी दिल्ली के हैं जहां 11.23 फीसदी आबादी मानसिक बीमारियों से जूझ रही है। यह बात दिल्ली सरकारी की सन 2025 की सालाना सांख्यिकी रिपोर्ट में कही गई है। रिपोर्ट कहती हैं कि राजधानी में कोई सात फीसदी लोगों का बौद्धिक विकास नहीं हो पाया है, जिससे उनके सीखने और रोजमर्रा के जीवन में कठिनाइयां झेलनी पड़ रहीं। अवसाद, चिंता और सिजोफ्रेनिया जैसी गंभीर मानसिक बीमारी से प्रभावित लोगों की संख्या 4.28 फीसदी हैं। मानसिक रोग विशेषज्ञ कहते हैं कि दिल्ली में अकेलापन, सामाजिकता का अभाव के साथ -साथ प्रदूषण, ट्राफिक जाम , आर्थिक असमानता जैसे कारण तेजी से मानसिक रोगों को बढ़ा रहे हैं। बात अकेले राजधानी की नहीं हैं , देश के दूरस्थ अंचलों में छोटे गांव तक मानसिक विकार का विस्तार बेहद खतरनाक है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) द्वारा पश्चिम बंगाल के कृषि प्रधान क्षेत्रों में किया गया एक धीयन इसके मूल कारणों पर प्रकाश डालता है। अध्ययन कहता है कि जिन किसानों के खेतों में सप्ताह में एक बार कीटनाशक का छिड़काव होता है, उनमें डिप्रेशन, याददाश्त में कमी और रोजमर्रा की गतिविधियों में गिरावट का खतरा तीन गुना तक बढ़ जाता है। इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईजेएमआर) में प्रकाशित इस अध्ययन में आईसीएमआर का सरकार को सुझाव है कि किसानों को कीटनाशक छिड़कते समय सुरक्षा उपाय अनिवार्य किए जाएं , साथ ही ग्रामीण इलाकों में कीटनाशक-जनित मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य निगरानी कार्यक्रम शुरू किए जाएं। विश्व स्वास्थ्य संगठन और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के एक शोध में कुछ साल पहले ही बताया दिया था कि देश में चौथी सबसे बड़ी बीमारी अवसाद या डिप्रेशन है। आज देश की सबसे बड़ी दूसरी बीमारी हार्ट अटैक के बाद अवसाद को कहा जा रहा है। बढ़ती जरूरतें, जिंदगी में बढ़ती भागदौड़, रिश्तों के बंधन ढ़ीले होनाय इस दौर की कुछ ऐसी त्रासदियां हैं जो इंसान को भीतर ही भीतर खाए जा रही है। ये सब ऐसे विकारों को आमंत्रित कर रहा है, जिनके प्रारंभिक लक्षण नजर आते नहीं हैं, जब मर्ज बढ़ जाता है तो बहुत देर हो चुकी होती है। विडंबना है कि सरकार में बैठे नीति-निर्धारक मानसिक बीमारियों को अभी भी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। इसे हास्यास्पद कहें या शर्म कि जय विज्ञान के युग में मनोविकारों को एक रोग के बनिस्पत ऊपरी व्याधा या नियति समझने वालों की संख्या बहुत अधिक है। तभी ऐसे रोगों के इलाज के लिए डाक्टरों के बजाए पीर-फकीरों, मजार-मंदिरों पर अधिक भीड़ होती है । सामान्य डाक्टर मानसिक रोगों को पहचानने और रोगियों को मनोचिकित्सक के पास भेजने में असमर्थ रहते हैं। इसके चलते ओझा, पुरोहित, मौलवी, तथाकथित यौन विशेषज्ञ अवैध रूप से मनोचिकित्सक का दुष्कार्य कर रहे हैं। वैसे भारत में सन 1982 में मानसिक स्वास्थ कार्यक्रम शुरू हुआ था लेकिन इसकी मंथर गति ने रोग को भयानक बना दिया। इतने लोगों के इलाज के लिए कोई 32 हजार मनोचिकित्सकों की जरूरत है, जबकि देशभर में इनकी संख्या बमुश्किल नौ हजार है यानी एक लाख पर एक से भी कम औसतन 0.75 डाक्टर। इनमें भी तीन हजार तो चार महानगरों तक ही सिमटे हैं। यह रोग भयावह है और इसका इलाज भी लंबे समय तक चलता है जोकि खर्चीला भी है। इसके बावजूद कोई भी स्वास्थ्य बीमा योजना में इसे शामिल नहीं किया गया। 15 जून 2020 को सुप्रीम कोर्ट से बीमा नियामक संस्था से यह पूछा भी है कि मानसिक रोग को बीमा सुविधा क्यों नहीं है। उधर सरकारी स्तर पर स्वास्थ्य सेवाएं बिल्कुल उपेक्षित हैं। हालांकि इस साल के बजट में इस दिशा में बहुत ध्यान दिया गया है । देश भर में 24 इनटू 7 परामर्श सेवाओं के लिए राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (टेली मानस) मद में 51.14 करोड़ रुपये का प्रावधान है। इसके अलावा निम्हान्स बेंगलुरु को अनुसंधान, प्रशिक्षण और देखभाल के मद में पिछले वर्षों से लगभग दोगुना 917.21 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई रीजनल इंस्टिट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ, तेजपुर: 69.32 करोड़ रुपये, क्षेत्रीय मनोरोग सेवाओं की सहायता। जहां एक ओर मर्ज बढ़ता जा रहा है, वहीं हमारे देश के मानसिक रोग अस्पताल सौ साल पुराने पागलखाने के खौफनाक रूप से ही जाने जाते हैं। यह जर्जर, डरावनी और संदिग्ध इमारतें मानसिक रोगियों की यंत्रणाओं, उनके प्रति समाज के उपेक्षित रवैये और सरकारी उदासीनता की मूक गवाह हैं। तभी सन 2017 में 10,246 और सन 2018 में 10,134 मानसिक रोगियों ने आत्महत्या कर ली थी। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग मानता रहा है कि देश भर के पागलखानों की हालत बदतर है। इसे सुधारने के लिए कुछ साल पहले बंगलौर के राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ और चेतना विज्ञान संस्थान (निमहान्स) मे एक परियोजना शुरू की गई थी, लेकिन उसके किसी सकारात्मक परिणाम की जानकारी नहीं है। यह परियोजना भी नाकाफी संसाधनों का रोना रोते हुए फाइलों में ठंडी हो गई। हमारे देश की सवा अरब को पार कर गई आबादी के लिए केवल 43 सरकारी मानसिक रोग अस्पताल हैं, इनमें से मनोवैज्ञानिक इलाज की व्यवस्था महज तीन जगह ही है। इन अस्पतालों में 21,000 बिस्तर हैं जो जरूरत का एक फीसदी भी नहीं है। यहां तक कि जरूरत की पचास फीसदी नर्स भी उपलब्ध नहीं हैं। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ कार्यक्रम की एक रिपोर्ट भी इस बात का प्रमाण है कि ऐसे रोगियों की बड़ी संख्या इलाज का खर्च उठाने में असमर्थ है। सरकारी अस्पतालों के नारकीय माहौल में जाना उनकी मजबूरी होता है । आज भी अधिकांश मानसिक रोगी बगैर इलाज के अपने हाल में अमानवीय हालात में जीने को मजबूर हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

नई मच्छरदानी दोहरी सुरक्षा देगी

वैसे कुछ वर्ष पूर्व भी WHO ने एक नए प्रकार की मच्छरदानी को सीमित स्वीकृति प्रदान की थी। इस मच्छरदानी में पाएरेथ्रॉइड के साथ पीबीओ का उपयोग किया गया था जो मच्छरों की पाइरेथ्रॉइड का विघटन करने की क्षमता को खत्म करता है। ये केवल पाइरेथ्रॉइड मच्छरदानी की तुलना में काफी महंगी थीं और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा था कि इनके उपयोग से मलेरिया के प्रकोप में कमी से जितना फायदा होता है।

वह इनकी लागत के हिसाब से कम है। क्लोरफेनापिर ने इस समस्या को दूर कर दिया है। तंजानिया और बेनिन में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि नई मच्छरदानियों के उपयोग से बच्चों में मलेरिया का प्रकोप लगभग आधा रह गया अर्थात इन मच्छरदानी के उपयोग में होना वाला खर्च मलेरिया उपचार की लागत से काफी कम साबित हुआ जो WHO द्वारा अनुमोदन के लिए पर्याप्त कारण था।

हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नए कीटनाशक मिश्रण से उपचारित मच्छरदानी के उपयोग का अनुमोदन किया है। इस नई मच्छरदानी में ऐसे दो रसायनों का उपयोग किया गया है जो मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों को अधिक प्रभावी ढंग से खत्म करने में सक्षम है। जल्द ही यह उपचारित मच्छरदानी उप सहारा अफ्रीका में व्यापक रूप से उपलब्ध हो जाएगी जहां पिछले वर्ष मलेरिया से 6 लाख से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। कीटनाशक उपचारित मच्छरदानी का डबल फायदा है।

इसके अंदर सोता व्यक्ति तो सुरक्षित रहता ही है, इस पर बैठने वाले मच्छरों का भी खात्मा हो जाता है। 2000 से 2015 के बीच मलेरिया के प्रकोप में 40 प्रतिशत गिरावट का श्रेय उपचारित मच्छरदानियों को जाता है, लेकिन मच्छर इनमें प्रयुक्त पाएरेथ्रॉइड नामक कीटनाशक के प्रतिरोधी हो चले थे। नई अनुमोदित मच्छरदानी में पाएरेथ्रॉइड के साथ क्लोरफेनापिर का उपयोग किया गया है। क्लोरफेनापिर मच्छरों के माइटोकॉन्ड्रिया को निशाना बनाता है जिसके चलते मांसपेशियों में मरोड़ पैदा होती है और मच्छर हिलडुल या उड़ नहीं पाते हैं।

वैसे पिछले वर्ष भी WHO ने एक नए प्रकार की मच्छरदानी को सीमित स्वीकृति प्रदान की थी। इस मच्छरदानी में पाएरेथ्रॉइड के साथ पीबीओ का उपयोग किया गया था जो मच्छरों की पाइरेथ्रॉइड का विघटन करने की क्षमता को खत्म करता है। ये केवल पाइरेथ्रॉइड मच्छरदानी की तुलना में काफी महंगी थीं और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा था कि इनके उपयोग से मलेरिया के प्रकोप में कमी से जितना फायदा होता है।

वह इनकी लागत के हिसाब से कम है। क्लोरफेनापिर ने इस समस्या को दूर कर दिया है। तंजानिया और बेनिन में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि नई मच्छरदानियों के उपयोग से बच्चों में मलेरिया का प्रकोप लगभग आधा रह गया अर्थात इन मच्छरदानी के उपयोग में होना वाला खर्च मलेरिया उपचार की लागत से काफी कम साबित हुआ जो WHO द्वारा अनुमोदन के लिए पर्याप्त कारण था। गौरतलब है कि क्लोरफेनापिर का उपयोग सबसे पहले अमेरिका में वर्ष 2001 में गैर खाद्य फसलों के लिए ग्रीन हाउसों में किया गया था। पक्षियों और जलीय जीवों में विषाक्तता के कारण खेतों पर इसके छिड़काव पर प्रतिबंध है। चूंकि इस मच्छरदानी का उपयोग घर के अंदर किया जा रहा है और व्यापक पर्यावरण से इसका सीमित संपर्क है इसलिए पर्यावरण की दृष्टि से इसे सुरक्षित माना जा रहा है।

विशेषज्ञों की चेतावनी है कि देर सबेर मच्छरों में क्लोरफेनापिर के खिलाफ भी प्रतिरोध उभरना तय है। इसलिए प्रतिरोध पैदा होने की रफ्तार को धीमा करने की तकनीकें विकसित करना महत्वपूर्ण होगा। इसके लिए नई मच्छरदानियों के साथ-साथ घरों में अंदर कीटनाशक छिड़काव या कुछ वर्षों के लिए पाइरेथ्रॉइड पीबीओ मच्छरदानियों का उपयोग भी करते रहना ठीक होगा।

दो पिता की संतान, पुरुष भी पैदा कर सकेगा अपनी जैविक संतान!

हिन्दी फिल्मों में एक बाप की औलाद की बात कई मर्तबा की जाती है और माना जाता है कि वही सच्ची औलाद होती है। लेकिन यहां बात उस संवाद के संदर्भ में नहीं बल्कि वैज्ञानिकों द्वारा नर की कोशिकाओं से अंडे के निर्माण की हो रही है। लंदन में हाल ही में सम्पन्न तृतीय अंतर्राष्ट्रीय मानव जीनोम संपादन सम्मेलन में यह जानकारी दी गई कि शोधकर्ताओं ने नर चूहों की कोशिकाओं से अंडे बना लिए और जब उन्हें निषेचित करके मादा चूहे के गर्भाशय में रखा गया तो उनसे स्वस्थ संतान पैदा हुई और वे स्वयं संतानोत्पत्ति में सक्षम थीं। यह करामात करने के लिए शोधकर्ता बरसों से प्रयास कर रहे थे। मसलन, 2018 में एक टीम ने खबर दी थी कि उन्होंने शुक्राणु या अंडाणु से प्राप्त स्टेम कोशिकाओं से पिल्ले पैदा किए थे जिनके दो पिता या दो माएं थीं।

दो मांओं वाले पिल्ले तो वयस्क अवस्था तक जीवित रहे और प्रजननक्षम थे लेकिन दो पिता वाले पिल्ले कुछ ही दिन जीवित रहे थे। फिर 2020 में कात्सुहिको हयाशी ने बताया था कि किसी कोशिका को प्रयोगशाला के उपकरणों में परिपक्व अंडे में विकसित होने के लिए किस तरह के जेनेटिक परिवर्तनों की जरूरत होती है। इसी टीम ने 2021 में खबर दी कि वह चूहे के अंडाशय की परिस्थितियां निर्मित करके अंडे तैयार करने में सफल रही और इन अंडों ने प्रजननक्षम संतानें भी उत्पन्न कीं। अब हयाशी और उनके साथियों ने कोशिश शुरू कर दी कि वयस्क नर चूहे की कोशिकाओं से अंडे विकसित किए जाएं। उन्होंने इन कोशिकाओं को इस तरह परिवर्तित किया कि वे प्रेरित बहुसक्षम कोशिकाएं बन गईं। टीम ने इन कोशिकाओं को कल्चर में पनपने दिया जब तक कि उनमें से कुछ कोशिकाओं ने स्वत: अपना वाय गुणसूत्र गंवा नहीं दिया। जैसा कि सब जानते हैं नर चूहों की कोशिकाओं में सामान्यत: एक वाय और एक एक्स गुणसूत्र होता है। इन कोशिकाओं को रेवर्सीन नामक एक रसायन से उपचारित किया गया। यह रसायन कोशिका विभाजन के समय गुणसूत्रों के वितरण में त्रुटियों को बढ़ावा देता है। इसके बाद टीम ने वे कोशिकाएं ढूंढी जिनमें एक्स गुणसूत्र की दो प्रतिलिपियां थी, अर्थात गुणसूत्रों के लिहाज से वे मादा कोशिकाएं थीं। इसके बाद टीम ने प्रेरित बहुसक्षम स्टेम कोशिकाओं को वे जेनेटिक संकेत दिए जो अपरिपक्व अंडा बनाने के लिए जरूरी होते हैं। जब अंडा बन गया तो उसका निषेचन शुक्राणु से करवाया गया और निषेचित अंडों को मादा चूहे के गर्भाशय में डाल दिया गया। हयाशी ने सम्मेलन में बताया कि इन निषेचित अंडों (भ्रूण) की जीवन दर बहुत कम रही - कुल 630 भ्रूण गर्भाशयों में डाले गए और उनमें से मात्र 7 का विकास पिल्लों के रूप में हो पाया। लेकिन ये 7 भलीभांति विकसित हुए और वयस्क होकर प्रजननक्षम रहे। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, लेकिन हयाशी का कहना है कि अभी इसे एक चिकित्सकीय तकनीक बनने में बहुत समय लगेगा क्योंकि मनुष्य और चूहों में बहुत फर्क होते हैं। अभी यह भी देखना बाकी है कि क्या मूल कोशिका में जो एपिजेनेटिक बदलाव किए गए थे वे नर कोशिका से बने अंडों में सुरक्षित रहते हैं या नहीं। और भी कई तकनीकी अड़चनें आएंगी। बहरहाल, यदि ये अड़चनें पार कर ली जाएं, तो यह तकनीक संतानहीनता की कुछ परिस्थितियों में कारगर हो सकती है। जैसे टर्नर सिंड्रोम के मामले में जहां स्त्री के दो में से एक एक्स गुणसूत्र नहीं होता या आधा-अधूरा होता है। जापान के होकाइडो विश्वविद्यालय के जैव-नैतिकताविद तेत्सुया इशी का कहना है कि यह तकनीक पुरुष (समलैंगिक विवाहित) दंपतियों को भी संतान पैदा करने का अवसर दे सकती है। हां, उन्हें सरोगेट गर्भाशय की जरूरत तो पड़ेगी। इसके अलावा, शायद सूदूर भविष्य में अकेला पुरुष भी अपनी जैविक संतान पैदा कर सकेगा। इस संदर्भ में सिर्फ तकनीकी नहीं बल्कि सामाजिक मुद्दों पर विचार भी जरूरी होगा।

सांप की कलाबाजियां

अगस्त 2019 में, कुछ शोधकर्ताओं को उत्तर-पश्चिम मलेशिया के एक विशाल चूना पत्थर पहाड़ के पास सड़क पार करता हुआ एक ड्वार्फ रीड सांप (स्यूडोरेब्डियन लॉन्गिसेप्स) दिखा। जैसे ही वे उसके पास गए तो पहले तो वह अपने बचाव के लिए हवा में ऊपर की ओर घूमा और फिर कुंडली की तरह गोल-गोल लपेटता हुआ नीचे आ गया। शोधकर्ताओं ने सांप को पकड़ लिया और उसे सड़क किनारे समतल जगह पर रख दिया। उसने यही बचाव करतब फिर कई बार दोहराया। ड्वार्फ रीड सांप दिखने में गहरे रंग का, बौना और संटी सरीखा पतला सा होता है।

यह निशाचर प्राणि है जो चट्टानों में छिप कर रहता है। शोधकर्ताओं ने इस सांप पर किए अपने अवलोकन को बायोट्रॉपिका में प्रकाशित किया है। सांपों में इस तरह की हरकत पहली बार देखी और दर्ज की गई है। हालांकि कई अन्य जानवर, जैसे पैंगोलिन और टेपुई मेंढक, भी इस तरह कुलांचे भर सकते हैं, लेकिन सरिसृपों की बात तो दूर, स्तनधारियों में भी शरीर को मरोड़ना (या बल देना) इतनी आम बात नहीं है। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि यह सांप खतरे से जल्दी दूर भागने के लिए ऐसा करता है। उसका यह व्यवहार उसके शत्रुओं को भ्रमित भी कर सकता है और क्योंकि उसकी यह कलाबाजी रेंगकर चलने की तुलना में उसके शरीर को जमीन से कम संपर्क में रखती है तो उसे सूंघ कर हमला करने वाले शिकारी भटक जाएंगे।

अमेरिका ने हमे टायलेट पेपर की तरह फेंका: ख्वाजा आसिफ

पाकिस्तानी रक्षा मंत्री बोले: अपने फायदे के लिए पाक का इस्तेमाल किया, साथ देने की कीमत आज भी चुका रहे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने बुधवार को संसद में कहा कि अमेरिका ने अपने फायदे के लिए पाकिस्तान का इस्तेमाल किया और काम निकलने के बाद उसे टायलेट पेपर की तरह फेंक दिया। पाकिस्तान रक्षा मंत्री ने कहा हमने अफगानिस्तान में दो जंग लड़ीं।

इसमें इस्लाम और मजहब के नाम पर हिस्सा लिया, लेकिन असल में दो सैन्य तानाशाहों (जिया-उल-हक और परवेज मुशर्रफ) ने वैश्विक ताकत का समर्थन पाने के लिए ऐसा किया। उन्होंने 1979 में सोवियत संघ के हस्तक्षेप का जिक्र करते हुए कहा कि यह कदम अफगान सरकार के न्योते पर उठाया गया था, लेकिन अमेरिका ने इसे सीधा हमला बताकर अपनी तरह से नरेटिव तैयार किया। आसिफ ने पाकिस्तान की अमेरिका के साथ 1999 के बाद हुई नई रणनीतिक साझेदारी पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि 11 सितम्बर 2001 के हमलों के बाद अमेरिका के साथ खड़े होने की कीमत

■ आसिफ ने पाकिस्तान की अमेरिका के साथ 1999 के बाद हुई नई रणनीतिक साझेदारी पर सवाल उठाए

पाकिस्तान आज भी चुका रहा है। आसिफ ने कहा कि पाकिस्तान ने इतिहास से सबक नहीं सीखा और अपने छोटे फायदे के लिए कभी अमेरिका, कभी रूस और कभी ब्रिटेन की ओर झुकता रहा। उन्होंने कहा कि अब इन देशों का यहां पहले से ज्यादा प्रभाव है, जो 30-40 साल पहले नहीं था। उन्होंने यह भी माना कि पाकिस्तान का आतंकी इतिहास रहा है। आसिफ ने कहा कि अफगानिस्तान की दो जंगों में शामिल होना पाकिस्तान की बड़ी भूल थी और आज देश में जो आतंकवाद है, वह उन्हीं गलतियों का नतीजा है। आसिफ ने कहा कि हम अपने इतिहास और गलतियों को स्वीकार नहीं करते। आज का आतंकवाद उन्हीं डिक्टेटरों की गलतियों का नतीजा है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती। ख्वाजा आसिफ ने यह भी दावा किया कि इन जंगो को सही ठहराने के लिए पाकिस्तान की एजुकेशन सिस्टम में जानबूझकर बदलाव किए गए। उनके मुताबिक, यह बदलाव आज भी सिस्टम में मौजूद हैं। उन्होंने साल 2000 में अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की इस्लामाबाद की कुछ घंटों की यात्रा का जिक्र किया। क्लिंटन भारत दौरे के बाद थोड़े समय के लिए पाकिस्तान आए थे। आसिफ ने कहा कि इससे साफ दिखता है कि दोनों देशों का रिश्ता सिर्फ मतलब तक सीमित हो गया था। उस समय अमेरिका ने सैन्य शासक परवेज मुशर्रफ पर लोकतंत्र, परमाणु प्रसार और आतंकवाद को लेकर दबाव डाला था। 2000 में पाकिस्तान का प्रधानमंत्री कोई नहीं था, क्योंकि उस समय देश में सैन्य शासन चल रहा था। नवम्बर 1997 से अक्टूबर 1999 तक नवाज शरीफ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री थे। 12 अक्टूबर 1999 को जनरल परवेज मुशर्रफ ने तख्तापलट करके नवाज शरीफ की सरकार को हटा दिया और खुद चीफ एक्जीक्यूटिव बन गए। 1999 के बाद से 2002 तक पाकिस्तान में कोई निर्वाचित प्रधानमंत्री नहीं था। मुशर्रफ ने सत्ता संभाली और 2002 में चुनाव करवाए, जिसके बाद जफरुल्लाह खान जमाली प्रधानमंत्री बने। यह बयान उस समय आया जब संसद ने इस्लामाबाद की शिया मस्जिद में हुए हमले के खिलाफ निंदा का प्रस्ताव पास किया। 6 फरवरी को नमाज के दौरान हुए इस आत्मघाती हमले में 31 लोगों की मौत हो गई और 169 लोग घायल हुए।

अनंतनाग। जम्मू-कश्मीर की अरु घाटी में 'हिम उत्सव' के दौरान कपड़ों का स्टॉल लगाते विक्रेता।

राजकुमारी सिरिवन्नवारी नारीरत्ना ताजमहल का दीदार करने के लिए पहुंचीं आगरा

आगरा। थाईलैंड की राजकुमारी सिरिवन्नवारी नारीरत्ना बुधवार को ताजमहल का दीदार करने के लिए आगरा पहुंचीं। सुबह करीब आठ बजे डेलिगेशन के साथ ताजमहल में पहुंचीं और ताजमहल में करीब डेढ़ घंटे तक रहीं। इस मौके पर उन्होंने फोटो शूट भी कराया। गाइड से ताजमहल के इतिहास के बारे में जानकारी ली। ताजमहल देखने के बाद आगरा किला भी गईं। भारी सुरक्षा के बीच आगरा का दौरा किया। राजकुमारी सिरिवन्नवारी नारीरत्ना के दौरा निजी था। राजकुमारी सिरिवन्नवारी नारीरत्ना एक दिन पहले विशेष विमान से आगरा पहुंच गईं थी और एक होटल में रात्रि विश्राम किया था।

संक्षिप्त समाचार

फिलीपींस में जहाज डूबने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 52 हुई

फिलीपींस। फिलीपींस के बेसिलन प्रांत के पास यात्री-मालवाहक जहाज 'त्रिशा कर्स्टिन 3' के डूबने से कम से कम 52 लोगों की मौत हो गई है। फिलीपीन कोस्ट गार्ड (पीसीजी) ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पीसीजी ने तकनीकी गोताखोर टीमों के चल रहे प्रयासों का हवाला देते हुए बताया कि गोताखोरों ने मंगलवार तड़के बालुक-बालुक द्वीप के पास खोज और बचाव अभियान के दौरान एक और शव बरामद किया, जिससे मरने वालों की कुल संख्या 52 हो गई है। कुल मिलाकर 316 लोगों को बचा लिया गया है, जबकि बचाव दल अभी भी शेष पीड़ितों की तलाश में जुटे हैं।

वशिष्ठ अनूप ने दुबई और शारजाह में फहराया हिन्दी ग़ज़ल का परचम

वाराणसी। लोकप्रिय ग़ज़लकार तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. वशिष्ठ अनूप ने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय काव्य समारोह 'द पोएटिक हार्ट' के 15वें संस्करण में हिन्दी कविता का प्रतिनिधित्व किया। दुबई में आयोजित इस समारोह में ग्यारह विभिन्न भाषाओं के कवियों ने काव्यपाठ किया।

कश्मीर में पिछले 24 घंटे में हल्की से मध्यम बर्फबारी एवं बारिश

श्रीनगर। पिछले 24 घंटों के दौरान कश्मीर में व्यापक रूप से हल्की से मध्यम बारिश और बर्फबारी हुई। मौसम विभाग ने बुधवार को बताया कि गुलमर्ग केंद्र शासित प्रदेश में सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां न्यूनतम तापमान शून्य से नीचे 5.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। गुलमर्ग के स्की रिसॉर्ट में बुधवार सुबह समाप्त हुए 24 घंटों के दौरान कश्मीर संभाग में सबसे अधिक 22.2 मिलीमीटर (मिमी) बारिश भी दर्ज की गई। श्रीनगर में 1.2 मिमी बारिश दर्ज की गई, जबकि दक्षिण कश्मीर के पहाड़ी रिसॉर्ट पहलगाम में 8.8 मिमी बारिश हुई।

अमेरिका ने हटाया इंडियन मैप वाला पोस्ट

नक्शे में पीओके-अक्साई चिन को भारत का हिस्सा दिखाया था, पाक-चीन से तनाव की अटकलें लगी थीं

वाशिंगटन। अमेरिका ने बुधवार को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) और अक्साई चिन (चीन के कब्जे वाला इलाका) को भारत का हिस्सा दिखाने वाला पोस्ट डिलीट कर दिया है। यूनाइटेड स्टेट्स ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव (यूएसटीआर) ने 7 फरवरी को भारत-अमेरिका के बीच हुए ट्रेड एग्रीमेंट के बाद किए गए पोस्ट में इंडियन मैप शेयर किया था। जारी होने के बाद यह नक्शा चर्चा में आ गया था। अब तक अमेरिकी एजेंसियां इंडियन मैप में पीओके और अक्साई चिन को विवादित इलाके के तौर पर अलग रंग या डाटेड लाइन्स से दिखाती थी। हालांकि, इस पोस्ट में ऐसा कोई निशान या लाइन नहीं थी, बल्कि पूरे क्षेत्र को भारत का अभिन्न हिस्सा दिखाया गया था।

इस बदलाव के बाद कई एक्सपर्ट का कहना था कि पाकिस्तान और चीन के साथ अमेरिका के रिश्तों में तनाव के बीच यह कदम भारत के समर्थन का संकेत हो सकता है। वहीं, कुछ लोगों ने इसे गलती से जारी हुआ बताया। इन तमाम अटकलों के बीच अब यूएसटीआर ने यह पोस्ट हटा दिया है। हालांकि, इस पर फिलहाल कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। अमेरिकी ट्रेड आफिस ने यह इंडियन मैप अंतरिम व्यापार समझौते के फ्रेमवर्क के ऐलान के साथ पोस्ट किया था, जिसे अब हटा दिया गया है। भारत और पाकिस्तान के बीच पीओके विवाद जम्मू-कश्मीर क्षेत्र से जुड़ा सबसे पुराना विवाद है। यह 1947 से चला आ रहा है और दोनों देशों के बीच युद्ध, तनाव और कूटनीतिक लड़ाई का कारण बना हुआ है।

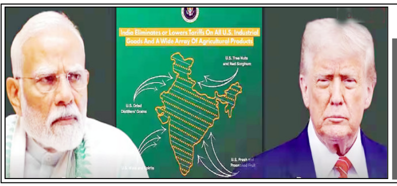

■ अमेरिकी ट्रेड ऑफिस ने यह इंडियन मैप अंतरिम व्यापार समझौते के फ्रेमवर्क के ऐलान के साथ पोस्ट किया था, जिसे अब हटा दिया गया है

'वायु शक्ति अभ्यास' में प्रमुख भूमिका में नजर आएगा स्वदेशी तेजस लड़ाकू विमान

नई दिल्ली। पिछले वर्ष दुबई एयर शो में करतबबाजी के दौरान भीषण दुर्घटना का शिकार हुआ वायु सेना का स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस मार्क-1 ए एक बार फिर आगामी अभ्यास 'वायु शक्ति 2026' में प्रमुख भूमिका में नजर आएगा। तेजस विमान की इस दुर्घटना में पायलट की भी मौत हो गई थी। वायु सेना का यह व्यापक शक्ति प्रदर्शन 27 फरवरी को राजस्थान के जैसलमेर के पास पोखरण फायलरग रेंज में होगा। सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रम हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) द्वारा निर्मित तेजस मार्क-1ए इस अभ्यास में हवाई ड्रिल और युद्ध प्रदर्शन में भाग लेगा।

1 भारत के विभाजन के समय जम्मू-कश्मीर एक रियासत (प्रिंसली स्टेट) थी, जिसके महाराजा हरि सिंह हिंदू थे, लेकिन आबादी में मुस्लिम बहुमत में थे। विभाजन के नियम के अनुसार, रियासतें भारत या पाकिस्तान में शामिल हो सकती थीं या स्वतंत्र रह सकती थीं। 1947-48 में पहला भारत-पाकिस्तान युद्ध-पाकिस्तान से आए मिलिशिया ने कश्मीर पर हमला किया। महाराजा हरि सिंह ने मदद के लिए भारत से संपर्क किया और 26 अक्टूबर 1947 को इंस्ट्रूमेंट आफ एक्सेशन (विलय पत्र) पर हस्ताक्षर किए, जिससे जम्मू-कश्मीर भारत का हिस्सा बन गया। भारत ने सैन्य मदद भेजी। युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने क्षेत्र के पश्चिमी और उत्तरी हिस्से पर कब्जा कर लिया, जिसे अब पीओके कहा जाता है। 1949 में यूएन की मध्यस्थता से युद्धविराम हुआ और सीजफायर लाइन (बाद में लाइन आफ कंट्रोल-एलओसी) बनाई गई, जो दोनों देशों के नियंत्रण को अलग करती है। भारत का दावा-भारत कहता है कि पूरा जम्मू-कश्मीर (पीओके सहित) उसका अभिन्न अंग है, क्योंकि महाराजा ने भारत में विलय किया था। 2019 में अनुच्छेद 370 हटाने के बाद जम्मू-कश्मीर और लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया। भारत पीओके को अवैध कब्जा मानता है और इसे वापस लेने की बात करता है। पाकिस्तान का दावा-पाकिस्तान कहता है कि कश्मीर मुस्लिम बहुल क्षेत्र है, इसलिए वह पाकिस्तान का हिस्सा होना चाहिए।

पाकिस्तान पीओके को आजाद कश्मीर कहता है और वहां अपनी तरह की सरकार चलाता है। पाकिस्तान यूएन के पुराने प्रस्तावों का हवाला देता है, जिसमें कश्मीरियों को जनमत संग्रह का अधिकार देने की बात थी। अमेरिका के मैप शेयर करने से पहले पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने 5 फरवरी को बयान जारी कर कहा था कि कश्मीर पाकिस्तान का हिस्सा बनेगा। शहबाज शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान कश्मीरियों के साथ मजबूती से खड़ा है और जम्मू-कश्मीर विवाद का हल कश्मीर के लोगों की इच्छा के मुताबिक होना चाहिए। शहबाज ने कहा कि जम्मू-कश्मीर विवाद का समाधान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के प्रस्तावों को लागू करने से ही हो सकता है। उन्होंने कहा कि मैं पाकिस्तानी लोगों और पाकिस्तानी नेतृत्व की ओर से कश्मीर के अपने भाइयों के साथ एकजुटता दिखाने आया हूं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने इस क्षेत्र को पाकिस्तान की लाइफ लाइन बताया था। शहबाज शरीफ ने कहा कि कश्मीर का मुद्दा पाकिस्तान की फारेन पालिसी का आधार है।

गुयाना के मंत्री ने हिंदी में दिया भाषण, वीडियो वायरल

जार्जटाउन। दक्षिण अमेरिकी देश गुयाना की संसद में भारतीय मूल के मंत्री विकाश रामकिसून का हिंदी में दिया गया भाषण सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। संसद सत्र के दौरान उन्होंने विपक्ष के उस दावे का जवाब हिंदी में दिया, जिसमें कहा गया था कि उन्हें हिंदी नहीं आती।

विपक्षी सांसद विष्णु पांडेय ने सदन में टिप्पणी की कि विकाश रामकिसून को हिंदी का एक शब्द भी नहीं आता। इस पर रामकिसून ने स्पीकर से अनुमति ली और कहा कि वे इसी मुद्दे पर हिंदी में जवाब देना चाहते हैं। इसके बाद उन्होंने हिंदी में बोलते हुए विपक्षी सांसद को खुली चुनौती दी। रामकिसून ने कहा कि मैं अभी इसी वक्त उन्हें चुनौती देता हूं कि किसी भी स्तर पर, किसी भी जगह पर, विषय वे तय करें और मैं बिना कागज देखे हिंदी में बहस करूंगा। मंत्री विकाश रामकिसून के भाषण का वीडियो बाद में सोशल मीडिया पर शेयर किया गया, जिसे बड़ी संख्या में लोग देख और शेयर कर रहे हैं। यह वीडियो भारत के उच्चायोग की ओर से गुयाना की राजधानी जार्जटाउन से एक्स पर पोस्ट किया गया था। इसके बाद यह तेजी से वायरल हो गया और भारत समेत कई देशों में लोग मंत्री की हिंदी की तारीफ कर रहे हैं।

■ विकाश रामकिसून ने विपक्ष को चुनौती दी, बोले: मैं बिना कागज के हिंदी में बहस को तैयार

सोशल मीडिया यूजर्स ने लिखा कि हिंदी को लेकर उठाया गया सवाल अनावश्यक था और मंत्री ने बिना किसी नोट्स के हिंदी में जवाब देकर अपनी भाषा की पकड़ साबित कर दी। विकाश रामकिसून वर्तमान में गुयाना के कृषि मंत्रालय में मंत्री हैं। वे पहले संसद में कृषि मंत्रालय के संसदीय सचिव भी रह चुके हैं। बनाया गया था। गुयाना में भारतीय मूल की आबादी बड़ी संख्या में रहती है। कुल आबादी का करीब 40 प्रतिशत हिस्सा भारतीय मूल के लोगों का है। यह किसी भी लैटिन अमेरिकी देश में भारतीय प्रवासियों की सबसे बड़ी आबादी है। गुयाना में भारतीयों की मौजूदगी की शुरुआत 5 मई 1838 से मानी जाती है। इस दिन भारत से 396 गिरमिटिया मजदूरों को ब्रिटिश गुयाना लाया गया था।

कनाडा के कोलंबिया प्रांत में गोलीबारी, 10 की मौत, 25 घायल

वैंकूवर। कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के टम्बलर रिज में एक उच्च विद्यालय और पास के एक घर में हुई गोलीबारी में संदिग्ध शूटर समेत 10 लोगों की मौत हुई है, जबकि 25 अन्य लोग घायल हुए हैं। रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस (आरसीएमपी) ने बताया कि अधिकारियों ने स्थानीय समय के अनुसार अपराह्न करीब 1:20 बजे टम्बलर रिज माध्यमिक विद्यालय में गोलीबारी की सूचना पर कार्रवाई की।

■ आरसीएमपी ने कहा: संदिग्ध शूटर भी मरा मृत पाया गया

विद्यालय में छह लोग मृत पाए गए, जबकि एक व्यक्ति की अस्पताल ले जाते समय में मृत्यु हुई। वहीं, दो और पीड़ित एक घर से मिले, जिसके बारे में माना जा रहा है कि वह इस घटना से जुड़ा है। आरसीएमपी ने कहा कि संदिग्ध शूटर भी मरा मृत पाया गया। शायद उसने खुद को गोली मार ली होगी। अधिकारियों ने पुष्टि की है कि कोई और संदिग्ध फरार नहीं है। लगभग 25 लोग घायल हुए, जिनमें से दो गंभीर रूप से घायल थे, जिन्हें एयरलिफ्ट करके अस्पताल ले जाया गया, जबकि दूसरों का इलाज स्थानीय स्तर पर किया गया। आरसीएमपी ने कहा कि सभी विद्यार्थी और कर्मचारियों को सुरक्षित निकाल लिया गया। गौरतलब है कि रॉकी माउंटेन्स की तलहटी में बसे टम्बलर रिज की आबादी लगभग 2400 है। ब्रिटिश कोलंबिया के प्रधानमंत्री डेविड एबी ने इस घटना पर दुख जताया है।

ब्रिक्स, एससीओ आम सहमति से काम करते हैं: लावरोव

मॉस्को। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा है कि ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) ज्यादातर मामलों में सर्वसम्मति के आधार पर फैसले करते हैं, जबकि नाटो के फैसले अमेरिका पर निर्भर करते हैं। लावरोव ने रूस के एक यूट्यूब चैनल एमपाशिया मनुची प्रोजेक्ट के साथ बातचीत में कहा कि ज्यादातर मामलों में अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का पालन किया जाता है। जब बात हमारे पश्चिमी साथियों की हो तब नहीं, बल्कि जब उन प्रतिनिधियों की होती है जिन्हें हम वैश्विक बहुमत कहते हैं, (जैसे) ब्रिक्स, एससीओ, और सोवियत के बाद वाले सीएसटीओ, ईएईयू, और सीआईएस। इन ढांचों में आम सहमति ज्यादातर बनी रहती है।

अमेरिका ने मिडिल-ईस्ट में सैन्य तैनाती बढ़ाई

ईरान से तनाव के बीच मिसाइलों को ट्रकों पर तैनात किया, सैटेलाइट तस्वीरों से हुआ अहम खुलासा

वाशिंगटन। ईरान से बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका ने मिडिल-ईस्ट में अपनी सैन्य तैनाती बढ़ा दी है। सैटेलाइट तस्वीरों में सामने आया है कि कतर के अल-उदीद बेस पर पैट्रियट मिसाइल सिस्टम को स्थायी लान्चर की जगह ट्रकों पर तैनात किया गया है।

रायटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक तस्वीरों में अलग-अलग बेस पर विमानों और सैन्य उपकरणों की संख्या बढ़ती भी दिख रही है। यह बदलाव जनवरी के बाद क्षेत्र में बढ़ते तनाव के बीच हुआ है। फोरेंसिक इमेजरी एनालिस्ट विलियम गुडहाइंड के मुताबिक, जनवरी की तुलना में फरवरी की सैटेलाइट तस्वीरों में क्षेत्र में सैन्य गतिविधि बढ़ी दिखती है। उन्होंने

■ रायटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक तस्वीरों में अलग-अलग बेस पर विमानों और सैन्य उपकरणों की संख्या बढ़ती भी दिख रही है

बताया कि फरवरी की शुरुआत में अल-उदीद बेस पर पैट्रियट मिसाइलें एम983 एमईएमटीटी ट्रकों पर लगी नजर आईं। उनके अनुसार, मिसाइलों को ट्रकों पर रखने से उन्हें जल्दी एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता है या हमले की स्थिति में नई पोजिशन पर तैनात किया जा सकता है। कतर के अल-उदीद बेस पर फरवरी की तस्वीर में पैट्रियट मिसाइल सिस्टम ट्रकों पर तैनात नजर आ रहा है। कतर के अल-उदीद बेस पर 1 फरवरी की तस्वीरों में एक आरसी-135 रीकानिसेंस विमान, तीन सी-130 हरक्यूलिस, 18 केसी-135 स्ट्रैटो टैंकर और सात सी-17 विमान दिखे। 17 जनवरी की तस्वीरों में यहां 14 स्ट्रैटो टैंकर और दो सी-17 थे। यानी कुछ ही हफ्तों में टैंकर और ट्रांसपोर्ट विमानों की संख्या बढ़ी है। इसके अलावा, अधिकतम 10 एमआईएम-104 पैट्रियट एयर डिफेंस सिस्टम एचईएमटीटी ट्रकों पर खड़े दिखाई दिए। फरवरी में सामने आई तस्वीरों में अमेरिका ने अल-उदीद बेस विमानों की संख्या भी बढ़ाई। जार्डन के मुवाफ्फक बेस पर 2 फरवरी की तस्वीरों में 17 एफ-15ई स्ट्राइक विमान, 8 ए-10 थंडरबोल्ट, चार सी-130 और चार हेलीकॉप्टर नजर आए। उसी बेस की दूसरी लोकेशन पर 2 फरवरी को एक सी-17, एक सी-130 और चार ईए-18जी ग्रोलर इलेक्ट्रानिक वारफेयर विमान दिखे। 25 जनवरी की तस्वीरों में वहां कोई विमान नजर नहीं आया था। सऊदी अरब के प्रिंस सुल्तान बेस पर 2 फरवरी को एक सी-5 गैलेक्सी और एक सी-17 विमान दिखाई दिए। 6 दिसम्बर की तस्वीरों में यहां पांच विमान थे, जो सी-130 जैसे दिख रहे थे।

बांग्लादेश में शेख हसीना की सीट पर हिंदू उम्मीदवार

बीएनपी उम्मीदवार को दे रहे कड़ी टक्कर, कल वोटिंग और संविधान सुधारों पर जनमत संग्रह

ढाका। बांग्लादेश में पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की पारंपरिक सीट गोपालगंज-3 पर मुकाबला काफी दिलचस्प हो गया है। यहां बीएनपी के उम्मीदवार एसएम जिलानी को दो हिंदू उम्मीदवार कड़ी टक्कर दे रहे हैं। निर्दलीय उम्मीदवार गोविंद चंद्र प्रमाणिक और गणो फोरम के दुलाल चंद्र विश्वास को मजबूत दावेदार माना जा रहा है। गोपालगंज-3 सीट में टुंगीपाड़ा और कोटालिपाड़ा इलाके आते हैं।

टुंगीपाड़ा में करीब 26 प्रतिशत और कोटालिपाड़ा में 47 प्रतिशत से ज्यादा हिंदू आबादी है। यह इलाका शेख मुजीबुर रहमान की जन्मस्थली है और लंबे समय से अवामी लीग का गढ़ माना जाता रहा है। गोविंद चंद्र प्रमाणिक का कहना है कि उन्हें लोगों से अच्छा समर्थन मिल रहा है। वहीं एक 23 साल के युवक ने कहा कि अगर वोट नहीं

■ टुंगीपाड़ा में करीब 26 प्रतिशत और कोटालिपाड़ा में 47 प्रतिशत से ज्यादा हिंदू आबादी है, यह इलाका शेख मुजीबुर रहमान की जन्मस्थली है

दिया तो हमला या केस हो सकता है। उसने कहा कि वोट तो देंगे, लेकिन शायद इस बार बीएनपी को वोट दें। बांग्लादेश में 12 फरवरी को वोटिंग और संविधान सुधारों पर जनमत संग्रह होना है। गोविंद चंद्र प्रमाणिक जिस गोपालगंज-3 सीट से चुनाव लड़ रहे हैं वहां 50 प्रतिशत से ज्यादा हिंदू मतदाता हैं। बीएनपी ने भी कई अल्पसंख्यक उम्मीदवार मैदान में उतारे हैं। उसके 80 हिंदू उम्मीदवारों में से ढाका-1 सीट से गोयेश्वर चंद्र राय को मजबूत माना जा रहा है। मगुरा में निताई राय चौधरी के सामने कोई बड़ा प्रतिद्वंद्वी नहीं है। बागेरहाट-1 सीट जो पहले अवामी लीग का गढ़ रही है, वहां बीएनपी के कपिल कृष्ण मंडल मजबूत माने जा रहे हैं। बागेरहाट-4 में सोमनाथ डे भी जीत के दावेदार बताए जा रहे हैं। जमात-ए-इस्लामी ने भी पहली बार किसी हिंदू उम्मीदवार को टिकट दिया है। पार्टी ने खुलना-1 सीट से कृष्णा नंदी को मैदान में उतारा है। यहां मुकाबला बीएनपी के आमिर एजाज खान और सीपीबी के किशोर कुमार राय से है। कृष्णा नंदी अपने सरल और मजाकिया अंदाज के कारण सोशल मीडिया पर चर्चा में हैं। गोपालगंज और खुलना के अलावा बागेरहाट, बरीसाल, पिरोजपुर, मगुरा, जेसोर और दिनाजपुर जिलों में भी हिंदू आबादी अच्छी खासी है। लेकिन बरीसाल, पिरोजपुर, जेसोर और दिनाजपुर में इस बार बड़ी पार्टियों ने हिंदू उम्मीदवार नहीं उतारे हैं। बरीसाल-5 सीट से डेमोक्रेटिक यूनाइटेड फ्रंट की डा. मोनिषा चक्रवर्ती चर्चा में हैं। बरीसाल-2 से गणो अधिकार परिषद के रंजीत कुमार बरोई चुनाव लड़ रहे हैं, लेकिन उनकी जीत की संभावना कम मानी जा रही है। पिरोजपुर में कोई अल्पसंख्यक उम्मीदवार मैदान में नहीं है। जेसोर-4 से बीएमजेपी के सुकृति कुमार मंडल चुनाव लड़ रहे हैं।

यौन समस्याएं
यौन समस्याओं के विशेषज्ञ
पुराने से पुराने यौन रोग के मरीज एक बार अवश्य मिलें
डा. सम्राट
नशामुक्ति, शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा तम्बाकू, प्रोक्सीवॉन कैप्सूल अफीम, चरस, डोडे पोस्त इंजेक्शन व अन्य नशा छुड़ाने का स्थायी ईलाज।
नावल्टी सिनेमा चौक
मुजफ्फरनगर (यू.पी.)
M-9412211108

पहली ही खुराक में रहे 78 घंटे तक हैरत अंगेज असर
शादी से घबराहट क्यों?
हकीम भारत के साथ-साथ विदेशों में प्रसिद्ध
रहमत दवाखाना®
गुप्त रोग, मर्दाना ताकत, नामर्दी, लिंग दोष शुक्राणु की कमी, बेऔलाद मिलें
बचपन की गलतियों के निराश रोगी शादी से पहले या शादी के बाद जरूर मिलें
फ्री एक ही पट्टी में नसों का गंदा पानी बाहर
बवासीर, भगंदर फिशर एक टीका में ठीक
सुस्ती, कमजोरी पेट रोग, स्त्री रोग रसौली गांठ
स्त्री व पुरूष रोग विशेषज्ञ
7060666621
ISO 9001:2015 CERTIFIED
Google Justdial :-
www.hakeemrehmatdawakhana.com
रतन सिंह मार्किट, जौली रोड, कूकड़ा ब्लॉक, मुजफ्फरनगर